

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द



प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक - पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान माध्यमिद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सामान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ग्रॉनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ग्रॉनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिद्धी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क १०

'पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

प्राकृतानन्द

सम्पादक,

पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ { भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ } ख्रिस्ताब्द १९६२
प्रथमावृत्ति ७५०

मुद्रक-निरणयसागर प्रेस, बम्बई

मुख पृष्ठ आदि के मुद्रक-श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री भुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य
द्वारा सम्पादित ग्रन्थ

- १ त्रिपुराभारती लघुस्तव — कर्ता-सिद्ध सारस्वत श्री लघुपण्डित
- २ कर्णामृतप्रपा — कर्ता-महाकवि ठक्कुर सोमेश्वर
- ३ वालशिक्षा व्याकरण — कर्ता-ठक्कुर संग्रामसिंह
- ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा — कर्ता-पं० कृष्णमिश्र
- ५ शकुनप्रदीप — कर्ता-पं० लावण्य शर्मा
- ६ उषितरत्नाकर — कर्ता-पं० साधुसुन्दरगणी
- ७ प्राकृतानन्द — कर्ता-रघुनाथ कवि
- ८ हम्मीरमहाकाव्य — कर्ता-नयचन्द्र सूरि
- ९ राठीङ्गारी वंशावली
- १० सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
- ११ भीरां वृहत् पदावली
- १२ रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह — कर्ता-ठक्कुर फेरू



विषयविवरणम्

—०००००—

१-प्रास्ताविकं वक्तव्यम्	१-३
२-प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका	४-१२
३-प्राकृतानन्द-प्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका	१३-१७
प्रथमे परिच्छेदे	
४-अजन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्	१-१८
५-अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	१९-२३
६-अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	२३-२७
७-हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम्	२७-३३
८-हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	३४ वां
९-हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	"
१०-निपाताधिकारः	३५-३७
द्वितीये परिच्छेदे	
११-धातुप्रकरणम्	३८-५२
परिशिष्टम्	
क-प्राकृतशब्दानुक्रमणिका	५३-७६

२१७

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' ग्रन्थ प्राकृत भाषा का एक संक्षिप्त व्याकरण है। इसकी रचना पंडित रघुनाथ ने की है जो कवि-कण्ठीरव के विरुद्ध से अपने आपको उल्लिखित करते हैं। ये ज्योतिर्विद् सरस के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त इनके समय और स्थान आदि के बारे में कुछ उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रंथ की एक पुरानी हस्तलिखित पोथी विद्वद्वर्य आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्य-विजयजी महाराज को शायद वीकानेर में मिली थी। जिस पर से उन्होंने स्वयं इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जैसा कि इसके अन्त में लिखा मिलता है— संवत् १७२६ में लाभपुर अर्थात् लाहोर में लिखी गई थी। सन् १९५२ में जब मेरा वीकानेर जाना हुआ तो उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिखलाया। मैंने इसे राज-स्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया तो उक्त सौजन्य-मूर्ति मुनिवर ने अपनी वह प्रतिलिपि बड़े आनन्द के साथ मुझे दे दी। मैंने उसको छपने के लिये बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में दी। दीर्घकाला-वधि में यह ग्रन्थ प्रेस ने छाप कर पूरा किया। कुछ अन्यान्य कारणों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होता रहा। इस तरह प्रतिलिपि के प्राप्त होने के बाद कोई १० वर्ष अनन्तर अब यह ग्रन्थ पाठकों के कर-कमलों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

'प्राकृतानन्द' प्राकृत भाषा का एक छोटा-सा व्याकरण है। ग्रन्थकार का कहना है कि जो पण्डित के कुल में पैदा हुआ है परन्तु अल्पबुद्धि है और कुछ साहित्य का रसास्वाद करना चाहता है उसके ज्ञान के लिये यह प्रयत्न किया गया है। संस्कृत की तरह प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति बहुत ही विशाल है। विविध विषय के हजारों ही ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि ब्राह्मण-सम्प्रदाय में प्राकृत साहित्य का उतना अधिक संचय नहीं मिलता है, परन्तु जैन और बौद्ध संप्रदाय में प्राकृत भाषा ही का प्राधान्य रहा और इसलिये इन दोनों संप्रदायों में इस भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति की विशालता बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य की प्राकृत भाषा जो कि मूल रूप में 'मागधी' भाषा कहलाती है, अब 'पाली' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। परन्तु जैन साहित्य-संपत्ति मुख्य रूप से प्राकृत के व्यापक नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त करती रही है। भाषा-विदों ने जैन साहित्य की प्राकृत भाषा को 'अर्द्धमागधी'

और 'महाराष्ट्री' प्राकृत के नाम से विभक्त किया है। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी संमिश्रित है और बाकी का सारा साहित्य प्रायः 'महाराष्ट्री' और 'शौरसेनी' संमिश्रित है। जैन सम्प्रदाय का मौलिक वाङ्मय प्रायः सारा इसी प्रकार की प्राकृत भाषा का अपूर्व भंडार है।

द्रविड़ जाति के भारतीय जन-समूहों की द्रविड़कुलीन भाषाओं के अतिरिक्त समग्र आर्य जातीय जन-समूह की जो विद्यमान भाषायें हैं उनकी उत्पत्ति इस मूल पुरातन प्राकृत से है। शाक्य भगवान् बुद्ध और ज्ञात पुत्र तीर्थंकर महावीर के समय से लेकर वर्तमान काल तक की आर्य-भाषाभाषी व भारतीय जनता की मातृ-भाषा प्राकृत के नाम से संबोधित की जाती रही है। वह प्राचीन प्राकृत अब अनेक उपभाषाओं और देश-विशेष की बोलियों में विभक्त हो गई है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है जैन सम्प्रदाय का सारा ही मौलिक साहित्य प्राकृत में है। कई ब्राह्मण विद्वानों ने भी प्राकृत भाषा में कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें काव्य और नाटक ग्रंथ मुख्य हैं। गौडवहो, सेतुबन्ध, लीलावर्द्ध, गाथा सत्तसई आदि उत्कृष्ट प्राकृत काव्यकृतियां हैं जो ब्राह्मण विद्वानों की देन हैं। इसी तरह कर्पूरमंजरी आदि अनेक नाटक कृतियां भी प्राकृत के प्रभाव को प्रकट करती हैं।

जिम तरह संस्कृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी आदि अनेक प्राचीन-अर्वाचीन विद्वानों ने नाना प्रकार के व्याकरण-ग्रन्थों की रचनायें की हैं उसी तरह प्राकृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से वररुचि आदि अनेक विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यों तो प्राकृत भाषा के बीसों छोटे-बड़े व्याकरण-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं पर उनमें वररुचि का 'प्राकृत-प्रकाश' सबसे प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। प्राकृत-भाषा का सर्वप्रथम संपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ हेमचन्द्र सूरि का है जो उनके महान् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्धहेमअब्दानुशासन' का अष्टम अध्याय स्वरूप है। इस महान् व्याकरण ग्रन्थ के सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण ग्रथित है और अष्टम अध्याय में प्राकृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण है। इसमें प्राकृतोत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा का भी विस्तृत व्याकरण है जो उनको मौलिक देन है। हेमचन्द्र सूरि के बाद अनेक छोटे-बड़े प्राकृत व्याकरण बनते रहे और उनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भी हो गये हैं।

वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' हेमचन्द्रसूरि के 'प्राकृत व्याकरण' की अपेक्षा

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' का ही एक प्रति संकलन है। संस्कृत के लघुकौमुदी आदि प्रक्रियात्मक शैली के अनुकरण नाथ कवि ने 'प्राकृत-प्रकाश' को इस प्रकार प्रक्रियात्मक रूप देकर इस प्राकृत का संकलन किया है। इसमें कुल ४१६ सूत्र हैं, इससे मालूम देता है 'प्राकृत-प्रकाश' के कुछ सूत्र छोड़ भी दिये हैं। पर, साथ में कुछ ऐसे दिये हैं जो 'प्राकृत-प्रकाश' की प्रसिद्ध पुस्तक में नहीं मिलते। चौखम्भाग्रन्थ भामहकृत मनोरमाव्याख्या सहित जो प्राकृत प्रकाश छपा है उसमें कुल ४१६ सूत्र हैं जिनमें के ८७ सूत्र इस प्राकृतानन्द में नहीं हैं; और साथ में इसमें २५ सूत्र हैं जो प्राकृत-प्रकाश में नहीं मिलते। तुलना की दृष्टि से दोनों ग्रन्थों सूचि इसके साथ दी जाती है। संशोधक विद्वानों को इसका कुछ उपयोग मुद्रित प्राकृत-प्रकाश के और प्राकृतानन्द के सूत्रों में कुछ पाठ-भेद गोचर होते हैं। लिपिकर्ताओं के कारण ऐसे पाठ-भेदों का होना स्वाभाविक है।

यह ग्रंथ अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। ग्रॉफ्ट ने इसका सूचन 'कॅटेलागस कॅटलॉगरम्' भा. १; पृ. ३६१ पर किया है। इसका नाम सूचीकार को लाहोर के पण्डित राधाकृष्ण के 'पुस्तकानां' में मिला है, जो काश्मीर-निवासी पं० राजाराम शास्त्री ने लिखा था और टिक सोसाइटी बंगाल के प्रोसीडिंग्स, जून १८८० ई. में इसका उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक की प्रेस-कॉपी जिस प्रति से तैयार की गई है वह भी वि. में लाहोर में ही लिखी गई थी।

सौजन्यमूर्ति विद्वद्रत्न मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराज के प्रति हार्दिक कृतज्ञभाव प्रकट करते हैं कि जिन्होंने स्वयं अपने हस्ताक्षर रचना की सुन्दर प्रेस कापी कर के हमको राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला करने के लिये प्रदान की। प्रेस की कठिनाई के कारण इसके प्रकाश कार्य कार्यालय द्वारा ही किया गया अतः कुछ अशुद्धियाँ भी विद्वज्जन उसे स्वयं शुद्ध कर लेंगे, ऐसी विज्ञप्ति के साथ कवि रघुन प्रन्थ के प्रारंभ में इस विषय में जो बहुत ही सुन्दर उक्ति प्रकट की है हम भी यहाँ पुनः उद्धृत कर देना चाहते हैं।

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हानुमिच्छत न जातु साधवः ।
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ॥

जोधपुर

दि० २५-६-६३

—मुनि

प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका



सूत्रं	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
अइ वले सम्भावणे	३००	३५
अंकोटे ललः	२००	२५
अः क्षमा-श्लाघयोः	१७२	२१
अश्यादिपु छः	११८	१४
अन्नि मरुच	३	१
अज्ज आमन्त्रणे	३०६	३६
अत आ मिपि वा	३२६	३६
अत ए से	३१८	३८
अत ओत् सोः	८	२
अतोऽमः	१५	३
अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीपु	१६५	२०
अदयो दो मुः	२८१	३३
अदातो यथादिपु वा	४५	६
अद् दुकुले वा लस्य द्वित्वम्	१८६	२४
अधो म-न-गाम्	४०	५
अन्मुकुटादिपु	५८	७
अन्त्यस्य हलः	२६	४
अपो द्विः	३०६	३६
अभि ह्रस्वः	१५८	१६
अम्हे जम्-घयोः	२६७	३२
अम्हेहिंती अम्हेमुत्तोभ्यसि	२७४	३३
अम्हेहिं गिसि	२७२	३२
अम्हेमु सुपि	२७८	३३
अयुवतस्य रिः	६५	८
अवादि निवारणे	२६६	३५
अवाद् माहेर्वाद्	३५३	४३
अवधो अम्पो दुःखा-ऽऽशेष-विस्मापनेषु	३०१	३५
अवधो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु	२६८	३५
असेर्लोपिः	३७१	४५
अस्तेरासिः	३७३	४६

६७	इदीपत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यञ्जन-मृदङ्गाऽङ्गरेपु	२८	४
६८	इदुतोः शसो गी	१४०A	१७
६९	इद् ईतः पानीयादिपु	५१	७
७०	इद् ऋष्यादिपु	४८	६
७१	इद्भ्यः स्मा-से	२८५	३४
७२	इर-किर-किला अनिशिचत्ताख्याने	२९३	३५
७३	इवे व्वः	३०८	३६
७४	ईग्र भूते	३२८	३९
७५	ईत् सिंह-जिह्वयोश्च	५०	७
७६	ईत् स्त्रियाम्	४१९	५२
७७	ईदुतोर्ह्र स्वः	१७७	२२
७८	ईद् धैर्ये	१९५	२४
७९	उत् श्रोत् तुषडरूपेषु	५५	७
८०	उत्तमे स्सा हा च	३३५	४०
८१	उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा	८६	११
८२	उत्तमोर्लः	३४३	४२
८३	उत् सौन्दर्यादिपु	७६	९
८४	उदुम्बरे दोर्लोपः	२०९	२६
८५	उदुम्बले द्वा वा	१८७	२३
८६	उदुतो मधुके	१८८	२३
८७	उदो विजः	३७९	४६
८८	उद् ऋत्वादिपु	२९	४
८९	उद्धमो धूमा	३६३	४४
९०	उपरि लोपः क-ग-ङ-त-द-प-ष-साम्	३६	५
९१	उः पद्म-तन्वीसमेपु	१७९	२२
९२	उर्जस्-शस्-टा-ङ्स्-सुप्सु वा	१५३	१८
९३	उलूहले ल्वा वा	१८७A	२३
९४	उ-सु-मु-विध्यादिष्वेकस्मिन्	३३१	३९
९५	ऋत आरः सुपि	१५२	१८
९६	ऋतोऽत्	१२०	१४
९७	ऋतोऽरः	३६५	४४
९८	ऋत्वादिपु तो दः	६२	८
९९	एकाचो हीश्र	३३०	३९
१००	ए च सुप्यङि-ङसोः	१४	२
१०१	एच्च क्त्वा तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु	३३४	४०

कमाङ्कः	सूत्राङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१०२ एत इद् वेदना-देवरयोः	६८	६
१०३ एतदः सात्वोत्वं वा	२४७	३०
१०४ एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु	५२	७
१०५ एन्नूपुरे	१६०	२४
१०६ ए भ्यसि	१४३	१७
१०७ ए शय्यादिषु	४१	५
१०८ एषामामो ष्टं	१४८	१७
११० ऐत एत्	६६	६
१११ एरावते च	८२	१०
११२ ओ च द्विधा कृजः	३१२	३७
११३ ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः	७२	६
११४ ओदवा-ऽपयोः	३१०	३६
११५ ओ वदरे देन	१८६	२३
११६ ओ सूचना-पश्चाताप-विकल्पेषु	२६२	३५
११७ ओत्, ओत्	७३	६
११८ क-ग-घ-ज-त-प-य-वां प्रायो लोः	१०	२
११९ कवन्धे वो मः	८७	११
१२० कार्पापरौ	१२४	१४
१२१ कालायसे यस्य वा	२१०	२६
१२२ काशेर्वासः	३५१	४३
१२३ कि-यत्-तद्भ्यो ङस आसः	२२२	२१
१२४ किराो प्रश्ने	२६७	३५
१२५ क्रि.मः कः	२१६	२७
१२६ किराते चः	६१	८
१२७ कुब्जे खः	६३	११
१२८ कृजः का भूत-भविष्यतोश्च	३६५	४८
१२९ कृजः कुराो वा	३६४	४८
१३० कृ-दा-धु-वन्नि-गमि-रुदि-ऽशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं	३६७	४४
१३१ कृणो वा	१३३	१५
१३२ कैटभे वः	६०	११
१३३ कौशले वः	७५	६
१३४ क्ते	४१२	५१
१३५ क्ते तुरः	४११	५१

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३७	क्ते :	५१
३८	वत्व ऊण :	५१
३९	वमस्य	२३
४०	क्रीञ : किरण :	४८
४१	ऋधेभूर्ऋ :	४७
४२	क्विण्ट-दिलिण्ट-रत्न-क्रिया-शाङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य	१७१ = १
४३	क्वचिद् डसि डचोर्लोपः	२३ ३
४४	क्वचिद् युवतस्यापि	५४ ७
४५	क्वथेर्ढेः	३५८ ४३
४६	क्षमा-वक्ष-क्षरोपु वा	६७ ८
४७	क्षियोभिज्जः	३४० ४१
४८	ख-घ-थ-ध-भां-हः	५९ ७
४९	खादि-धाव्योः खा-धौ	३२९ ४१
५०	गद्गदे रः	८४ १०
५१	गमादीनां द्वित्वं वा	४०५ ५०
५२	गत्तेडः	११७ १३
५३	गभिते णाः	८० १०
५४	गृहे घरोऽपती	२१२ २६
५५	ग्रमेविसः	३५२ ४३
५६	ग्रहे दीर्घो वा	४०३ ५१
५७	ग्रहेर्गेण्हः	४०० ४९
५८	घुणो घोल्ः	३४८ ४२
५९	घे वत्वा-नुमुन् तव्येषु	४१६ ५१
६०	ङसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च	२३६ २९
६१	ङसा से	२४५ ३०
६२	ङसि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह-तुम्भा	२६१ ३१
६३	ङसेः आ-दो-दु-ह्यः	२० ३
६४	ङगो वा	१४४ १७
६५	ङमा वा	१६२ १९
६६	ङसौ तत्ती तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि	२५९ ३१
६७	ङे ए म्मी	२२ ३
६८	ङेहि	२२४ २७
६९	ङेस्मि-म्मि-त्थाः	१३६ १६

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
१७१	डौ तुमम्मि	३२
१७२	चतुरश्चत्तारो चत्तारि	२१८
१७३	चतुर्थी-चतुर्दशयो स्तुना	१७८
१७४	चतुर्थ्याः षष्ठी	१८
१७५	चन्द्रिकायां मः	१६७
१७६	चित्र चित्र अवधारणे	२९१
१७७	चित्रचित्राः	३८६
१७८	चिन्हे घः	२०५
१७९	चचो ब्रज-नृत्योः	३४१
१८०	चौर्यसमेषु रिश्रं	२०२
१८१	छायायां हः	१६८
१८२	जल्पेर्लो मः	३४७
१८३	जस् शस्-ङसि-आम्सु दीर्घः	१३
१८४	जस्-शस्-ङसो णो	२३१
१८५	जस्-शसोर्लोपः	१२
१८६	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०
१८७	जस ओश्च यूत्वम्	१३९
१८८	जसो वा	१५७
१८९	जिघ्रतेः पा-पाश्री	३६२
१९०	जृभो जंभाश्च	३४६
१९१	ज्ञो जाण-मुणौ	३९८
१९२	ज्ञो णज्ज-णब्बो वा	३०८
१९३	ज्यायामीत्	१७३
१९४	झयि तद्धर्गान्तः	७
१९५	डाऽऽमोर्णः	१६
१९६	टा-ङस्-ङीनामिदेददातः	१६०
१९७	टा-ङचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५
१९८	टा णा	१४१
१९९	टा णा	२३५
२००	टो डः	८८
२०१	ठा-भा-गादच्च-वर्तमान-भविष्यद्-विध्याद्ये कवचनेषु	३६१
२०२	ठो ङः	१९९
२०३	डस्य च	१९८
२०४	णवरः केवले	२९५
२०५	णवरि आनन्तय्ये	२९६

क्रमाङ्क		सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
२०६	एवि वैपरीत्ये	३०२	३६
२०७	शिच एदादेरत आत्	४०१	४६
२०८	गुदेर्लोणः	३८६	४७
२०९	रो शसि	२६६	३२
२१०	त्वं वाऽमि	२५३	३०
२११	तद ओश्च	२४४	३०
२१२	तदेतदोः सः सावनपुंसके	२४३	३०
२१३	तल् त्वयोर्दा-त्तर्णा	३१३	३७
२१४	तालवृन्ते णठः	२०७	२६
२१५	तिणिण्ण जस्-शस्-भ्याम्	१४६	१८
२१६	तुञ्भे तुम्हे जसि	२५२	३०
२१७	तुञ्भेसु तुम्हेसु सुपि	२६४	३२
२१८	तुञ्भेहि तुम्हेहि तुम्भेहि भिसि	२५८	३१
२१९	तुमाइ च	२५७	३१
२२०	तुम्हाहितो तुम्हासुत्तो भ्यसि	२६०	३१
२२१	तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः	१६६	२४
२२२	तून इरः शीले	४१७	५१
२२३	तूपस्थिम्पः	३६१	४८
२२४	ते तिपोरिदेती	३१७	३८
२२५	त्तो डसेः	२४८	३०
२२६	त्तो-त्ययोस्तो लोपः	२४६	३०
२२७	त्तो दो डसेः	२२१	२७
२२८	त्य-ध्य-द्यां च्च-च्छ-ज्जाः	७१	६
२२९	त्रसेर्वज्जः	३८०	४६
२३०	त्रेस्ती	१५०	१८
२३१	त्व रस्तुवरः	३५६	४३
२३२	थास्-सिपोः सि से	३२४	३६
२३३	वशादिषु हः	१००	१४
२३४	दाढादयो बहुलम्	२१५	२६
२३५	दिक्-प्र वृषोः सः	२८०	३३
२३६	दिवसे सस्य	१०३	१२
२३७	दुहि-लिहि-वहां दुम्भ-लिम्भ-वम्भा	४०७	५०
२३८	दूडो दूमः	३८१	४७
२३९	दृशोः पुलञ्च-शिञ्चक-अववलाः	३६८	४५

२४१	द्वैवे वा	१६२	२४
२४२	दोला-दण्ड-दशनेपु डः	६४	११
२४३	दोहदे णः	६७	११
२४४	द्रो रो वा	१०४	१२
२४५	द्विवचनस्य बहुवचनम्	११	२
२४६	द्वेदुवे दोणि वा	१४६	१७
२४७	द्वेदो	१४७	१७
२४८	धातोर्भविष्यति हिः	३३३	४१
२४९	ध्य-ह्योर्भः	१०७	१२
२५०	न डि-डस्पोरेवातौ	१४२	१७
२५१	नगोर्हलि	४	१
२५२	न त्यः	२२६	२८
२५३	न धृत्तदिषु	११६	१३
२५४	न नपुंसके	२१६	२६
२५५	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो	२८७	३४
२५६	न बिन्दु परे	१३०	१५
२५७	न र-होः	११४	१३
२५८	न विद्युति	२८	२४
२५९	न शिरो-नभसी	२८८	३४
२६०	न-सान्त-प्रावृट्-शरवः पुसि	२४२	२६
२६१	न स्तम्भे	१०६	१३
२६२	नाऽऽतो ऽदातौ	१६१	१६
२६३	नाऽऽमन्त्रो सावोत्व-दीर्घत्व बिन्दवः	२५	४
२६४	नानेकाचः	३२२	३८
२६५	निपाताः	२८६	३५
२६६	निरो माङो माणः	३७७	४६
२६७	नीडादिषु च	१६३	२४
२६८	नो णः सर्वत्र	६	२
२६९	नोत्सुकोत्सवयोः	१२६	१४
२७०	न्त-माणौ शतृ-शानचोः	४१८	५२
२७१	न्ति-हेत्या मो-मु-मा बहुषु	३२३	३८
२७२	न्तु ह मो बहुषु	३३२	३९
२७३	न्मो म्मः	६६	११
२७४	पटेः फलः	३४५	४२
२७५	पत्तने	२०४	२५

२७६	पदस्य	२५०	३०
२७७	पदः पालः	३८२	४७
२७८	परुष-परिघ-परिखासु फः	६३	८
२७९	पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु ल्लः	२०३	२५
२८०	पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः	१५४	१८
२८१	पृष्ठा-ऽक्षि प्रश्नाः स्त्रियां वा	१५६	१९
२८२	पो वः	८५	१०
२८३	पौरादिष्वजः	७४	९
२८४	प्रतिसर-वेतस-पलाकामु डः	३३	५
२८५	प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः	९२	११
२८६	प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः	८३	१०
२८७	प्रादेर्भवः	३३९	४१
२८८	प्रादेर्मीलः	३४९	४२
२८९	फो भः	९१	११
२९०	बाष्पेऽभ्रुणि हः	१२३	१४
२९१	बिसिन्यां भः	१८०	२२
२९२	बुड-खुप्पी मस्जेः	३९०	४८
२९३	बृहस्पती ब-होर्भ-श्री	१४५	१७
२९४	ब्रह्माद्या आत्मवत्	२४१	२९
२९५	भाव-कर्मणोर्वश्च	४०४	५०
२९६	भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः	२९३	४८
२९७	भिन्दिपाले षडः	१२८	१५
२९८	भियो भा-बीहौ	३७६	४६
२९९	भिसो हिं	१७	३
३००	भुजादीनां वत्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः	४१४	५१
३०१	भुवो हो-हुवौ	३१६	३८
३०२	भ्यसो हितो सुत्तो	२१	३
३०३	भं मभं	२६८	३२
३०४	भज्भणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि	२७६	३३
३०५	भत्तो भदत्तो ममादो ममादु ममाहि ऊसौ	२७३	३२
३०६	मध्यान्हं हस्य	१०६	१२
३०७	मद्ये च	३२१	३८
३०८	मन्मथे वः	९५	११
३०९	ममि-म डौ	२७७	३३
३१०	मयूर-मयूख-योर्ध्वा वा	४२	६

क्रमाङ्कः		सूत्राङ्क	पृष्ठाङ्क
३१३	मातुरात्	१८२	२३
३१४	मिना स्सं वा	३३६	४०
३१५	मि-मो-मु-मानामधो ह्रस्व	३७२	४५
३१६	मृजेर्लुभ-पुसौ	३७४	४६
३१७	मृदो लः	३९९	४९
३१८	मे मम मह मञ्ज्ङ्ङसि	२७५	३३
३१९	मो विन्दुः	२	१
३२०	मो-मु मैहि-स्सा-हित्या	३३७	४०
३२१	मन्-ज्ञ-पञ्चाशत् पञ्चदशेषु णः	१२७	१५
३२२	म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे	३०५	३६
३२३	म्लै वा-वाश्री	३५९	४३
३२४	यक ईअ-इज्जौ	४०३	५०
३२५	यमुनाया मस्य	१६६	२०
३२६	यष्टचां लः	१७६	२२
३२७	यावदादिषु वस्य	१३४	१६
३२८	युक्तस्य	३१	४
३२९	युधि-बुध्योर्भः	३८३	४७
३३०	युष्मदस्तं तुमं	२५१	३०
३३१	राज्ञश्च	२३०	२८
३३२	रुदेर्वः	३७५	४६
३३३	रुधेन्ध-म्मौ	३९२	४८
३३४	रुपादीनां दीर्घः	३८४	४७
३३५	रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु	३०४	२६
३३६	रो रा	२८४	३४
३३७	र्त्तिस्य टः	११५	१३
३३८	र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः	११२	१३
३३९	लवण-नवमल्लिकयोर्वेन	१६४	१९
३४०	लादेशो वा	३१९	३८
३४१	लाहल लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः	९८	११
३४२	लतः क्लृप्त इलि	१९१	२४
३४३	लोपोऽरण्ये	१८३	२३
३४४	वक्रादिषु	५	२
३४५	वर्गेषु युजः पूर्वः	३७	५
३४६	वर्तमान-भविष्यदनद्यतनयोज्जः ज्जा वा	३२०	३८

३४६	विप्रकर्षः	३०	४
३५०	विह्वले म्भ-ही वा	१२६	१५
३५१	वृक्षे वेन र्वा	६६	८
३५२	वृधेर्दः	३५५	४३
३५३	वृन्दे वो रः	२१३	२६
३५४	वृश्चिके ञ्छः	४७	६
३५५	वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः	३५४	४३
३५६	वेः क्के च	३६७	४६
३५७	वेष्टेश्च	३४२	४२
३५८	वो च शसि	२५४	३१
३५९	वो भे तुजभाणं तुम्हाणामामि	२६३	३१
३६०	शकादीनां द्वित्वम्	३८७	४७
३६१	शकेस्तर-चग्र-तीराः	३८८	४७
३६२	शद्-वृ-पत्योर्दः	३५७	४३
३६३	शरदो दः	२७६	३३
३६४	शषोः सः	४४	६
३६५	शस एत्	२३४	२८
३६६	शेषः संस्कृतात्	३०७	३७
३६७	शेष -SSदेशयोर्द्वित्वमनादौ	३५	५
३६८	शेषाणामदन्तता	३६६	४५
३६९	शेषोऽदन्तवत्	१३७	१६
३७०	श्च-स्स-प्सां छः	१२५	१४
३७१	श्मश्रु-श्मशानयोरादेः	२०१	२५
३७२	श्रदो धो दहः	३७८	४६
३७३	श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्योऽन्त्येह्रस्वः	३५०	४२
३७४	श्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा	३६६	४४
३७५	षट्-शावक-सप्तपर्णानां छः	६६	१२
३७६	ष्क-स्क-क्षां वखः	५६	७
३७७	ष्टस्य ठः	१७५	२२
३७८	ष्ठा-ध्या-गानां ठाग्र-भाग्र-गाग्राः	३६०	४३
३७९	षस्य फः	२०६	२५
३८०	ष्म-यक्ष-विस्मयेषु स्हः	११६	१४
३८१	संख्यायां च	१०१	१२
३८२	संज्ञायां वा	१०२	१२
३८३	सटा-शकट-कैटभेषु ङः	८६	११
३८४	सन्धावचामजलोपविशेषा बहलम	१	१

क्रमाङ्क	सूत्राङ्क	पष्ठाङ्क
३८६	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५ १२
३८७	सर्वत्र लबराम्	३४ ५
३८८	सर्वदिर्जस एत्वम्	१३५ १६
३८९	सीकरे भः	७६ १०
३९०	सुपः सुः	२४ ४
३९१	सु-भिस्-सुप्सु दीर्घः	१३८ १६
३९२	सू कुत्सायाम्	३०३ ३६
३९३	सूर्ये वा	११३ १३
३९४	सेवादिषु	१३२ १५
३९५	सोबिन्दुनंपुंसके	१८४ २३
३९६	स्तम्भे खः	११० १३
३९७	स्तस्य थः	५७ ७
३९८	स्त्रियां शस उदीती	१५६ १६
३९९	स्त्रियामात्	२८३ ३४
४००	स्त्रियामात् एत्	१६३ १६
४०१	स्थाणावहरे	१५१ १८
४०२	स्तुषायां ण्हः	१६६ २०
४०३	स्नेहे वा	३८ ५
४०४	स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य	१२२ १४
४०५	स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः	७७ १०
४०६	स्फटिके लः	७८ १०
४०७	स्फुटि-चल्योर्वा	३४४ ४२
४०८	स्फोटके	१११ १३
४०९	स्मरतेर्भर-सुमरी	३६४ ४४
४१०	स्स-स्सिमोरद् वा	२२७ २८
४११	स्सो डसः	१६ ३
४१२	स्सोर्णः	३७० ४५
	लः	६० ८
		२८२ ३३
		२६० ३५
	भावनेषु	२६४ ३५
४१७	ह्र-क्राहार-कारा	४०६ ५०
४१८	ह्र नः-स्नः-ष्णा-क्ष्णा-श्ना ण्हः	४६ ६
४१९	ह्र न-ह्र-ह्रो ष न-ल-मां स्थिति-रुद्धवम्	१०८ १२

प्राकृतानन्दप्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका

अ. प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
अंकोठे ल्लः	२००
×	
×	
×	
१ अपौ व्वि	३०६
अम्हेहितो अम्हेसुत्तो म्यसि	२७४
×	
×	
×	
२ अव्वो अम्मो दुःखाऽऽक्षेप- विस्मापनेषु	३०१
असेर्लोपः	२६६
×	
३ अस्थिति	२१७
आडो ज्ञादेशस्य	१७०
आच्च सी	१५५
×	
×	
आमः एसि	२२३
आमि सि	२४६
आत्विवल्लोललालवत्तोत्ता मतुपः	३१४
×	
×	
४ इअं भूते	३२६
×	
इट् मयोमिः	३२५
×	
×	
×	

क. प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्कः
अंकोले ल्लः	२१२५
१ अत इवेतो लुक् च	१११०
२ अदीर्घः सम्बुद्धौ	१११३
३ अनादावयुजोस्तथयोर्दंघी	१२१ ३
×	
अम्हाहितो अम्हासुन्तोम्यसि	६१४६
४ अस्मदः सौ हके हगे अहके	१११६
५ अस्मदोजसावअं च	१२१५
६ अयुवत्स्यानादौ	२११
×	
अस्तेर्लोपः	७१६
७ अस्ते रच्छ	१२१६
×	
आडो जस्य	३१५५
आच सो	५१३५
८ आत्मनि पः	३१४८
९ आनन्तर्ये एवपरि	६१८
आम एसि	६१४
आमासि	६१२
आत्विवल्लोलवन्तेन्तामतुपः	४१२५
१० आविःवत् कर्मभावेषु वा	७१२८
११ आश्चर्यस्याच्चरिअं	१२१३०
×	
१२ इ गधसमेषु	१२१६
इट् मिपोमिः	७१३
१३ इत्सदादिषु	११११
१४ इः श्रीह्रीक्रीतव्लान्तव्लेशम्ला- नस्वप्नस्पर्शाहर्षिर्हर्षेषु	३१६२
१५ इवस्य पिवः	१०१४

क.	प्राकृतानवस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
५	इवे व्व	३०८
	ईत् स्त्रियाम्	४१६
	उत्तरीयाऽनीययोर्धस्य जो वा	८६
	उद्धमोऽधुमा	३६३
६	उद्धखले द्वा वा	१८७
	उल्लूहले ल्वा वा	१८७ A
	×	
	×	
	एच्च क्त्वातुमुन् तव्य-	
	भविष्यत्सु	३३४
	×	
	ओत् ओत्	७३
	×	
	×	
	×	
	क्रुधेर्भूरः	३८५
	×	
	×	
	×	
	×	
	क्वचिद् युक्तस्यापि	५४
	×	
	×	
	धे क्त्वा-तुमुन्तव्येषु	४१६
७	इसा से	
	इसि तुमो-तुह-तुज्भ-तुम्ह-	
	तुम्हा	२६१
८	इसो वा	१६२
	×	
	इ ए-म्मी	२२
	×	
	×	
	×	

क.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
	ईच स्त्रियाम्	७।११
	उत्तरीयाऽनीययोर्ज्जो वा	२।१७
	उद्धम उद्धुमा	८।३२
	×	
	उल्लूरवखेल्वा वा	१।२१
१७	ऋरीति	१।३०
१८	लृतः क्लृप्तः इलिः	१।३३
	एच क्त्वातुमुन् तव्यभविष्यत्सु	७।३३
१९	एवस्य जेव्व	१।२।३
	आत् ओत्	१।४१
२०	कन्यायां न्यस्य	१०।१०
२१	करेष्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः	४।२८
२२	कुञ्जृङ्गमां वतस्य डः	११।१५
	क्रुधेर्भूरः	८।६४
२३	क्त्व इअः	१।२।६
२४	क्त्व स्तूनम्	१०।१३
२५	क्त्वान्तादुश्च	११।११
२६	क्त्वो दाणिः	११।१६
	क्वचित्पृक्तस्यापि	१।०।१
२७	क्षस्य स्कः	११।८
२८	खिर्देविसूरः	८।६३
२९	गर्दभसंभर्दं वितर्दि विच्छर्दिषु	
	र्दस्य	३।२६
	धेत् क्त्वा तुमुन् तव्येषु	८।१६
	×	
	इसि तुमो तुह तुज्भ तुम्ह	
	तुम्हाः	६।३१
	×	
३०	इसो हो वा दीर्घत्वञ्च	११।१२
	इ रेम्मी	५।६
३१	इर्देन हः	६।१६
३२	चर्चैश्चम्पः	८।६५
३३	चवर्गस्य स्पष्टतया	

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
९	चिञ्च चैञ्च अ्रवधारणे ×	२९१
१०	जस ओ वो वाऽव् वं यूत्वं च ×	१४०
	जस ओश्च यूत्वम् जस्-शस्-ङसो णो ×	१३९ २३१
११	ज्ञो णञ्ज-णव्वो वा ×	४०८
	×	
१२	भयि तद्वर्गान्तः टा-ङस् डीनामिदे ददातः टा-ङचोस्तइ तए तुमए तुए ×	७ १६० २५५
	×	
१३	णवरि आनन्तनय्ये ×	२९६
	×	
	णुदेर्लोणः णो शसि ×	३८९ २६९
	×	
	×	
	सं वाऽमि तुज्जेहि तुम्हेहि तुब्भेहि भिसि तृणइरः शीले	२५३ २५८ ४१७
१४	ते-तिपोरिदेती त्रेस्ती ×	३१७ १५०
	×	
१५	दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ वब्भा ×	४०७
	×	
१६	दोह्वे णः ×	९७

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
३४	चिट्टस्य चिष्टः ×	१११४
	×	
३५	जश्शस्ङसां णो जसश्च ओ यूत्वम् जश्शस्ङसां णो	५१३८ ५१९६ ५१३८
३६	जोयः ×	१११४
	×	
३७	जस्य ऊजः	१०१९
३८	ऊज च्च ×	१०१११
	×	
	टाङ्सिङस्ङ्डीनामिदेददातः टाङचोस्तइ तएतुमए तुमे	५१२२ ६१३०
३९	टामोर्णः	५१४
४०	डुकुञः करः ×	१२११५
	×	
४१	णिजंश्शसोर्वा वलीवे स्वरदीर्घश्च णुदो णोल्ल णो शसि	१२१११ ८१७ ६१४४
४२	णो नः	१०१५
४३	ततिपो रिदेती	७११
४४	तिपात्थि तु चामि तुज्जेहि तुम्हेहि भिसि तृणइरः शीले	१२१२० ६१२७ ६१३४ ४१२४
	×	
	त्रस्ति	६१५५
४५	ददातं दे दइस्स लृटि ×	१२११४
	×	
४६	दृशोः पेक्खः ×	१२११८
	×	
४७	धातोर्भावकर्तृकर्मसु परस्मैपदम्	१२१२७

क.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
	नपुंसके स्वमोरिदमिणामिणामो	२८७
	नाऽऽमन्त्रणो सावोत्व-दीर्घत्व	
	बिन्दव	२५
	×	
	×	
	पदः पालः	२८३
	×	
	परुष-परिषपरिखासु फः	
	×	
	×	
	×	
	×	
	×	
१७	बाष्पेऽश्रुणि हः	१२३
१८	बृहस्पती ब-होर्भ-औ	१४५
	×	
	×	
	×	
१९	भियो-भाः बीहो	३७६
	×	
	भ्यसो हितो सुत्तो	२१
	×	
	×	
	मृजेर्लुभ-पुसौ	३७४
	×	
	यावदादिषु वस्य	१३४
	×	
	रुषादीनां दीर्घः	३८४
	×	

क.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
४८	न लृटि	१२।१३
	नपुंसके स्वमोद्विदमिणामिणामो	६।१८
	नामन्त्रणो सावोत्व-	
	दीर्घबिन्दवः	५।२७
४९	नान्त्यद्वित्वे	७।९
५०	नैदावे	७।२९
	पदेः पालः	८।१०
५१	पनसेऽपि	२।३७
	परुषपलितपरिखासु फः	२।३६
५२	पुत्रेऽपि क्वचित्	१२।५
५३	पैशाची	१०।१
५४	प्रकृतिः शौरसेनी	१०।२
५५	प्रकृतिः संस्कृतम्	१२।२
५६	प्रकृत्या दोलादण्डदशनेषु	१२।३१
	×	
	×	
५७	ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां ष्यभ-	
	न्यानां ङ्जो वा	१२।७
५८	भविष्यति मिपास्सं वा स्वर-	
	दीर्घत्वञ्च	१२।२१
५९	भाजने जस्य	३।४
	×	
६०	भोभुवस्तिङि	१२।१२
	भ्यसो हिनतो सुन्तो	५।७
६१	मागधी	११।१
६२	मिपो लोटि च	१२।२९
	मृजेर्लुभसुपौ	८।६७
६३	ययि तद्वर्गन्तः	४।१७
	यावादादिषु वस्य	४।५
६४	राज्ञो राचि टाङ्सिङ्गम्-	
	ङिषु वा	१०।१२
	रुषादीनां दीर्घता	८।४६
६५	र्यस्य रिअः	१०।८

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	लाहल-लाङ्गल-लाङ्गलेषु वा णः ६८	
	×	
२०	लृतः क्लृप्तः इलि	१६१
	×	
	×	
	×	
	×	
	वे कके च	३६७
	×	
	शकेस्तर-चअ-तीराः	३८८
	×	
	×	
	×	
	×	
	षट्-शावकसप्तपर्णानां छः	६६
	×	
	×	
	ष्टा-ध्या-गानां-ठाअ-भाअ-भाआः ३६६	
	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५
	×	
	×	
	×	
२१	सीकरे भः	७६
	×	
	×	
	×	
	×	
	×	
	हुंदानपृच्छानिर्धारणेषु	२६०
	×	
	×	
	हृन्-ह्ल-ह्लोपुनलमां स्थितिरुर्ध्वम् १०८	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	लाहले णः	२१४०
६७	लिहेलिज्भ	८१४६
	×	
६८	वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोर-	
	युजोरनाद्योराद्यौ	१०१३
६९	वाष्पेश्चुरिण हः	३१३८
७०	विअवेअ अवधारणो	६१३
७१	A विसिन्यां भः	२१३८
७१	B बृहस्पती बृहेर्भाअौ	४१३०
	वेक्वे च	८१३१
७२	व्यापृते डः	१२१४
	शकेस्तरव अतीराः	८१७०
७३	शीकरे भः	२१५
७४	शृगालशब्दस्य शिआला	
	शिआले शिआलकाः	१११७
७५	शेषं महाराष्ट्रीवत्	१२१३२
७६	शौरसेनी	१२११
	षट्शावकसप्तपर्णानां हूः	२१४१
७७	षसोः सः	१११३
७८	षट्स्य सटः	१०१६
	ष्टाध्यागानांठाअभाअभाआः	८१२५
	सर्वज्ञतुल्येषु जः	३१५
७९	सर्वशैङ्गितज्ञयोर्णां	१२१८
८०	सर्वनाम्नां डे सित्वा	१२१२६
८१	सिच	३१३७
	×	
८२	स्तम्बे	३१३३
८३	स्थश्चिट्टः	१२११६
८४	स्मरतेः सुमर	१२११७
८५	स्त्रियामित्थी	१२१२२
८६	स्नस्य सनः	१०१७
	हुंदानपृच्छानिर्धारणेषु	६१२
८७	हृदयस्य हितअकम्	१०११४
८८	हृदयस्य हडक्कः	११११६
	हृह्लोपु नलमां स्थितिरुर्ध्वम् ३१८	

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥ १

इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ २

गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्तारो महत्तमाः ॥ ३

तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्त्ता लोकविश्रुतः ॥ ४

यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।
तथैव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ ५

पाणिन्याद्यैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ ६



प्राकृतानन्द



प्रेङ्खन्नखच्छविमिथश्छुरितेन यस्मिन्,
रक्ताञ्चलग्रथनकौतुकमन्वकारि ।
खेदोद्गमद्विगुणदानजलः स भूयान्,
भूयात् करग्रहविधिः शिवयोः शिवाय ॥ १ ॥

रचयति नृसिंहरत्नै रघुनाथः सरसदैववित्तनयः ।
रसिकानन्दनिमित्तं सानन्दं प्राकृतानन्दम् ॥ २ ॥

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ! ।
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ? ॥ ३ ॥

ये पण्डितकुलोत्पन्ना रसवन्तोऽल्पबुद्धयः ।
तदर्थमयमारम्भः किमज्ञातं मनीषिणाम् ? ॥ ४ ॥

*

सन्धावचामजूलोपविशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचां सन्धावजूविशेषा लोपश्च वा स्युः । नदीस्रोतः णइस्रोत्तो ।
राम ओ इति स्थिते रामो, अकारलोपः ।

मो बिन्दुः ॥ २ ॥

मस्य अनुस्वारः स्यात् । कण्ह अम् इति स्थिते कण्हं ।

अचि मश्च ॥ ३ ॥

अचि परे मस्य म एव स्यात् । अनुस्वारापवादः । धणम् ओहरइ
इति स्थिते धणमोहरइ । 'अनचि मो बिन्दुः' इत्येव सूत्रयितु-
मुचितम् ।

नञो हलि ॥ ४ ॥

नकार-अकारयोः अनुस्वारः स्याद् हलि । अन्सः अंसो, अत्र

वक्रादिषु ॥ ५ ॥

एषु अनुस्वारागमः स्यात् । वक्रं वंक्रं । वक्र व्यस्र ह्रस्व अश्रु श्मश्रु
गृष्टि मूर्द्धन् मनस्विनी दर्शन स्पर्श वर्ण प्रतिश्रुत् अश्व अभिसुक्त
वक्रादिः ।

मांसादिषु वा ॥ ६ ॥

एषु वा बिन्दुः स्यात् । संयोगेऽणो ह्रस्व इति वाच्यम् । मांसं
मंसं मासं । आकृतिगणोऽयम् ।

झयि तद्वर्गान्तः ॥ ७ ॥

तद्वर्गान्तोऽनुस्वारो वा स्याद् झयि । शङ्का संका सङ्का ।

॥ इति सन्धिः ॥

*

अत ओत् सोः ॥ ८ ॥

अकारान्तात् परस्य सोः ओत् स्यात् ॥

नो णः सर्वत्र ॥ ९ ॥

यत्र क्वचित् स्थितस्य नस्य णः स्यात् ।

क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लोपः ॥ १० ॥

कादीनां नवानामयुक्तानामनादिवर्तिनां प्रायो लोपः स्यात्
नारायणः णाराअणो । अयुक्तानामिति किम् ? शक्रः सक्रो इत्यादि
अनादिवर्तिनामिति किम् ? कृष्णः कण्हो इत्यादि ।

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ११ ॥

सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं स्यात् ।

जस्र-शसोर्लोपः ॥ १२ ॥

अकारान्तात् परयोः जस्र-शसोः लोपः स्यात् ।

जस्र-शस्र-डसि-आमसु दीर्घः ॥ १३ ॥

एषु अतो दीर्घः स्यात् ।

ए च सुप्यङि-डसोः ॥ १४ ॥

अकारस्य एत्वं स्यात् सुपि, न तु ङि-डसोः । चाद् दीर्घोऽपि

अकारान्तात् परस्य अमः अकारस्य लोपः स्यात् । नारायण
नाराअणं । ननु 'सन्धावचाम्०' (१) इति अलोपेनैव भाव्यम्
इति चेत्, न, तत्र बहुलग्रहणात् कचिदप्रवृत्तेरपि सम्भावनीयत्वात्
नारायणान् णाराअणा णाराअणे ।

टा-ऽऽमोर्णः ॥ १६ ॥

अकारान्तात् परयोः टा-ऽऽमोः णः स्यात् । नारायणेन णारा
अणेण । नारायणानां णाराअणाणं ।

भिसो हिं ॥ १७ ॥

अकारान्तात् परस्य भिसो हिं इत्यादेशः स्यात् । नारायणै
णाराअणेहिं ।

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ १८ ॥

स्यात् । तथा हि ।

स्सो ङसः ॥ १९ ॥

अकारान्तात् परस्य ङसः स्स इत्यादेशः स्यात् । नारायणाय
णाराअणस्स । नारायणेभ्यः णाराअणाणं ।

ङसेः आ-दो-दु-हयः ॥ २० ॥

अदन्तात् परस्य ङसेः आ दो दु हि इति प्रत्येकं चत्वार आदेशा
स्युः । नारायणात् णाराअणा णाराअणादो णाराअणादु णारायणाहि
'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः ।

भ्यसो हितो सुत्तो ॥ २१ ॥

अदन्ताद् भ्यसो हितो सुत्तो इत्येतौ आदेशौ स्याताम् । नारा
यणेभ्यः णाराअणाहितो णाराअणासुत्तो । नारायणस्य णाराअणस्स

ङेः ए-म्मी ॥ २२ ॥

अदन्ताद् ङि इति सप्तम्येकवचनस्य ए म्मि इत्येतौ स्याताम्
कचिद् ङसि-ङ्योर्लोपः ॥ २३ ॥

ङसि-ङ्योः परयोः कचिदतो लोपः स्यात् । नारायणे णाराअणे
णाराअणम्मि ।

नारायणेषु णाराअणेषु । 'ए च०' (१४) इति एत्वम् ।

नाऽऽमत्रणे सावोत्व-दीर्घत्व-बिन्दवः ॥ २५ ॥

सम्बोधने ओत्व-दीर्घत्वा-ऽनुस्वारा न स्युः ।

अन्त्यस्य हलः ॥ २६ ॥

[अन्त्यस्य हलः] लोपः स्यात् । हे नारायण हे णाराअण ।

रागः राओ । 'क-ग०' (१०) इति गलोपः । रागाः राआ राए

'जस्-शसोः०' (१२) इति लोपः, 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः

रागम् राअं । रागान् राआ राए । रागेण राएण । रागैः राएहिं । रागात्

राअस्स । रागेभ्यः राआणं । रागात् राआ राआदो राआदु राआहि

रागेभ्यः राआहिंतो राआसुत्तो । रागस्य राअस्स । रागाणाम् राआणं

रागे राए राअम्मि । रागेषु राएसु ।

आदेरतः ॥ २७ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इदीषत्-पक्-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्गा-ऽङ्गारेषु ॥ २८ ॥

एषु सप्तसु मध्ये आदेः अतः इः स्यात् ।

उद् ऋत्वादिषु ॥ २९ ॥

एषु ऋतः उः स्यात् । मृदङ्गः मुइंगो । ऋतु मृणाल पृथिवी वृन्दा-

वन प्रावृद् प्रवृत्ति विवृत संवृत निवृत वृत्तान्त परभृत मातृक जामा-

तृक मृदङ्ग इत्यादि ऋत्वादिः ।

विप्रकर्षः ॥ ३० ॥

-इत्यधिकृत्य ।

युक्तस्य ॥ ३१ ॥

-इत्यधिकृत्य ।

इः श्री-ही-क्रीत-क्लान्त-क्लेश-म्लान-स्वप्न-स्पर्श-हर्षा-ऽर्ह-गर्हेषु ॥ ३२ ॥

एषु एकादशसु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य इत्वम्, तत्स्व-

रता च । 'नो याः०' (९) इति णः । स्वप्नः सिविणो इत्यादि ।

'उपरि०' (३६) इति वक्ष्यमाणेन पलोपः ।

एषु तस्य डः स्यात् । प्रतिसरः पडिसरो । 'सर्वत्र०' (३४) इति वक्ष्यमाणेन रलोपः । ननु पडिवआ पडिसिद्धि इत्यादौ तस्य डः केन ? इति चेत्, उच्यते, प्रतिसर इत्यत्र प्रतिना सरति प्रतिपूर्वक इति यावद् इति व्याख्यानात्, 'प्रतिसर'शब्दस्यापि प्रतिनैव सरत्वादिति । वेतसः वेडिसो ।

सर्वत्र लबराम् ॥ ३४ ॥

संयुक्तस्य उपर्यधःस्थितानां लकार-वकार-रेफाणां लोपः स्यात्
शेषा-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ३५ ॥

युक्तस्य लोपे जाते यः शेषः आदेशश्च तयोः अनादौ वर्त्तमानयोर्द्वित्वं स्यात् । पक्वः पिक्वो ।

उपरि लोपः क-ग-ड-त-द-प-ष-साम् ॥ ३६ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्य उपरिस्थितानां लोपः स्यात् । भक्तभक्तो ।

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ३७ ॥

'शेषा०' (३५) इति यस्य द्वित्वं क्रियते स द्वितीयः चतुर्थो वा चेत् तत्पूर्वः प्रथमः तृतीयो वा स्यात् । मुग्धः मुद्धो । खङ्गः खग्गो । उत्पीतः उप्पीओ । सद्गमः सग्गमो । आप्तः अत्तो । वसिष्ठः वसिष्ठो ।

स्नेहे वा ॥ ३८ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य अत्वं च । स्नेहः सणेहो णेहो ।

आदेर्यो जः ॥ ३९ ॥

शब्दस्य आदिभूतयकारस्य ज-आदेशः स्यात् ।

अधो म-न-याम् ॥ ४० ॥

युक्तस्य अधःस्थितानामेषां लोपः स्यात् । योग्यः जोग्गो ।

ए शय्यादिषु ॥ ४१ ॥

एषु आदेः अकारस्य एत्वं स्यात् । उत्करः उक्केरो । शय्यासौन्दर्य उत्कर त्रयोदश आश्चर्य पर्यन्त बल्ली शय्यादिः ।

अनयोः यूशब्देन सह आदेः अत आत्व वा स्यात् मयूरः मारो ।
मयूखः मोहो । पक्षे 'क-ग०' (१०) इति यलोपः, मजरो मजहो ।

आ समृद्ध्यादिषु वा ॥ ४३ ॥

अविभक्तिको निर्देशः । 'सविसर्गः पाठः' इति केचित् । एषु
आदेः अकारस्य आकारो वा स्यात् । समृद्धि प्रकट अभिजाति
मनखिनी प्रतिपत् सदृक्ष प्रतिस्पर्द्धि प्रसुप्त प्रसिद्धि अश्व । आकृति-
गणोऽयम् ।

शषोः सः ॥ ४४ ॥

सर्वत्र शस्य षस्य च सः स्यात् । अश्वः आसो अस्सो ।

अदातो यथादिषु वा ॥ ४५ ॥

एषु आतः स्थाने वा अत् स्यात् । प्रहारः पहारो पहारो 'सर्वत्र०'
(३४) इति रलोपः । हालिकः हलिओ हालिओ । यथा तथा प्राकृत
तालवृन्त उत्खात चामर प्रहार चाडु दावाग्नि खादित संस्थापित
मृगाङ्क हालिक यथादिः ।

उद् इक्षु-वृश्चिकयोः ॥ ४६ ॥

अनयोः इत उत् स्यात् ।

वृश्चिके ङ्ङः ॥ ४७ ॥

युक्तस्य स्यात् । वक्ष्यमाण'श्च-त्स-प्सां ङ्ङः' (१२४) इति
छत्वापवादः ।

इद् ऋष्यादिषु ॥ ४८ ॥

एषु ऋकारस्य इत् स्यात् । वृश्चिकः विञ्छुओ । ऋषि वृषी गृष्टि
सृष्टि हृष्टि शृङ्गार मृगाङ्क भृङ्ग भृङ्गार हृदय वितृष्ण बृंहित कृशर
कृत्या वृश्चिक कृपा शृगाल कृति कृत्ति कृषि ऋष्यादिः । शृङ्गार
सिंगारो । मृगाङ्कः मिअंको, यथादित्वाद् आत अः । भृङ्गः भिंगो
भृङ्गारः भिंगारो ।

ह्र-स्त्र-ष्ण-क्षण-श्नां ण्हः ॥ ४९ ॥

एषां णहादेशः स्यात् । वितृष्णः वितिणहो । शृगालः सिआलो

ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ॥ ५० ॥

अनयोः इत् ईत् स्यात् । सिंहः सीहो ।

इद् ईतः पानीयादिषु ॥ ५१ ॥

एषु ईत् इत् स्यात् । करीषः करिसो । पानीय अलीक व्रीडित
व्यलीक गृहीत तदानीम् करीष द्वितीय तृतीय गभीर पानीयादिः ।

एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु ॥ ५२ ॥

एषु ईत् एत् स्यात् ।

आपीडे मः ॥ ५३ ॥

पस्य मः स्यात् । लोपं बाधित्वा प्राप्तस्य 'पो वः' (८५) इति
वक्ष्यमाण-व-त्वस्यापवादः । आपीडः आमेलो ।

क्वचिद् युक्तस्यापि ॥ ५४ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि ऋकारस्य क्वचिद् रिः स्यात् । 'क-ग
(१०) इति द-लोपः । कीदृशः केरिसो । ईदृशः एरिसो ।

उत् ओत् तुण्डरूपेषु ॥ ५५ ॥

संयुक्तवर्णपरोकारेषु उत् ओत् स्यात् ।

ष्क-स्क-क्षां क्खः ॥ ५६ ॥

एषां क्खादेशः स्यात् । पुष्करः पोक्खरो ।

स्तस्य थः ॥ ५७ ॥

स्यात् । 'उपरि लोपः०' (३६) इत्यस्यापवादः । पुस्तकः पोत्थओ
लुब्धकः लोद्धओ । 'उत् ओत्०' (५५) इत्यस्य प्रायिकत्वात् लुद्धओ
अत्र 'सर्वत्र०' (३४) इति व-वयोरैक्याद् लोपे शेषस्य धस्य 'शेषा
(३५) इति द्वित्वे दपूर्वो धकारः ।

अन्मुकुटादिषु ॥ ५८ ॥

एषु आदेः उत् अत् स्यात् । मुकुट मुकुल गुरु गुर्वी युधिष्ठि
सौकुमार्य मुकुटादिः । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, 'उपरि
(३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् ।

एषामयुक्तस्य रेफस्य लादेशः स्यात् । युधिष्ठिरः जहिष्ठिलो ।
हरिद्रा चरण मुखर युधिष्ठिर करुण अङ्गुरी अङ्गार किरात परिखा
परिघ हरिद्रादिः । चरणः चलणो । मुखर मुहलो । अङ्गारः इंगालो,
'इद् ईषत्' (२८) इति इत्वम् ।

किराते चः ॥ ६१ ॥

अत्र आदेः चः स्यात् ।

ऋत्वादिषु तो दः ॥ ६२ ॥

एषु तस्य दः स्यात् । किरातः चिलादो । ऋतु रजत आगत निवृत्ति
आकृति संवृति सुकृति हत संयत विवृत सञ्जात सम्प्रति प्रतिपत्ति
ऋत्वादिः ।

परुष-परिघ-परिखासु फः ॥ ६३ ॥

एषु आदेः फः स्यात् । परुषः फरुसो । परिघः फलिहो । आगतः
आअदो । हतः हदो । संयतः संजदो, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।
सम उपसर्गत्वाद् यत इति यकारस्य आदिस्थत्वम् ।

इत् पुरुषे रोः ॥ ६४ ॥

अत्र रोः उत इत् स्यात् । पुरुषः पुरिसो । रोरिति किम् ? पका-
राद् उकारस्य मा भूत् ।

अयुक्तस्य रिः ॥ ६५ ॥

वर्णान्तरेण अयुक्तस्य ऋकारस्य रिः इत्यादेशः स्यात् । ऋद्ध-
रिद्धो ।

वृक्षे वेन रुवी ॥ ६६ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुः वा स्यात् । व्यवस्थित
विभाषेयम्, तेन च्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु स्यादेव ।

क्षमा-वृक्ष-क्षणेषु वा ॥ ६७ ॥

एषु क्षस्य वा च्छः । पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः
'ऋतोऽत्' (१२०) इति वक्ष्यमाणेन अकारः । वृक्षः वच्छो रुक्खो ।

एत इद् वेदना-देवरयोः ॥ ६८ ॥

अनयोः आदेः एत इर्वा स्यात् । देवरः दिअरो देअरो, 'क-ग'
१०) इति वलोपः ।

एत एत् ॥ ६९ ॥

आदेः ऐतः एः स्यात् । शैलः सेलो । कैलासः केलासो ।

दैत्यादिष्वङ् ॥ ७० ॥

दैत्यादिषु ऐकारस्य अङ् इत्यादेशः स्यात् ॥

त्य-थ्य-द्यां च्च-च्छ-ज्जाः ॥ ७१ ॥

त्रयाणां क्रमेण त्रयः स्युः । दैत्यः दइच्चो । चैत्रः चइत्तो, 'सर्वत्र०'
(३४) इति रलोपः । भैरवः भइरवो । वैदेशः वइदेसो । वैदेहः वइ-
देहो । कैतवः कइअवो । वैशाखः वइसाहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।
वैशिकः वइसिओ । वैशम्पायनः वइसंपाअणो । दैत्य चैत्र भैरव खैर
वैर वैदेश वैदेह कैतव वैशाख वैशिक वैशम्पायन दैत्यादिः ।

ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ७२ ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओतः अद् वा स्यात्, कस्य च वः स्यात् । प्रकोष्ठ-
पवट्टो, 'सर्वत्र०' (३२) इति रलोपः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः
'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । पक्षे पओट्टो, 'क-ग०' (१०) इति
कलोपः ।

औत ओत् ॥ ७३ ॥

आदेः औकारस्य ओत् स्यात् । पौत्रः पोत्तो ।

पौरादिष्वउः ॥ ७४ ॥

एषु औकारस्य अउः इत्यादेशः स्यात् । ओत्वापवादः । पौरः पउरो
कौरवः कउरवो ।

कौशले वा ॥ ७५ ॥

कउसलो कोसलो । आकृतिगणोऽयम् ।

उत् सौन्दर्यादिषु ॥ ७६ ॥

एषु औकारस्य उत् स्यात् । मौञ्जायनः मुंजाअणो । शौण्डः सुंडो
कौक्षेयकः कुक्खेअओ, 'वर्गेषु०' (३१) इति कः, 'क-ग०' (१०) इति
य-कोर्लोपः । सौन्दर्य मौञ्जायन शौण्ड कौक्षेयक दौवारिकादयः सौन्द

स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः ॥ ७७ ॥

एषु ककारस्य हादेशः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इति कलोपापवादः

स्फटिके लः ॥ ७८ ॥

अत्र टस्य लः स्यात् । 'टो डः' (८८) इति वक्ष्यमाणस्यापवादः ।

'उपरि०' (३६) इति सलोपः, स्फटिकः फलिहो । चिकुरः चिहुरो
निकषः णिहसो, 'नो णः०' (९) इति णत्वम्, 'शषोः०' (४४)
इति सः ।

सीकरे भः ॥ ७९ ॥

अत्र कस्य भः स्यात् । 'क-ग०' (१०) इत्यस्यापवादः । सीकर
सीभरो ।

गर्भिते णः ॥ ८० ॥

तस्य णः स्यात् । गर्भितः गर्भिणो ।

वसति-भरतयोर्हः ॥ ८१ ॥

अनयोः तस्य हः स्यात् । लोपापवादः । भरतः भरहो ।

ऐरावते च ॥ ८२ ॥

अत्र तस्य णः स्यात् । लोपापवादः । ऐरावतः ऐरावणो, 'ऐत एत्
(६९) इति एत् ।

प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः ॥ ८३ ॥

एषु अनादिभूतस्य दस्य लः स्यात् । कदम्बः कलंबो । दोहदः
णोहलो । अनेति (अनादीति) किम् ? आद्यस्य मा भूत् । 'दोहदे णः
(९७) इति वक्ष्यमाणेन णः ।

गङ्गदे रः ॥ ८४ ॥

अत्र अयुक्तस्य दस्य रः स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति दलोपः
गङ्गदः गङ्गरो ।

पो वः ॥ ८५ ॥

पस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य वः स्यात् । शपथः सवहो, 'ख-घ०'
(५९) इति हः । ननु पस्य लोपोक्तेः कथं पस्य वविधिः ? इति चेत्
उच्यते, लोपविधौ 'प्रायः' (सू० १०) इत्युक्तेः यत्र लोपाभावस्तत्रैव
अस्य पवन्तिः ।

उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ॥ ८६ ॥

उत्तरीयशब्दस्य अनीयप्रत्ययस्य च यो यकारः तस्य जो वा रमणीयः रमणिज्जो ।

कबन्धे बो मः ॥ ८७ ॥

अत्र बस्य मः स्यात् । लोपापवादः । कबन्धः कर्मधो ।

टो ङः ॥ ८८ ॥

टस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ङः स्यात् । विटपः विडवो ।

सटा-शकट-कैटभेषु ढः ॥ ८९ ॥

एषु टस्य ढः स्यात् । डापवादः । शकटं सअढो ।

कैटभे वः ॥ ९० ॥

भस्य वः स्यात् । कैटभः केढवो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

फो भः ॥ ९१ ॥

स्यात् । सफलः सभलो ।

प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः ॥ ९२ ॥

एषु थ-धयोः ढादेशः स्यात् । हापवादः । प्रथमः पढमो । शिथिलो । निषधः णिसढो ।

कुब्जेः खः ॥ ९३ ॥

अत्र आदेः वर्णस्य खादेशः स्यात् । कुब्जः खुज्जो ।

दोला-दण्ड-दशनेषु ङः ॥ ९४ ॥

एषां आदेः ङः स्यात् । दण्डः डंडो । दशनः डसणो ।

मन्मथे वः ॥ ९५ ॥

अत्र आदेः वः स्यात् ।

न्मो म्मः ॥ ९६ ॥

स्यात् । मन्मथः वम्महो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

दोहदे णः ॥ ९७ ॥

अत्र आदेः णः स्यात् । दोहदः णोहलो ।

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः ॥ ९८ ॥

एषु आदिः छः स्यात् । षण्मुखः छम्मुहा । शीवकः छवओ । सप्त-
पर्णः छत्तवण्णो, 'पो वः' (८५) इति वत्वम्, 'सर्वत्र०' (३४) इति
रलोपः ।

दशादिषु हः ॥ १०० ॥

एषु शस्य हः स्यात् ।

सङ्ख्यायां च ॥ १०१ ॥

सङ्ख्यावाचिशब्दसम्बन्धिदकारस्य रः स्यात् । एकादशः एआरहो
द्वादशः वारहो । त्रयोदशः तेरहो, शय्यादित्वाद् एत् ।

संज्ञायां वा ॥ १०२ ॥

संज्ञायां दशादेः शस्य हो वा स्यात् । दशमुखः दहमुहो दसमुहो ।
दशरथः दहरहो दसरहो ।

दिवसे सस्य ॥ १०३ ॥

हः स्याद् वा । दिवसः दिअहो दिअसो ।

द्रे रो वा ॥ १०४ ॥

द्रशब्दे रेफस्य लोपो वा स्यात् । इंद्रः इंदो इंद्रो । द्रुतः दुओ द्रुओ ।

सर्वज्ञतुल्येषु अस्य ॥ १०५ ॥

सर्वज्ञ इत्येवमाकृतिषु अस्य लोपः स्यात् । सर्वज्ञः सबज्जो । अत्र ज्ञे-
जकारञकारयोर्मध्ये ञकारलोपे 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम् । जानाते-
र्यानि सोपपदानि रूपाणि तत्रायं लोपः ।

मध्याह्ने हस्य ॥ १०६ ॥

लोपः स्यात् । वक्ष्यमाणोर्द्ध्वस्थितेः (१०८) अपवादः ॥

ध्य-ह्योर्ज्ञः ॥ १०७ ॥

स्यात् । मध्याह्नः मज्झण्णो ।

ह-ह-क्षेषु न-ल-मां स्थितिरूध्दूर्वम् ॥ १०८ ॥

एषु त्रिषु अधःस्थितानां नकार-लकार-मकाराणां त्रिभ्य उपरि-
स्थितिः स्यात् । प्रह्लादः पल्हादो । अत्र हग्रहणं चिन्त्यम्, 'ह-ल-ष्ण०'
(४९) इति ण्हादेशे नस्य खयमेव उपरिष्ठाद् (१०६) भूतत्वात् कौस्तुभः
कोत्थुहो, 'औत ओत्' (७३) 'स्तस्य थः' (५७) 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

स्तस्य थो न स्यात् । 'उपरि०' (३६) इति सलोपः । तः इति पाठो
न्तरम् । स्तम्बः तंबो ।

स्तम्भे खः ॥ ११० ॥

स्तस्य खः स्यात् । थापवादः । स्तम्भः खंबो ।

स्फोटके ॥ १११ ॥

अत्र युक्तस्य खः स्यात् । स्फोटकः खोडओ, 'दो डः' (८८)
इति डः ।

र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः ॥ ११२ ॥

र्य इत्येतस्य शय्या-ऽभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जः स्यात् । कार्य
कज्जो ।

सूर्ये वा ॥ ११३ ॥

सूर्यशब्दे युक्तस्य र-ज्जौ वा स्याताम् ।

न र-होः ॥ ११४ ॥

रेफ-हकारयोर्द्वित्वं न स्यात् । सूर्यः सूरौ सुज्जो ।

र्त्तस्य टः ॥ ११५ ॥

स्पष्टम् । कैवर्त्तः केवट्टो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

न धूर्त्तादिषु ॥ ११६ ॥

एषु र्तस्य टो न स्यात् । धूर्त्तः धुत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः
आवर्त्तः आवत्तो । संवर्त्तः संवत्तो । निवर्त्तः णिवत्तो । आर्त्तः अत्तो
धूर्त्त कीर्त्ति वर्त्तमान वर्त्त आवर्त्त संवर्त्त निवर्त्त वर्त्तिका आर्त्त कर्त्तर
मूर्त्ति धूर्त्तादिः ।

गर्त्ते डः ॥ ११७ ॥

र्त्तस्य डः स्यात् । गर्त्तः गड्डो ।

१ अत्रायमाशयः — यथा "न स्तम्भे" इति सूत्रपाठो दृश्यते तथा प्रत्यन्तरेषु "तः स्तम्भे" इत्यस्य
सूत्रपाठो दृश्यते इति ।

एषु क्षस्य छः स्यात् । क्षुब्धः छुद्धो । उत्क्षिप्तः उच्छिक्तो । 'उपरि०'
 (३६) इति पलोपः । सहक्षः सरिच्छो, 'क-ग०' (१०) इति दलोपः, ऋ
 रिः । ऋक्षः रिच्छो । अक्षि लक्ष्मी क्षुण्ण क्षीर क्षुब्ध उत्क्षिप्त सहक्ष इक्षु
 उक्षा क्षार ऋक्ष मक्षिका क्षुर क्षुत क्षेत्र वक्ष उदक्ष कुक्षि कक्षा रक्षा
 अक्ष्यादिः । क्षणः छणो खणो ।

ष्म-यक्ष्म-विस्मयेषु म्हः ॥ ११९ ॥

ष्म इत्यस्य यक्ष्म-विस्मययोश्च युक्तस्य म्हादेशः स्यात् । विस्मय
 विम्हओ । स्नातः ण्हाओ, 'ह-स्न०' (४९) इति ण्हादेशः ।

ऋतोऽत् ॥ १२० ॥

ऋत आदेः अत् स्यात् । कृष्णः कण्हो । प्रश्नः पण्हो ।

इत् एत् पिण्डसमेषु ॥ १२१ ॥

एषु इकारस्य एत्वं स्यात् । समग्रहणं संयोगपरमुपलक्षयति । विश्रः
 वेण्हो ।

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ १२२ ॥

फः स्यात् । स्पन्दः फंदो । निस्पन्दः णिप्फंदो ।

बाष्पेऽश्रुणि हः ॥ १२३ ॥

बाष्पशब्दे ष्पस्य हः स्यात्, अश्रुणि वाच्ये । बाष्पः बाहो, 'न
 र-होः' (११४) इति द्वित्वनिषेधः । अश्रुणि किम् ? बाष्पः बाफो ऊष्मा,
 वक्ष्यमाणः 'ष्पस्य फः' (२०६) ।

कार्षापणे ॥ १२४ ॥

युक्तस्य हादेशः स्यात् । कार्षापणः क्हावणो, 'पो वः' (८५)
 इति वः ।

श्चत्स-प्सां छः ॥ १२५ ॥

त्रयाणां छः स्यात् । पाश्चात्यः पच्छत्तो । वत्सः वच्छो । ईप्सितः
 इच्छिओ ।

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ १२६ ॥

अनयोः त्सस्य छादेशो न स्यात् । उत्सुकः ऊसुओ । उत्सवः
 ऊसवो ।

म-ज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णः स्यात्
प्रद्युम्नः पञ्जुणो, 'त्य-थ्य०' (७१) इति ज्ञः । यज्ञः जणो ।

भिन्दिपाले ण्डः ॥ १२८ ॥

युक्तस्य ण्डः स्यात् । भिन्दिपालः भिन्दिवालो, 'पो वः' (८५)
इति वः ।

विह्वले म्म-हौ वा ॥ १२९ ॥

युक्तस्य एतौ वा स्याताम् । विह्वलः विंभलो विहलो ।

न बिन्दुपरे ॥ १३० ॥

अनुस्वारात् परस्य द्वित्वं न स्यात् । सङ्क्रान्तः संकंतो ।

समासे वा ॥ १३१ ॥

समासे शेषा-SSदेशयोर्वा द्वित्वं स्यात् । 'शेषा०' (३५) इत्यत्र
'अनादौ' इत्युक्तेः अप्राप्तविभाषेयम्, अन्तर्वर्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य
पदादित्वात् । छायाग्रामः छायाग्गामो छाहागामो, 'छायायां हः'
(१६८) इति वक्ष्यमाणेन हः ।

सेवादिषु ॥ १३२ ॥

एषु अनादौ स्थितस्य हलो द्वित्वं वा स्यात् । निहितः निहितो निहितो
'न र-होः' (११४) इति निषेधाद् न हस्य द्वित्वम् । तूष्णीकः तुण्हको
तुण्हओ, 'ह-स्त्र०' (४९) इति ण्हः । दुःखितः दुक्खितो, पक्षे 'ख-घ०'
(५९) इति हः, दुहितो । द्वित्वपक्षे 'वर्गेषु' (३९) इति कः । विश्रामः
वीसामो विस्सामो । निःश्वासः निस्सासो णीसासो । पुष्यः पुस्सो पूसो ।
सेवा एक नख दैव अशिव त्रैलोक्य निहित तूष्णीक कार्णिकार दीर्घरात्रि
दुःखित अश्व ईश्वर विश्राम निःश्वास रश्मि मित्र पुष्य सेवादिः । उभ-
यत्र विभाषेयम्, सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां 'शेषा०' (३५) इति प्राप्ते ।

कृष्णे वा ॥ १३३ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य तदचकता च । कृष्णः
किसणो कण्हो । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन वर्णवाचके विप्रकर्षः, भग-
वति न इति ।

लोपः । अनुवर्त्तमानः अणुअत्तमाणो । यावत् तावत् पारावतं अनु-
वर्त्तमान जीवित एवं एव अवट देवकुल यावदादिः । आकृतिगणोऽयम् ।
सर्वः सवो ।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १३५ ॥

स्पष्टम् । सर्वे सवे । सर्वं सवं । सर्वान् सवा । सर्वेण सवेण । सर्वैः
सवेहिं । सर्वस्मै सवस्स । सर्वेभ्यः सवाणं । सर्वस्मात् सवा सवादो सवादु
सवाहि, 'ङसेः०' (२०) इत्यादेशाः । सर्वेभ्यः सवाहितो सवासुत्तो ।
सर्वस्य सवस्स । सर्वेषाम् सवाणं ।

डेः सिंस-स्मि-त्थाः ॥ १३६ ॥

सर्वादेः परस्य डेः इति सप्तम्येकवचनस्य सिंस स्मि तथ इति त्रय
आदेशाः स्युः । सर्वस्मिन् सवसिंस सवस्मि सवत्थ । सर्वेषु सवेषु । विश्वः
विस्सो । उभौ उहे । उभशब्दस्य द्विवचनान्तत्वाद् द्विवचनस्य बहुवच-
नादेशः । संस्कृते प्रसिद्धः सर्वादिः ॥

शेषोऽदन्तवत् ॥ १३७ ॥

शेषस्तु विधिः अदन्तवत् स्यात् । तेन आकारान्तादपि 'अत ओत
सोः' (८) इत्यादि विधिः प्रवर्त्तते । विश्वपाः विस्सवो इत्यादि ।

सु-भिस्र-सुप्सु दीर्घः ॥ १३८ ॥

इदुदन्तयोः दीर्घः स्याद् एषु परेषु । 'अन्त्यस्य हलः' (२६) इति
सोर्लोपः, अग्निः अग्गी । 'अघो०' (४०) इति न लोपः ।

जस ओश्च यूत्वम् ॥ १३९ ॥

इदुदन्तयोः परस्य जस ओ इत्यादेशः स्याद् णो च, पूर्वस्य ईकारो-
कारौ च स्याताम् । अग्रयः अग्गीओ अग्गीणो । पाठान्तरे तु-

जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च ॥ १४० ॥

इदुदन्तयोः शब्दयोर्जसः ओ वो इत्येतावादेशौ स्याताम्, अत्वम्
ईत्वम् ऊत्वं च विकल्पेन स्यात् णो च । पक्षे अदन्तवत् । अग्रयः
अग्गीओ अग्गीवो अग्गीणो अग्गओ अग्गवो अग्गी । हे अग्ने हे अग्नि ।
अग्निं अग्निं ।

इदुदन्तयोः टाया णा इत्यादेशः स्यात् । अग्निना अग्निणा ।

न डि-ङस्योरेदातौ ॥ १४२ ॥

इदुदन्तयोः परयोः डि-ङस्योः एत् आत् इत्येतौ न स्याताम् । अग्नेः अग्नीदो अग्नीदु अग्नीहि । डि-ङस्योरिति किम् ? समृद्ध्या समिद्धीए समिद्धीआ । 'टा-ङस-ङीनाम्' (१६०) इति एत्-आतौ ।

ए भ्यसि ॥ १४३ ॥

इदुदन्तयोः भ्यसि एत्वं न स्यात् । अग्निभ्यः अग्नीहितो अग्नीसुत्तो ।

ङसो वा ॥ १४४ ॥

इदुदन्तयोः ङसो णो वा स्यात् । पक्षे 'शेषो०' (१३७) इत्य-
तिदेशात् 'ङसः स्सः' (१९) इति स्सः । अग्नेः अग्नीणो [अग्निस्स] ।
अग्नीनाम् अग्नीणं । अग्नौ अग्निम्मि । अग्निषु अग्नीसु । ऋषिः इसी,
'इद् ऋष्यादिषु' (४८) इति इत्वम् ।

बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ ॥ १४५ ॥

अत्र वकार-हकारयोः क्रमेण भकाराकारौ स्याताम् । बृहस्पतिः
भअप्पर्ई, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, 'शेषा०' (३५) इति
द्वित्वम्, 'क-ग०' (१०) इति तलोपः, 'सु-भिस्र०' (१३८) इति
दीर्घः । गृहपतिः, गहवई, 'पो वः' (८५) इति वः ॥ द्विशब्दो नित्यं
द्विवचनान्तः ।

द्वेर्दुवे दोणि वा ॥ १४६ ॥

द्विशब्दस्य जसा शसा च सह दुवे दोणि इत्येतावादेशौ स्याताम्
द्वौ दुवे दोणि ।

द्वेर्दो ॥ १४७ ॥

द्विशब्दस्य दो अयमादेशः स्यात् सुपि । द्वाभ्याम् दोहिं । द्वाभ्याम्
दोहितो दोसुत्तो ।

एषामामो ण्हं ॥ १४८ ॥

द्वि-त्रि-चतुरामामो ण्हं इत्यादेशः स्यात् । णापवादः । द्वयोः दोण्हं
द्वयोः दोसु । त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।

तिणिण जस्-शस्भ्याम् ॥ १४९ ॥

जसा शसा च सह त्रिशब्दस्य तिणिण इत्यादेशः स्यात् । त्रयः
तिणिण ।

त्रेस्ती ॥ १५० ॥

त्रिशब्दस्य ती इत्यादेशः स्यात् सुपि । त्रिभिः तीहिं । त्रिभ्यः
तीहिंतो तीसुत्तो । त्रयाणाम् तीणहं त्रिषु तीसु । सखा सही । सखायः
सहीओ सहीणो । हे सहि । सखायम् सहिं । सखीन् सहिणो इत्यादि ।
पतिः पई । 'इत् एत्' (१२१) इति एत्, विष्णुः वेण्हू । जहुः जण्हू ।
इक्षुः उच्छू, 'उद् इक्षु' (४६) इति उत्त्वम्, अक्ष्यादित्वात् छः ।
ऋतुः उद्, 'उद् ऋत्वादिषु' (२९) इति उत्त्वम्, 'ऋत्वादिषु'
(६२) इति दः ।

स्थाणावहरे ॥ १५१ ॥

युक्तस्य खादेशः स्यात्, न तु हरे अभिधेये । स्थाणुः खाणू । हर-
वाचके तु थाणू, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, विष्णुवत् । 'र्य-शय्या०'
(११२) इति जः, अभिमन्युः अहिमञ्जु । करेणुः सूर्यः करेणू सुज्जो ।

ऋत आरः सुपि ॥ १५२ ॥

ऋकारस्य आरः स्यात् सुपि । भर्ता भत्तारो ॥

उर्जस्-शस्-टा-डस्-सुप्सु वा ॥ १५३ ॥

जसि शसि टायां डसि सुपि च ऋकारस्य स्थाने उर्वा स्यात् ।
आरापवादः । भर्तारः भत्तारा भत्तूओ भत्तुणो, 'जस ओः०' (१३९)
इति ओत्वं णो च । हे भर्तः हे भत्तारा । भर्तृन् भत्तुणो, 'इदुतोः०'
(१४०) इति णो । भर्त्रा भत्तुणा भत्तारेण । भर्तृभिः भत्तारेहिं । भर्तु-
भत्तुस्स भत्तारस्स । भर्तृणां भत्ताराणं । भर्तृरि भत्तारम्मि । भर्तृषु
भत्तारसु ।

पितृ-भ्रातृ-जामातृणामरः ॥ १५४ ॥

एषाम् ऋत अरः स्यात् सुपि । आरापवादः ।

आच्च सौ ॥ १५५ ॥

पित्रादीनाम् आत् स्यात् सौ परे । पिता पिआ पिअरो इत्यादि ।
भ्राता भाआ भाअरो । जामाता जामाआ जामाअरो इत्यादि ।

इत्यजन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

पक्षे यथालिङ्गम् । प्रश्नः पण्हा । शय्या सेजा, 'ए शय्यादिषु' (४१
इति एत्वम्, 'र्य शय्या०' (११२) इति जः ।

जसो वा ॥ १५७ ॥

स्त्रियां तिष्ठतो जस उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्या
सेजाउ सेजाओ सेजा ।

अमि ह्रस्वः ॥ १५८ ॥

स्त्रीवाचकस्य ह्रस्वः स्याद् अमि परे । शय्याम् सेजं ।

स्त्रियां शस उदोतौ ॥ १५९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ स्याताम् । शय्या
सेजाउ सेजाओ ।

टा-ङस्-डीनामिदेददातः ॥ १६० ॥

स्त्रीवाचकात् परेषां टा ङस् ङि इत्येतेषां इत् एत् अत् आत् एत्
आदेशाः स्युः । इति चतुर्ष्वपि प्राप्तेषु -

नाऽऽतोऽदातौ ॥ १६१ ॥

स्त्रीवाचकादाकारान्तात् शब्दात् परेषां टा-ङस्-डीनाम् अत्-आतौ न
स्याताम् । शय्याया सेजाइ सेजाए । शय्याभिः सेजाहिं । शय्यायाः सेज
सेजादो सेजादु सेजाहि । शय्याभ्यः सेजाहितो सेजासुत्तो ।

ङसो वा ॥ १६२ ॥

ङसः स्त्रियाम् उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । शय्यायाः सेजाउ
सेजाओ सेजस्स (?) सेजाइ सेजाए । शय्यानाम् सेजाणं । शय्यायाम्
सेजाइ सेजाए । शय्यासु सेजासु ।

स्त्रियामात् एत् ॥ १६३ ॥

सम्बुद्धौ स्त्रियाम् आत् एत्वं स्यात् सौ । हे शय्ये हे सेजे, 'अन्त्यस्य०'
(२६) इति सोर्लोपः ।

लवण-नवमल्लिकयोर्वेन ॥ १६४ ॥

लवण-नवमल्लिकयोः आदेः अतो वकारेण सह ओकारः स्यात् ।
नवमल्लिका णोमल्लिआ । मल्लिका इत्येतदुपलक्षणम्, तेन नवफलिका

णोभलिआ इति सिद्धम् । निद्रा णेद्वा णेद्वा, 'द्रे रो वा' (१०४) इति व
रलोपः, 'इत् एत्' (१२१) इति एत्वम् । हे णेद्दे इत्यादि ।

अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु ॥ १६५ ॥

एषु इतो अत् स्यात् । हरिद्रा हलद्वा हलद्वा, 'हरिद्रादीनां' (६०)
इति रेफस्य लः । जिह्वा जीहा, 'ईत् सिंह' (५०) इति ईत्वम्
'सर्वत्र' (३४) इति वलोपः । मुक्ता मोक्ता, 'उत् ओत्' (५५) इति
ओत्वम् । घृणा घणा, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत् । कृशरा किसरा
कृत्या किच्चा, 'त्य-थ्य' (७१) इति च्चः । कृपा किवा, 'पो वः' (८५)
इति वः । त्रिष्वपि 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्वे प्राप्ते ऋष्यादित्वाद्
इत्वम् । वेदना विअणा वेअणा, 'क-ग' (१०) इति दलोपः, 'नो णः
(९) इति णः ।

यमुनाया मस्य ॥ १६६ ॥

लोपः स्यात् । यमुना जउणा, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः ।

चन्द्रिकायां मः ॥ १६७ ॥

कस्य मः स्यात् । चन्द्रिका चन्दिमा, 'सर्वत्र' (३४) इति
रलोपः । पताका पडाआ, 'प्रतिसर' (३३) इति तस्य डः, 'क-ग'
(१०) इति कलोपः ।

छायायां हः ॥ १६८ ॥

यस्य हः स्यात् छाया छाहा । रमणीया रमणिज्जा, 'उत्तरीया'
(८६) इति जः, 'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम् । सदा सढा । राधा
राहा । सभा सहा । शोभा सोहा । परिखा फलिहा, हरिद्रादित्वाद् लः,
'परुष' (६३) इति फः, 'ख-घ' (५९) इति हः । दोला डोला,
'दोला-दण्ड' (९४) इति डः । निशा णिसा ।

सुषायां ण्हः ॥ १६९ ॥

षस्य ण्हः स्यात् । सुषा सोण्हा, तुण्डरूपत्वाद् उत ओत्वम् ।
उल्का उक्का, 'सर्वत्र' (३४) इति ललोपः । वार्त्ता वत्ता, 'र्त्तस्य टः'
(११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वान्न । वर्त्तिका वत्तिआ, पूर्ववत् । सन्ध्या
सन्ध्या, 'ध-धोर्त्त' (१०९) इति षः । सन्ध्या सन्ध्या, 'सन्ध्या' (१०९)

इति चः । मिथ्या मिच्छा । विद्या विज्ञा । क्षुणा छुणा । उक्षा उच्छा ।
 मक्षिका मच्छिआ । कक्षा कच्छा । रक्षा रच्छा । पञ्चस्वपि अक्ष्यादित्वात्
 छः 'वर्गेषु०' (३७) इति चः । क्षमा छमा खमा, 'क्षमा-वृक्ष०' (६७)
 इति छत्ववैकल्प्यात् पक्षे 'क्क-स्क०' (५६) इति खः । 'अ-त्स-प्सा
 च्छः' (१२३) पश्चिमा पच्छिमा । विवत्सा विइच्छा (?) । लिप्सा लिच्छा ।
 जुगुप्सा जुउच्छा, 'प्रायः' (१०) इत्युक्तेर्लोपाभावपक्षे जुगुच्छा ।
 मूर्च्छा मुच्छा, "वर्गेषु०" (३७) इति चः ।

आडो ज्ञादेशस्य ॥ १७० ॥

'अ-ज्ञ०' (१२७) इति जातो यो णादेशः तस्य आडः परस्य द्वित्वं
 न स्यात् । आज्ञा आणा । सेवा सेव्वा सेवा, 'सेवादिषु' (१३२) इति
 द्वित्वम् ।

क्लिष्ट-श्लिष्ट-रत्न-क्रिया-शार्ङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य ॥ १७१ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात् । विप्रकर्षितव्यस्य विप्रकर्षे जाते य
 पूर्वो वर्णो निरर्थकस्तस्य विप्रकर्षितव्यस्वरता स्यात् । क्रिया किरिआ ।

अः क्षमा-श्लाघयोः ॥ १७२ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्याकारः तत्स्वरता च । क्षमा खमा ।
 विप्रकर्षितव्यस्य दीर्घत्वादीर्घत्वे प्राप्ते ह्रस्वो अकारो विधीयते । 'क्क-स्क०'
 (५६) इति खः । श्लाघा सलाहा, 'श-घोः०' (४४) इति सः, 'ख-घ०'
 (५९) इति हः ।

ज्यायामीत् ॥ १७३ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य ईकारः । ज्या जीआ अत्राप्याकारे प्राप्ते
 ईकारो विधीयते । ज्येत्यत्र विप्रकर्षकरणात् पूर्वम् 'अधो म-न-याम्' (४०)
 इति यलोपः, ततो घचेत् 'कग०' (१०) इति । माला माला । शाला साला

आदीतौ बहुलम् ॥ १७४ ॥

स्त्रियामकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं स्तः । सहमान
 सहमाणा सहमाणी । वेपमाना वेवमाणा वेवमाणी । हरिद्रा हलद्रा(हा)
 हलद्दी । सूर्पनखा सुप्पणहा सुप्पणही । छाया छाहा छाही । का की
 जा जी । ता ती । प्रश्नः पण्ही । समृद्धिः समिद्धी सामिद्धी, 'आ समृद्ध्या०'
 (४३) इति वा आकारः, ऋष्यादित्वाद् इः, 'सु-भिसू०' (१३८) इति
 दीर्घः । अभिज्ञानिः आदिआई अदिआई 'ख-गा०' (५९) इति इः ।

ष्टस्य ठः ॥ १७५ ॥

ष्ट इत्यस्य ठकारः स्यात् । गृष्टिः गिष्टी । वृष्टिः दिष्टी । सृष्टिः सिष्टी । चतुर्ष्वपि ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । आकृतिः आइदी; ऋष्यादित्वाद् इः; आउदी, ऋत्वादित्वाद् उः । सुकृतिः सुइदी, ऋष्यादौ कृतिशब्दपाठात् । संवृतिः संवुदी । प्रतिपत्तिः पदिवत्ती, 'प्रतिसर०' (३३) इति तु न, ऋत्वादिपाठेन बाधात् । वसतिः वसही, 'वसति-भरत०' (८१) इति हः ।

यष्ट्यां लः ॥ १७६ ॥

आदेलः स्यात् । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जापवादः । यष्टिः लट्टी । कीर्त्तिः किती, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति टे प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । मूर्त्तिः मुत्ती । वितर्दिः विअड्डी । विच्छर्दिः विच्छड्डी । उभयत्रापि 'गर्दभ०' (?) इति डः, 'शेषा-SSदेश०' (३५) इति द्वित्वम् । कुक्षिः कुच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः । स्थितिः थिई । मनस्विनी मणंसिणी, समृद्ध्यादित्वाद् वा आकारः, वक्रादित्वादानुस्वारः ।

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ १७७ ॥

सम्बुद्धौ । [हे मनस्विनि] हे माणंसिणि । मनस्विनीम् माणंसिणिं, 'अमि ह्रस्वः' (१५८) इति ह्रस्वः । वल्ली वेल्ली, शय्यादित्वाद् एकारः ।

चतुर्थी-चतुर्दशोस्तुना ॥ १७८ ॥

अनयोस्तुशब्देन सह आदेः अतः ओत्वं वा स्यात् । चतुर्थी चोत्थी चउत्थी । चतुर्दशी चोदही चउदही । 'दशादिषु०' (१००) इति हः । पृथिवी पुहवी, ऋत्वादित्वाद् उः, 'अत् पथि०' (१६५) इति अः ।

उः पद्म-तन्वीसमेषु ॥ १७९ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंरूपेषु च युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य उकारः । गुर्वी गरुई, मुकुटादित्वाद् अः । शफरी सभरी, 'श-षोः सः' (४४) 'फो भः' (९१) । अङ्गुरी अङ्गुली, 'हरिद्रादीनां०' (६०) इति रेफस्य लः ।

विसिन्यां भः ॥ १८० ॥

आदेः । विसिनी भिसिणी । स्त्रीलिङ्गनिर्देशः किम् ? विसं । षष्ठी छट्टी, 'षट्-शावक०' (९९) इति छः । सप्तमी सत्तमी । कर्त्तरी कत्तरी, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । लक्ष्मी लच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः ।

पः स्यात् । रुक्मिणी रुक्मिणी । श्रीः सिरी । हीः हिरी, 'इः श्री-ही
(३२) इति विप्रकर्ष-यौ । लघ्वी लहुई, 'ख-घ०' (५९) इति हः, 'उ
पद्म०' (१७९) इति विप्रकर्षः । तन्वी तणुई । नदी नई । हे नह । पृष्ठं पुष्टी
अक्षि अच्छी । वधूः वहू । हे बहु इत्यादि ।

मातुरात् ॥ १८२ ॥

मातृशब्दसम्बन्धिन ऋकारस्य आत् स्यात् । माता माआ । हे मा
इत्यादि ।

॥ इति अजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

लोपोऽरण्ये ॥ १८३ ॥

आदेरतः ।

सोर्विन्दुर्नपुंसके ॥ १८४ ॥

नपुंसके तिष्ठतः सोः अनुस्वारः स्यात् । अरण्यं रण्यं ।

इज्जस्र-शसोर्दीर्घश्च ॥ १८५ ॥

नपुंसके वर्त्तमानयोः जस्र-शसोः इदादेशः स्यात्, पूर्वस्य दीर्घश्च
अरण्यानि रण्णाइं । अरण्यं रण्यं । अरण्यानि रण्णाइं । अरण्येन रण्येण
पुंवत् । हे अरण्य हे रण्य, 'नाऽऽमन्त्रणे०' (२५) इति निषेधाद् विन्दुर्न
किन्तु 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

ओ बदरे देन ॥ १८६ ॥

अत्र दकारेण सह आदेरत ओत्वं स्यात् । बदरं बोरं इत्यादि ।

उदूखले द्वा वा ॥ १८७ ॥

अत्र दूशब्देन सह आदेः ओद् वा स्यात् । उदूखलं ओखलं उदूहलं ।

उलूहले त्वा वा ॥ १८७A ॥

उलूहलशब्दे लू शब्देन सह आदेः उकारस्य ओकारो वा स्यात् ।

उलूहलंओहलं । इति पाठान्तरम् ।

उदूतो मधूके ॥ १८८ ॥

अत्र मधूकशब्दे उकारस्य उत् स्यात् । मधूकं महुअं ।

दुकूलशब्दे ऊकारस्य अकारो वा स्यात्, तत्सन्नियोगेन च लस्य द्वित्वम् । दुकूलं दुअल्लं दुऊलं ।

एन्नूपुरे ॥ १९० ॥

नूपुरशब्दे ऊकारस्य एत् स्यात् । अत्र 'आदेः' इति प्रयोजनाभावाद् नानुवर्तते । नूपुरं णेउरं । ऋणं रिणं, 'ऋ रिः' (?) इति रि । हृदयं हिअयं, ऋष्यादित्वाद् इः । वृन्दावनं वुंदावणं, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति प्राप्ते ऋत्वादित्वाद् उः ।

लृत्तः कृत्त इलि ॥ १९१ ॥

कृत्तशब्दे लृकारस्य इलिः स्यात् । कृत्तं किलित्तं । त्रैलोक्यं तेल्लोकं, 'एत् एत्' (६९) इति एत्, सेवादित्वात् द्वित्वम्, द्वित्ववैकल्प्यात् पक्षे तेल्लोकं । शैत्यं सेत्तं । स्वैरं सइरं । वैरं वइरं । द्वयोरप्यैकारस्य 'दैत्यादिषु' (६८) इति अइः ।

दैवे वा ॥ १९२ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइरित्यादेशो वा स्यात् ।

नीडादिषु च ॥ १९३ ॥

एषु अनादौ तिष्ठतो हलो वा द्वित्वम् । दैवं देवं देवं दइवं । नीडस्रोत प्रेम व्याहृत जनक यौवन दैव इत्यादयः नीडादिः ।

इत् सैन्धवे ॥ १९४ ॥

अत्र एकारस्य इकारः स्यात् । एत्वापवादः । सैन्धवं सिन्धवं ।

ईद् धैर्ये ॥ १९५ ॥

अत्र एकारस्य ईत् स्यात् । एत्वापवादः ।

तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः ॥ १९६ ॥

एषु र्यस्य रः । धैर्यं धीरं । तूर्यं तूरं । सौन्दर्यं सुन्दरं, 'उत् सौन्दर्यादिषु' (७६) इति उः । आश्चर्यं अच्छेरं, 'श्च-त्स०' (१२५) इति छः । पर्यन्तं परंतं । त्रिष्वपि शय्यादित्वाद् एत्वम् । यौवनं जोवणं, 'औत् ओत्' (७३) इति ओत्, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, नीडादित्वात् द्वित्वम्, 'नो णः०' (९) इति णः ।

आच्च गौरवे ॥ १९७ ॥

गौरवशब्दे आ अउ ओ इत्येते स्युः । गौरवं गारवं गउरवं गोरवं
इत्यादि । गर्भितं गग्भिणं, 'गर्भिते णः' (८०) इति णः ।

डस्य च ॥ १९८ ॥

डकारस्यायुक्तस्य अनादिभूतस्य लः स्यात् । दाडिमं दालिमं । 'प्रायः
इत्यनुवृत्तेः कचिद् दाडिमं इत्यपि ।

ठो ढः ॥ १९९ ॥

अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ठस्य ढः स्यात् । जठरं जढरं । कठोरं कढोरं
अंकोठे छः ॥ २०० ॥

अत्र ठस्य छः स्यात् । अंकोठं अंकोछं । सफलं सभलं, 'फो भः
(९१) इति भः । सुखं सुहं, 'ख-ग०' (५९) इति हः । करुणं कलुणं
हरिद्रादित्वाद् रेफस्य लः ।

श्मश्रु-श्मशानयोरादेः ॥ २०१ ॥

अनयोरादेर्वर्णस्य लोपः स्यात् । श्मशानं मसाणं ।

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २०२ ॥

एषु र्यस्य रिअं इत्यादेशः स्यात् । चौर्यं चोरिअं । शौर्यं सोरिअं
'ओत् ओत्' (७३) इति ओत् । वीर्यं वीरिअं ।

पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु छः ॥ २०३ ॥

एषु र्यस्य छः स्यात् । पर्यस्तं पल्लत्थं, 'स्तस्य थ' (५७) इति थः
'शेषादेश०' (३५) इति द्वित्वम् । पर्याणं पल्लाणं । सौकुमार्यं सोअमल्लं
मुकुटादित्वाद् अः ।

पत्तने ॥ २०४ ॥

युक्तस्य टः । पत्तनं पट्टणं । क्षीरं छीरं, अक्षयादित्वात् छः । श्लक्ष्णं
सणहं । तीक्ष्णं तिणहं । 'ह-ख०' (४९) इति णहादेशः ।

चिह्ने घः ॥ २०५ ॥

युक्तस्य घः स्यात् । णहापवादः । चिहं चिन्धं, प्रायिकमेतत्, चिणहं

णस्य फः ॥ २०६ ॥

तालवृन्तकं तालवेण्ठअं तलवेण्ठअं ।

आम्र-ताम्रयोर्बः ॥ २०८ ॥

अनयोरनादेः वः स्यात् । आम्रं अंबं । ताम्रं तंबं । क्लिष्टं किलिष्टं ।
रत्नं रअणं । 'क्लिष्ट-क्लिष्ट०' (१७१) इति विप्रकर्षः तत्स्वरता च ।

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २०९ ॥

अत्र दु इत्यस्य लोपः स्यात् । उदुम्बरं उंबरं ।

कालायसे यस्य वा ॥ २१० ॥

अत्र यस्य वा लोपः स्यात् । य इति विशिष्टग्रहणम् । कालायसं
कालासं कालाअसं, लोपाभावपक्षे 'क-ग०' (१०) इति यकारमात्रलोपः ।

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ २११ ॥

मलिनशब्दे लि इत्यस्य इः स्यात्, न इत्यस्य लः स्याद् वा । मलिनं
महलं मलिणं ।

गृहे घरोऽपतौ ॥ २१२ ॥

गृहशब्दस्य घर इत्ययमादेशः स्यात्, न तु पतौ परे । गृहं घरं ।
अपताविति किम् ? गृहपतिः गृहवई । पीतं पीअं । धनं धणं ।

वृन्दे वो रः ॥ २१३ ॥

वृन्दशब्दे वात् परः स्वार्थे रो वा स्यात् । व्रंदं वंदं ।

आलाने न-लोः ॥ २१४ ॥

अत्र नकार-लकारयोः स्थितिपरिवृत्तिः स्यात् । आलानं आणालं ।

दाढादयो बहुलम् ॥ २१५ ॥

दाढा इत्यादयः शब्दाः बहुलं निपात्यन्ते । चातुर्यं चाउलिअं । पृष्टं
पुष्टं । इदानीं एणिह । दुहिता दिद्धी । मण्डूकः मण्डूरो । कमलं कंदोदो ।
गोदावरी गोला । ललाटं लडालं णिडालं । आकृतिगणोऽयम् । 'सु-भिसू०'
(१३८) इति दीर्घं प्राप्ते -

न नपुंसके ॥ २१६ ॥

क्लीबे प्रथमैकवचने दीर्घो न । वारि वारिं । बारीणि बारीहं । पुनस्त-
द्रत् । शेषं पुंशत् ।

युक्तस्य ठः स्यात् । अस्थि अट्ठिं । सक्थि सत्थिं । अक्षि अच्छिं
 गुरु गरुअं, मुकुटादित्वाद् अः । इमश्चुः मंसू, 'इमश्चु-इमशानयोः०'
 (२०१) इति शकारलोपः अश्चु अंसू, वक्रादित्वाद् अनुस्वारः । मधु महुं
 ॥ इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

अनङ्गान् अणङ्गुओ, विष्णुवत् । चतुश्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः
 चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ २१८ ॥

चतुःशब्दस्य जसा शसा च सह एतावादेशौ स्याताम् । चत्वार
 चत्तारो चत्तारि । चतुरः चत्तारो चत्तारि । चतुर्भिः चऊर्हिं । चतुर्भ्यं
 चऊर्हितो चऊसुत्तो । चतुर्णां चउण्हं । चतुर्षु चऊसु ।

किमः कः ॥ २१९ ॥

स्पष्टम् । कः को । के के, 'सर्वादेः०' (१३५) इति एत्वम् ।

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यश्च इणा वा ॥ २२० ॥

एभ्यः परः टा इणा इति वा स्यात् । केन कइणा केण ।

त्तो दो डसेः ॥ २२१ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । कस्मात्
 कत्तो कदो का कादो कादु काहि । केभ्यः कार्हितो कासुत्तो ।

किं-यत्-तद्भ्यो डस आसः ॥ २२२ ॥

एभ्यः परस्य डस आस इत्यादेशो वा स्यात् । कस्य कास कसस ।

आम एसिं ॥ २२३ ॥

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यः परस्य आम एसिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
 केषां केसिं काणं ।

डेर्हिं ॥ २२४ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो डेः सप्तम्येकवचनस्य हिं इत्यादेशो वा स्यात् ।
 कस्मिन् कर्हिं कस्मिं कस्मि कत्थ ।

आहे इआ काले ॥ २२५ ॥

किं-यत्-तद्भ्यः परस्य डेः काले वाच्ये आहे इआ इत्येतावादेशौ वा
 स्याताम् । कदा काहे कइआ कर्हिं कस्मिं कस्मि कत्थ । केषु केसु ।

इदम इमः ॥ २२६ ॥

इदमशब्दस्य इम इत्यादेशः स्यात् सुपि । अयं इमो । इमे इमे । इमं इमं । इमान् इमा । अनेन इमेण इमिणा, 'इदमेतत्' (२२०) इति इणादेशः । एभिः इमोहिं । अस्मात् इमादो इमादु इमाहि । एभ्यः इमाहितो इमासुत्तो ।

स्स-स्सिमोरद् वा ॥ २२७ ॥

इदमशब्दस्य अ इत्यादेशो वा स्यात् स्से स्सिमि च । अस्य अस्स इमस्स । एषां इमेसिं इमाणं ।

डेदन हः ॥ २२८ ॥

इदमशब्दस्य दकारेण डेः ह इत्यादेशो वा स्यात् । पक्षे यथाप्राप्तम् । न तथः ॥ २२९ ॥

इदमः परस्य डेः तथ इत्यादेशो न स्यात् । अस्मिन् अस्सि इमस्सि इह इमस्मि । एषु इमेसु ।

राज्ञश्च ॥ २३० ॥

राजन्शब्दस्य आ इत्ययमादेशः स्यात् सौ । राजा राआ । 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः ।

जस्-शस्-डसो णो ॥ २३१ ॥

राज्ञः परेषामेषां णो इत्यादेशः स्यात् ।

आ णो-णमोरडसि ॥ २३२ ॥

णो-णमोः परयोः राज्ञो जस्य आ स्यात् । राजानः राआणो ।

आमन्त्रणे वा बिन्दुः ॥ २३३ ॥

राजन्शब्दस्यामन्त्रणेऽनुस्वारो वा स्यात् सौ । हे राजन् हे राअ हे राअ । राजानं राअं । 'शेषो०' (१३७) इति अदन्तवद्भावः ।

शस एत् ॥ २३४ ॥

राज्ञः परस्य शस ए इत्यादेशः स्यात् । राज्ञः राए राआणो ।

इसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च ॥ २३६ ॥

राज्ञः परस्य ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वं वा स्यात् अन्त्यस्य च लोपः । राज्ञा रण्णा । पक्षे -

इदद्वित्वे ॥ २३७ ॥

ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वाभावपक्षे राज्ञ इत्वं स्यात् । राइणा । राजभिः राएहिं 'शेषो०' (१३७) इत्यदन्तवद्भावः । राज्ञः राआराआदो राआद्दु राआहि । राजभ्यः राआर्हितो राआसुत्तो । राज्ञः रण्णो राइणो ।

आमो णं ॥ २३८ ॥

राज्ञ उत्तरस्य आमः णं इत्यादेशः स्यात् । राज्ञां राआणं । राज्ञि राअम्मि राए । राजसु राएसु ।

आत्मनो अप्पाणो वा ॥ २३९ ॥

आत्मनः अप्पाण इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ २४० ॥

आत्मनः अनादेशे राजवत् कार्यं स्यात्, [इत्व-द्वित्वे वर्जयित्वा] आत्मा अप्पाणो अप्पा । 'राज्ञश्च' (२३०) इति आकार उक्तः सोऽत्रापि स्यात् । आत्मनः अप्पाणो । आत्मानं अप्पं । आत्मनः अप्पणो । आत्मन अप्पणा । आत्मभिः अप्पेहिं । आत्मनः अप्पा अप्पादो अप्पाद्दु अप्पाहि । आत्मभ्यः अप्पार्हितो अप्पासुत्तो । आत्मनः अप्पणो आत्मनां अप्पाणं । आत्मभिः (०त्मनि?) अप्पे अप्पम्मि । आत्मसु अप्पेसु ।

ब्रह्माद्या आत्मवत् ॥ २४१ ॥

ब्रह्मन् युवन् इत्यादयः शब्दाः आत्मवत् साधवः स्युः । ब्रह्म ब्रह्मा ब्रह्माणो । युवा जुवा जुवाणो । अध्वा अद्वा अद्वाणो । एवमादये लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः ।

न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि ॥ २४२ ॥

नश्च सश्च न-सौ अन्ते यस्य इति विग्रहः । एते पुंसि प्रयोक्तव्याः

अनयोर्यः तकारः तस्य सकारः स्यात् सौ । सः सो । ते ते । तं तं ।
तान् ता । तेन तइणा तेण । तैः तेहिं ।

तद ओश्च ॥ २४४ ॥

तदः परस्य डसेः ओ इत्ययमादेशो वा स्यात् । तस्मात् तओ तत्तो
तदो तादो तादु ताहि । तेभ्यः ताहितो तासुत्तो ।

डसा से ॥ २४५ ॥

तदो डसा सह से इत्यादेशो वा स्यात् । तस्य से तास तस्स ।

आमि सिं ॥ २४६ ॥

तद आमा सह सिं इत्यादेशो वा स्यात् । तेषां सिं तेसिं ताणं ।
तस्मिन् तहिं तस्सिं तस्मिं तत्थ । तदा तहे तइआ । तेषु तेसु । एवं यः जो ।

एतदः सावोत्वं वा ॥ २४७ ॥

एतद ओत्वं वा स्यात् सौ । एषः एसो एस, नित्यप्राप्तविभाषेयम् ।
एते एते । एतं एतं । एतान् एता । एतेन एदिणा एदेण । एतैः एदेहिं ।

तो डसेः ॥ २४८ ॥

एतदः परस्य डसेः तो इत्ययमादेशो वा स्यात् ।

तो-त्थयोस्तो लोपः ॥ २४९ ॥

एतच्छब्दस्य तकारस्य लोपः स्यात् तो-त्थयोः परयोः । एतस्मात्
एत्तो एदादो एदादु एदाहि । एतस्मिन् एत्थ एतस्सिं एतस्मिं ।

पदस्य ॥ २५० ॥

- इत्यधिकृत्य ।

युष्मदस्तं तुमं ॥ २५१ ॥

युष्मदः पदस्य तं तुमं इत्यादेशौ स्यातां सावा सह । त्वं तं तुमं ।

तुञ्जे तुम्हे जसि ॥ २५२ ॥

युष्मदः पदस्य तुञ्जे तुम्हे इत्येतावादेशौ वा स्तः जसा सह । यूयं
तुञ्जे तुम्हे ।

त्तं वाऽमि ॥ २५३ ॥

युष्मदः पदस्य त्तं इत्यादेशो वा स्यात् अमा सह । त्वाम् त्तं तुमं ।

युष्मदः पदस्य वो तुञ्जे तुम्हे इत्येते आदेशाः स्युः शसा सह ।
युष्मान् वो तुञ्जे तुम्हे ॥

टा-ङ्योस्तइ तए तुमए तुए ॥ २५५ ॥

युष्मदुत्तरयोः टा ङि इत्येतयोः तइ तए तुमए तुए इत्येते आदेशाः
स्युः प्रकृत्या सह । त्वया तइ तए तुमए तुए ।

आङि च ते दे ॥ २५६ ॥

युष्मदः पदस्य आङा सह ते दे इत्येतावादेशौ स्तः । आङ् इति
दासंज्ञा प्राचाम् ।

तुमाइ च ॥ २५७ ॥

अयमपि स्यात् । ते दे तुमाइ ।

तुञ्जेहिं तुम्हेहिं तुब्भेहिं भिसि ॥ २५८ ॥

युष्मदः पदस्य एते आदेशाः स्युः भिसा सह । युष्माभिः तुञ्जेति
तुम्हेहिं तुब्भेहिं । अत्र 'तुञ्जे तुम्हे तुब्भे' इति सुवचम् 'शिषो०
(१३७) इत्यनेन 'भिसो हिं' (१७) इति हिमादेशस्यातिदिष्टत्वात् ।

ङ्सौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ २५९ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङस्या सह । त्वत् तत्तो तइत्तो तुमादं
तुमादु तुमाहि ।

तुम्हाहितो तुम्हासुत्तो भ्यसि ॥ २६० ॥

युष्मद एतौ आदेशौ स्यातां पञ्चमीबहुवचनेन सह । युष्मत
तुम्हाहितो तुम्हासुत्तो । अत्रापि 'तुम्हा भ्यसि' इत्येव सुवचम् । एवम
[सत्]शब्देऽपि ज्ञेयम् ।

ङसि तुमो-तुह-तुञ्ज-तुम्ह-तुब्भाः ॥ २६१ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङसा सह । तव तुमो तुह तुञ्ज तुम्ह
तुब्भ ।

वो भे तुञ्जाणं तुम्हाणमामि ॥ २६२ ॥

युष्मद एते स्युरामा सह । युष्माकम् वो भे तुञ्जाणं तुम्हाणं ।

डौ तुमम्मि ॥ २६३ ॥

युष्मदः तुमम्मि इत्यादेशः स्यात् इया सह । त्वयि तुमम्मि तइ
तए तुमए तुए ।

तुञ्जोसु तुम्हेसु सुपि ॥ २६४ ॥

युष्मद एतौ स्यातां सुपा सह । युष्मासु तुञ्जोसु तुम्हेसु ।

अस्मदो ह्मह्महअं सौ ॥ २६५ ॥

अस्मद एते स्युः प्रथमैकवचनेन सह । अहम् हं अहं अहअं ।

अहम्मिरमि च ॥ २६६ ॥

अस्मदः प्रथमैकवचन-द्वितीयैकवचनाभ्यां सह आदेशः स्यात् ।
अहं अहम्मि ।

अम्हे जस् शसोः ॥ २६७ ॥

अस्मदः अयमादेशः स्याद् जसा शसा च सह । वयं अम्हे ।

मं ममं ॥ २६८ ॥

अस्मद एतावादेशौ स्याताम् । माम् अहम्मि मं ममं । 'अहम्मि
रमि च' (२६६) इत्यतो 'अमि' इत्यनुवर्तते । 'चानुकृष्टं नोत्तरत्र' इति
परिभाषया चानुकृष्टानां हं-आदीनां नानुवर्तनम् ।

णे शसि ॥ २६९ ॥

अस्मदो णे इत्यादेशः स्यात् शसा सह । अस्मान् अम्हे णे ।

आडि मे ममाइ ॥ २७० ॥

अस्मदः एतौ स्तः टया सह । मया मे ममाइ ।

डौ च मइ मए ॥ २७१ ॥

अस्मदः एतौ स्तः डि-टाभ्यां सह । मया मइ मए ।

अम्हेहिं भिसि ॥ २७२ ॥

अस्मदः अयं स्याद् भिसा सह । अस्माभिः अम्हेहिं ।

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि डसौ ॥ २७३ ॥

अम्हेहितो अम्हेसुत्तो भ्यसि ॥ २७४ ॥

अस्मद एतौ स्यातां भ्यसा मह । अस्मत् अम्हेहितो अम्हेसुत्तो ।

मे मम मह मज्झ डसि ॥ २७५ ॥

अस्मद एते स्युः डसा सह । मम मे मम मह मज्झ । झस्य
धत्वमपीच्छन्ति केचित्, मद् ।

मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि ॥ २७६ ॥

अस्मद एते स्युरामा सह । अस्माकम् मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे ।

ममम्मि डौ ॥ २७७ ॥

अस्मदः अयं स्याद् डया सह । मयि ममम्मि मइ मए ।

अम्हेसु सुपि ॥ २७८ ॥

अस्मदः अयं स्यात् सुपा सह । अस्मासु अम्हेसु ।

शरदो दः ॥ २७९ ॥

अत्रान्त्यहलो दः स्यात् । लोपापवादः । शरत् सरदो, 'नसान्तो'
(२४२) इति पुंल्लिङ्गावः ।

दिक्-प्रावृषोः सः ॥ २८० ॥

अनयोरन्त्यस्य सः स्यात् । लोपापवादः । प्रावृद् पाउसो । रत्नसु
रअणम् ।

अदसो दो मुः ॥ २८१ ॥

अदसो दकारस्य मु इत्यादेशः स्यात् सुपि ।

हश्च सौ ॥ २८२ ॥

अदसो दस्य हः स्यात् सौ । असौ अह अमू । हादेशोऽयं ओत्व-
आत्व-विन्दून् परत्वाद् बाधते । अमी अमुए अमुणो । अमुम् अमुं
अमून् अमूओ । अमुना अमुणा । अमीभिः अमूहिं । अमुष्मात् अमूदो
अमूदु अमूहि । अमीभ्यः अमूहितो अमूसुत्तो । अमुष्य अमुस्स
अमीषाम् अमुणं । अमुष्मिन् अमुस्सि अमुम्मि अमुत्थ । अमीषु अमूसु
तपः तवो । यशः जसो । सरः सरो ।

॥ इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

रो रा ॥ २८४ ॥

स्त्रियामन्त्यस्य रेफस्य रा इत्ययमादेशः स्यात्। धूः धुरा। गीः गिरा।
चतस्रः चत्तारो चत्तारि। का काआ की।

इद्भ्यः स्सा-से ॥ २८५ ॥

इकारान्तेभ्यः किं-यत्-तद्भ्यो ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ वा
स्याताम्। कस्याः किस्सा कीसे। पक्षे कीइ कीए कीअ कीआ, 'टाङ्स०'
(१६०) इति आदेशाः। 'आदीतौ०' (१७४) इति आकारपक्षे काइ
काए। इयं इमा। युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रये सदृशं रूपम्। या जा जी। याः
जाउ जाओ जा। यस्याः जिस्सा जीसे जीइ जीए जीअ जीआ जाइ
जाए। वाक् वाआ।

न विद्युति ॥ २८६ ॥

अन्त्यस्य हल आकारो न स्यात्। विद्युत् विजू। दिक् दिसा,
'दिक्प्रावृषोः०' (२८०) इति सः। असौ दिक् अम् दिसा। अम्ः
अओ। मूशेषमूकारस्त्रीलिङ्गवत्।

॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

*

नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ॥ २८७ ॥

क्लीबे सविभक्तिकस्येदमः इदं इणं इणमो इत्यादेशाः स्युः स्वमोः
परयोः। इदम् इदं इणं इणमो। इमानि इमाइं। पुनस्तद्वत्। शेषं
पुंवत्। किम् किं। कानि काइं। पुनरपि। शेषं पुंवत्। तत् तं, '०अनपुं-
सके' (२४३) इत्युक्ते न सादेशः। तानि ताइं। एतत् एदं। यत् जं।
यानि जाइं। अदः अह अमुं। अमूनि अमूइं। 'न सान्त०' (२४२)
इति प्राप्ते-

न शिरो-नभसी ॥ २८८ ॥

एतौ पुंसि न स्याताम्। शिरः सिरं, 'अन्त्यस्य०' () इति
सोलोपः।

॥ इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

आधिकारोऽयम् ।

हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे ॥ २९० ॥

हुमित्ययं निपातसंज्ञः स्याद् दाने पृच्छायां निर्धारणे च ।

चिअ चेअ अवधारणे ॥ २९१ ॥

चिअ चेअ इत्येतौ निपातसंज्ञौ स्तः निश्चये ।

ओ सूचना-पश्चात्ताप-विकल्पेषु ॥ २९२ ॥

ओ इत्ययं निपातः सूचनायां पश्चात्तापे विकल्पे च ।

इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने ॥ २९३ ॥

त्रयो निपाताः संशयाख्याने ।

हु-क्खु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु ॥ २९४ ॥

हु क्खु इत्येतौ निपातौ निश्चये वितर्के सम्भावनायां च ।

णवरः केवले ॥ २९५ ॥

निपातः केवलेऽर्थे ।

णवरि आनन्तर्ये ॥ २९६ ॥

णवरि इति आनन्तर्ये निपातः ।

किणो प्रश्ने ॥ २९७ ॥

किणो इत्ययं पृच्छायां निपातः ।

अवो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु ॥ २९८ ॥

अवो इत्ययं निपातः दुःखे सूचनायां सम्भावनायां च ।

अलाहि निवारणे ॥ २९९ ॥

अलाहि इत्ययं निपातः निषेधे ।

अइ वले सम्भाषणे ॥ ३०० ॥

अइ वले एतौ निपातौ वचने ।

अवो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु ॥ ३०१ ॥

एतौ निपातौ दुःखे आक्षेपे विस्मापने च । अत्र 'अवो दुःख-सूच-
ना-सम्भावनेषु' 'अम्मो च दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु' इति सूत्रयितुं
कुक्कमिति केचित् । वयं तु तत्रापरसूत्रे 'दुःख' शब्दमपि त्यजामः, पूर्वसूत्रे
दुःखशब्दस्य स्वरितत्वेनानुवर्तनात्, 'स्वरितेनाधिकारः' इति पाणिनीये

परिभाषितत्वात् समस्तपदादेकदेशानुवृत्तिस्तु 'विङ्गति च' इत्यत्र 'न
धातुलोपः'—इत्यतो धातुग्रहणानुवृत्तिवत् ।

णवि वैपरीत्ये ॥ ३०२ ॥

अयं वैपरीत्ये निपातः ।

सू कुत्सायाम् ॥ ३०३ ॥

सू इत्ययं निपातो निन्दायाम् ।

रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु ॥ ३०४ ॥

रे अरे हिरे इति त्रयः क्रमेण सम्भाषणे रतिकलहे आक्षेपे च निपा
ताः । अत्र च 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' इत्युक्तत्वाद् यथासंख्यम् ।

म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे ॥ ३०५ ॥

म्मिव मिअ विअ इत्येते इवार्थे निपातसंज्ञकाः ।

अज्ज आमन्नणे ॥ ३०६ ॥

अज्ज इत्ययं निपातः आमन्नणेश्च, सम्बोधने इत्यर्थः ।

शेषः संस्कृतात् ॥ ३०७ ॥

उक्तादन्यः संस्कृतादवगन्तव्यः ।

इवे वः ॥ ३०८ ॥

इवशब्दे व्व इति निपात्यते । स इवायम् सो व्व इमो । विअ इति
वक्तव्यम्, सो विअ इमो ।

अपौ विः ॥ ३०९ ॥

अपिशब्दे विवः इति निपात्यते । सोऽपि देव इव सो विव देवो व्व ।

ओदवा-ऽपयोः ॥ ३१० ॥

अव अप इत्येतयोः ओ इत्यादेशो वा स्यात् । अवगाहः ओगाहो
अवगाहो । अपनयः ओणओ अवणओ, 'पो वः' (८५) इति वः ।

इतेस्तः पदादेः ॥ ३११ ॥

पदादेः इतिशब्दस्य यः तकारः ततः परस्य इकारस्य अ इत्यादेशः
स्यात् । इति विलपन् इअ विलअन्तो । त इति किम् ? आदेरिकारस्य मा
भव । पदादेरिति किम् ? इत्येतिरिति वक्तव्यम् (?) । प्रिय इति इस्मि

कृष्णपरो यो द्विधाशब्दः तस्य आदेः इकारस्य ओकारः स्याद् उश्च
द्विधाकृतम् दोहाइअं दुहाइअं । एवम् एअं एवं, एव एअ एव, यावदादि
त्वाद् वा वलोपः ।

तल्-त्वयोर्दा-त्तणौ ॥ ३१३ ॥

पाणिनीये भावार्थे [यौ] तल्-त्वौ विहितौ तयोः क्रमेण दा' त्तण
इत्येतावादेशौ स्याताम् । कृष्णता कृष्णदा, 'तलन्तं स्त्रियाम्' ()
इति लिङ्गानुशासनबलात् स्त्रीत्वम् । कृष्णत्वम् कृष्णत्तणं, 'त्वान्तं
स्त्रीवम्' () इति षण्डत्वम् ।

आल्विल्लोललवत्तेत्ता मतुपः ॥ ३१४ ॥

तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे विहितो मतुप् तस्य आल्ल इल्ल उल्ल आल
वत्त इत्त इति षडादेशाः स्युः । निद्रावान् णिद्दाल्ल । मालावान् मालाइल्लो
विकारवत् विआरुल्लं । धनवान् धणालो । गुणवान् गुणवत्तो । मानवान्
माणइत्तो, 'सन्धावचा०' (१) ।

विद्युत्-पीताभ्यां वा लः ॥ ३१५ ॥

आभ्यां लप्रत्ययः स्यात् । विद्युत् विज्जुली, विद्युच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्ग
त्वात् स्त्रीत्वम्, पक्षे विज्जू । पीतं पीअलं पीअं ।

॥ इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरव-
विरचिते प्राकृतानन्दे प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥



भू सत्तायाम् ।

भुवो हो-हुवौ ॥ ३१६ ॥

भूधातोः हो हुव इत्येतावादेशौ स्याताम् ।

ते-तिपोरिदेतौ ॥ ३१७ ॥

धातोः परयोः ते तिप् इत्येतयोरिदेतौ स्याताम् । यथासंख्यं नेष्यते ।

अत ए से ॥ ३१८ ॥

नियमार्थं वचनम् । त-तिपोः सिप्-थासोर्यौ ए से इत्येतावादेशौ

विहितौ तावकारान्तादेव स्याताम्, नान्यस्मात् ।

लादेशे वा ॥ ३१९ ॥

लकारादेशे परे अत एत्वं वा स्यात् । भवति = होइ हुवइ हुवए हुवेइ

हुवेए ।

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्ज्जा वा ॥ ३२० ॥

त्तमाने भविष्यदनद्यतने च विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । होज्ज होज्जा । लि-लो-लुङ्-लङे विध्यादयः ।

मध्ये च ॥ ३२१ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातु-प्रत्यययोर्मध्ये ज्ज जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम् । भवति = होज्जइ होजेइ होज्जाइ, पक्षे पूर्व-मुक्तम् ।

नानेकाचः ॥ ३२२ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः परतो मध्ये ज्ज जा इत्येतावादेशौ न स्याताम् । भवति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा । एवमग्रेऽपि पूर्वोक्तलेषु प्रथम-द्वितीय-तृतीयेषु पुरुषेषु एकवचन-द्विवचन-बहुवचनादावप्यवगन्तव्यम् ।

न्ति-हेत्था-मो-मु-मा बहुषु ॥ ३२३ ॥

तिङो बहुवचनानामेते आदेशाः स्युः । प्रथमपुरुषबहुवचनस्य न्ति, मध्यमस्य ह इत्था एतौ, उत्तमस्य मो मु म एते इति विवेकः । भवति भवन्ति = होन्ति हुवन्ति हुवेन्ति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा होज्ज होज्जा

थास्-सिपोः सि से ॥ ३२४ ॥

धातोः परयोः थास्-सिपोः सि से इत्येतावादेशौ स्याताम् ।
यथासंख्यं न । भवसि = होसि हुवसि हुवेसि हुवसे हुवेसे । भवथः भवथ-
होह होइत्था हुवह हुवेह हुवइत्था हुवेइत्था हुवित्था, 'सन्धा०' (१)
इत्यकारलोपो वा ।

इट्-मयोर्मिः ॥ ३२५ ॥

इट् मि इत्येतयोः मिः स्यात् ।

अत आ मिपि वा ॥ ३२६ ॥

अकारस्य आकारो वा स्याद् मिपि परे । भवामि = होमि हुवामि
हुवेमि हुवमि ।

इच्च बहुषु ॥ ३२७ ॥

मिपो बहुवचने परे अत इः स्याद् आ च । भवावः भवामः = होमो
होमु होम हुवामो हुविमो हुवेमो हुवमो हुवामु हुविमु हुवेमु हुवमु
हुवाम हुविम हुवेम हुवम । इति लट् । अथ लिट्-

ईअ भूते ॥ ३२८ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात् । बभूव-
हुवीअ ।

इअं भूते ॥ ३२९ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य इअं इत्यादेशः स्यात् । बभूव-
हुविअं ।

एकाचो हीअ ॥ ३३० ॥

भूते काले एकाचो धातोः परस्य प्रत्ययस्य हीअ इत्यादेशः स्यात्
बभूव = होहीअ । त्रीण्यपि रूपाणि प्रथम-मध्यमोत्तमैकवचन-द्विवचन
बहुवचनेष्ववगन्तव्यानि ।

उ सु मु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ ३३१ ॥

विध्यादेरेकवचनस्य क्रमेण उ सु मु इत्येते आदेशाः स्युः । बभूव-
होउ हुवेउ हुषउ ।

न्तु ह मो बहुषु ॥ ३३२ ॥

विध्यादेर्बहुवचनस्य क्रमेण न्तु ह मो इत्येते आदेशाः स्युः । बभूवुः
होउ हुवेउ हुषउ । बभूविथ = होस हुवेस हुवस = बभूव = होइ हुवे

हुवह, हविधानं इत्थ(त्था)बाधनार्थम् । बभूव-हांसु हुवसु हुवसु । बभू-
विम=होमो हुवेमो हुवमो । भोविधानं सु-मयोर्बाधार्थम् । इति लिट् ।
अथ लृट्-

धातोर्भविष्यति हिः ॥ ३३३ ॥

भविष्यति काले धातोः परे हिः स्यात् । भविता=होहिइ हुवेहिइ
हुवहिइ ।

एच्च क्त्वा-तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ॥ ३३४ ॥

एषु अत एत्वं स्यात्, चादिश्च । हुविहिइ हुवेहिए हुवहिए हुविहिए
होज्ज होज्जा हुवेज्ज हुवज्ज हुवज्जा होज्जहिइ होज्जेहिइ होज्जाहिइ होउ हुवेउ
हुवउ । भवितारः=होहिंति हुवेहिंति हुविहिंति हुवहिंति होन्तु हुवेन्तु
हुवन्तु । भवितासि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे होसु
हुवेसु हुवसु । भवितास्थ=होहिहा हुवेहिह हुवहिह होह हुवेह हुवह ।

उत्तमे स्सा हा च ॥ ३३५ ॥

भविष्यत्युत्तमे परे धातोः परौ स्सा हा इत्येतौ स्याताम् । चात् हिः ।

मिना स्सं वा ॥ ३३६ ॥

भविष्यति मिना सह धातोः परः स्सं वा स्यात् । भविष्यामि=
होस्सामि हुवेस्सामि हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवहामि हुवाहामि
होहिमि हुवेहिमि हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं होसु हुवेसु
हुवामु हुवमु ।

मो-मु-मैर्हि-स्सा-हित्था ॥ ३३७ ॥

भविष्यति मो-मु-मैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा स्याताम् ।
भवितास्मः=होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था
हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो
हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो
हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होमो हुवेमो हुविमो हुवामो
हुवमो । इति लृट् ।

अथ लृट् । भविष्यति=होहिइ हुवेहिइ हुवहिय हुवेहिए हुवहिए ।
भविष्यन्ति=होहिन्ति हुवेहिन्ति हुवहिन्ति । भविष्यसि=होहिसि
हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे । भविष्यथ=होहिह हुवेहिह-
हुवहिह होहित्थ हुवइत्थ हुवित्थ । भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि

हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं । भविष्यामः = होहिस्सा हुवे-
हिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था
हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो
हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो
हुवाहिमो हुवहिमो होस्सामु हुवेस्सामु हुविस्सामु हुवस्सामु होहामु
हुवेहामु हुविहामु हुवाहामु हुवहामु होहिमु हुवेहिमु हुविहिमु हुवाहिमु
हुवहिमु होस्साम हुवेस्साम हुविस्साम हुवस्साम होहाम हुवेहाम
हुविहाम हुवाहाम हुवहाम होहिम हुवेहिम हुविहिम हुवाहिम हुवहिम ।
इति लट् ।

अथ लोट् - भवतु = होउ हुवेउ हुवउ । भवन्तु = होंतु हुवेन्तु हुवन्तु ।
भव = होसु हुवेसु हुवसु । भवत = होह हुवेह हुवह । भवानि = होसु हुवेसु
हुवासु हुवसु । भवाम = होमो हुवेमो हुवामो हुविमो हुवमो । इति
लोट् । लोट्त्वद् लङ्-लिङाशीर्लिङः ।

अथ लृङ्-अभूत् = हुवीअ हुविअं होहीअ, एवं पुरुष-वचनेषु ।
लृङ् लृङ्त्वत् ।

प्रादेर्भवः ॥ ३३८ ॥

प्रादेः परस्य भ्रुवो भव इत्यादेशः स्यात् । प्रभवति = पभवइ पभवए
पभवेइ पभवेए । उद्भवति उब्भवइ । प्रतिभवइ पडिभवइ, 'प्रतिसर०'
(३३) इति तस्य डः । खाद् भक्षणे ।

खादि-धाव्योः खा-धौ ॥ ३३९ ॥

अनयोः खा धा इत्येतौ क्रमेण स्यातां वर्त्तमाने भविष्यति विध्या-
दीनामेकवचनेषु च । खादति खाइ । चखाद् खाहीअ । खादिता खाहिइ
खादिष्यति खाहिइ । खादतु खाउ । एवं लङ्-लिङाशीर्लिङः । अखादीत
खादीअं खादीअ । लृङ् लृङ्त्वत् ।

क्षियो झिज्जः ॥ ३४० ॥

'क्षि क्षये' अस्य झिज्ज इत्यादेशः स्यात् । क्षयति झिज्जइ झिज्जए
छिज्ज-भिज्जावप्येके । व्रज गतौ ।

चो व्रज-नृत्योः ॥ ३४१ ॥

अनयोरन्तस्य ञः स्यात् । व्रजति वच्चइ वच्चेइ वच्चए । व्रजिता वच्च

वेष्टेश्च ॥ ३४२ ॥

अन्तस्य ढः स्यात् । ठापवादः । वेष्टते वेढइ वेढए वेढेइ वेढेए ।
'क्थेढः' (३५८) इति पूर्वसूत्रान्तर्गतं न कृतम्, 'उत्समोर्ल्लः' (३४३)
इत्युत्तरसूत्रेऽनुवृत्त्यर्थम्, अन्यथा कथिरपि ल्लविधानेऽनुवर्त्तत ।

उत्समोर्ल्लः ॥ ३४३ ॥

एतयोः परस्य वेष्टेरन्तस्य ल्लः स्यात् । उद्वेष्टते उद्वेष्टइ । संवेष्टते
संवेष्टइ । स्फुट विकसने ।

स्फुटि-चलयोर्वा ॥ ३४४ ॥

अनयोरन्तस्य द्वित्वं वा स्यात् । स्फोटते फुटइ फुटइ, भौवादिक-
तौदादिकौ गृह्येते स्फुटि-चली इह । पट गतौ ।

पटेः फलः ॥ ३४५ ॥

स्पष्टम् । पटति फलइ । जृभि गात्रविनामे ।

जृभो जंभाअ ॥ ३४६ ॥

जृभि इत्यस्य जंभाअ इत्यादेशः स्यात् । जृम्भते = जंभाअइ जंभाएइ
जंभाअए जंभाएए । जृम्भता = जंभाअहिइ जंभाएहिइ जंभाअहिए जंभा
एहिए । जल्प व्यक्तायां वाचि ।

जल्पेर्लो मः ॥ ३४७ ॥

जल्पेर्लस्य मः स्यात् । जल्पति जंपइ । घुण भ्रमणे ।

घुणो घोलः ॥ ३४८ ॥

घुणेर्घोल इत्यादेशः स्यात् । घूर्णति घोलइ घोलए, भ्वादि तुदादि ।
मील निमेषणे ।

प्रादेर्मीलः ॥ ३४९ ॥

प्रादेः परस्य मीलो लस्य द्वित्वं वा स्यात् । प्रमीलति = पमिल्लइ पमी-
लइ पमिल्लए पमीलए पमिल्लेइ पमीलेइ पमील्लेए पमीलेए । जि जये ।

श्रु-हु-जि-ल्ल-धुवां ण्णोऽन्त्ये ह्रस्वः ॥ ३५० ॥

एषामन्त्ये ण्णः स्यात्, दीर्घस्य ह्रस्वश्च स्यात् । जयति जिण्णइ ।
जिगाय जिण्णीअ ।

धातु गति-शुद्धोः । धावति धावते धाइ । दधाव दधावे धाहीअ ।
धाविता धाहिइ । धावतु धावतां धाउ ।

काशवासः ॥ ३५१ ॥

अवात् परस्य काशेर्वास इत्यादेशः स्यात् । अवकासते ओवासइ ।
अवादिति किम् ? कासते कासइ । ग्रसु ग्लसु अदने ।

ग्रसेर्विसः ॥ ३५२ ॥

अस्य विस इत्यादेशः स्यात् । ग्रसते विसइ । गाहू विलोडने ।

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३५३ ॥

अवात् परस्य गाहेर्वाह इत्यादेशः स्यात् । अवगाहते ओवाहइ ।
अवादिति किम् ? गाहते गाहइ । वृषु मृषु सेचने ।

वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः ॥ ३५४ ॥

एषां ऋतः अरिः इत्ययमादेशः स्यात् । वर्षति वरिसइ । मर्षति
मरिसइ । कृषि विलेखने इति भौवादिकस्यैव ग्रहणम्, न तौदादिकस्य,
वृषादिसाहचर्यात् । हृषु अलीके । हर्षति हरिसइ । वृधु वृद्धौ ।

वृधेर्ढः ॥ ३५५ ॥

अन्तस्य स्यात् । वर्धते वडइ, 'ऋतोऽद्' (१२०) इत्यकारः । अित्वरा
सम्भ्रमे ।

त्वरस्तुवरः ॥ ३५६ ॥

स्पष्टम् । त्वरते तुवरइ तुवरए । चल कम्पने । चलति चल्लइ चलइ,
'स्फुटि-चल्योर्वा' (३४४) इति वा द्वित्वम् । पतल गतौ ।

शद्लृ-पत्योर्ढः ॥ ३५७ ॥

अनयोरन्तस्य ङः स्यात् । पतति पडइ । शद्लृ शातने । शीयते
सडइ । कथे निष्पाके ।

कथेर्ढः ॥ ३५८ ॥

अन्तस्य स्यात् । कथति कडइ । म्लै हर्षक्षये ।

म्लै वा-वाऔ ॥ ३५९ ॥

अस्य वा वाअ इत्येतावादेशौ स्याताम् । म्लायति वाइ वाअइ । ध्यै
चिन्तायाम् ।

ष्ठा-ध्या-गानां ठाअ-ज्ञाअ-गाआः ॥ ३६० ॥

एषामेते क्रमेण स्युः ।

ठा-ज्ञा-गाश्च वर्त्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु ॥ ३६१ ॥

एषां षा-ध्या-गानां वा वाअ वा इत्येते आदेशाः स्युः । वाअ पूर्वोक्तः ।

ध्यायति=झाअइ झाइ । दध्यो=झाइअ झाहीअ । ध्याता=झाअहिइ झाहिइ
 एवं लृट् । ध्यायतु=झाअउ झाउ । अध्यासीत्=झाइअं झाईअ । अ
 'ठाझा-गाश्चालुडि' इत्येव सूत्रयितुं युक्तम् । गै शब्दे । गायति गाअ
 गाइ, पूर्ववत् । घ्रा गन्धोपादाने ।

जिघ्रतेः पा-पाऔ ॥ ३६२ ॥

अस्य पा पाअ एतौ स्याताम् । जिघ्रति पाइ पाअइ । जघ्रौ पाहीअ
 पाईअ पाइअं । ध्मा शब्दा-ऽग्निसंयोगयोः ।

उद्धमो धूमा ॥ ३६३ ॥

उदः परस्य धमतेः धूमा इत्यादेशः स्यात् । उद्धमति उद्धूमाइ
 छा गतिनिवृत्तौ । तिष्ठति ठाअइ ठाइ, ध्यावत् । स्मृ चिन्तायाम् ।

स्मरतेर्भर-सुमरौ ॥ ३६४ ॥

अस्य भर सुमर इत्येतौ स्याताम् । स्मरति भरइ सुमरइ । स्मृ गतौ
 ऋतोऽरः ॥ ३६५ ॥

धात्वन्तऋकारस्य अरः स्यात् । सरति सरइ । श्रु श्रवणे । शृणोति
 सुण्णइ । शुश्राव सुण्णीअ सुण्णिअं ।

श्रवादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ ३६६ ॥

श्रु वचि नमि रुदि दृशि विदि इत्येतेषां प्रथम-मध्यम-उत्तमपुरुबेषु
 परेषु सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं इति क्रमेण आदेशाः स्युः,
 अनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा । श्रोता=सोच्छिहिइ सोच्छिइ सोच्छइ
 सोच्छहिइ सोच्छेहिइ सोच्छेइ सोच्छिहिए सोच्छिए सोच्छए सोच्छ-
 हिए सोच्छेहिए सोच्छेए । श्रोतारः=सोच्छिंहिति सोच्छिति सोच्छंति
 सोच्छिंहिति सोच्छेंहिति सोच्छंति । श्रोतासि=सोच्छिसि सोच्छिसि
 सोच्छेसि सोच्छेहिसि सोच्छसि सोच्छहिसि सोच्छिसे सोच्छिहिसे
 सोच्छेसे सोच्छेहिसे सोच्छसे सोच्छहिसे । श्रोतास्थ=सोच्छिहिह
 सोच्छेहिह सोच्छहिह सोच्छिह सोच्छेह सोच्छह ।

कृ-दा-श्रु-वचि-गमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं
 वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं ॥ ३६७ ॥

एषामेते क्रमेण स्युः भविष्यत्युत्तमैकवचने । श्रोतासि=सोच्छं
 सोच्छिस्सामि सोच्छेस्सामि सोच्छस्सामि सोच्छिहामि सोच्छेहामि
 सोच्छाइमि सोच्छेइमि सोच्छिमि सोच्छिमि सोच्छेमि सोच्छेमि

सोच्छाहामि सोच्छामि सोच्छहिमि सोच्छमि सोच्छेस्सं सोच्छस्सं
 श्रोतास्मः=सोच्छिहिस्सा सोच्छेहिस्सा सोच्छाहिस्सा सोच्छिहित्थ
 सोच्छेहित्था सोच्छाहित्था सोच्छहित्था सोच्छिस्सामो सोच्छेस्सामो
 सोच्छस्सामो सोच्छिहामो सोच्छेहामो सोच्छाहामो सोच्छहामो सोच्छि
 हिमो सोच्छिमो साच्छेहिमो सोच्छेमो सोच्छाहिमो सोच्छामो सोच्छ
 हिमो सोच्छमो । श्रोष्यति=सोच्छिहिइ इत्यादि । प्रथमे मध्यमस्यैक
 वचने च लुङ्वत् । बहुवचने तु श्रोष्यथ=सोच्छिहिह सोच्छिह सोच्छे
 हिह सोच्छेह सोच्छहिह सोच्छह सोच्छिहित्थ सोच्छित्थ सोच्छे
 हित्थ सोच्छेइत्थ सोच्छहित्थ सोच्छइत्थ । मिपि लुट्वत्, मवि च । मु-
 मयोस्तु यत्र मो इति तत्र मु-मौ प्रत्येकं प्रयोज्यौ । शृणोतु सुण्णउ
 शृण्वन्तु सुणंतु । शृणु सुणसु । शृणुत सुणह । शृणोमि सुणमु
 शृणमः सुणमो । दृशिर् प्रेक्षणे । इइ इत् ।

दृशेः पुलअ-णिअक्-अवक्खाः ॥ ३६८ ॥

त्र्यक्षरा आदेशाः स्युः । पश्यति पुलअइ णिअक्इ अवक्खइ । दद्रष्ट
 पुलईअ णिअक्(की?)अ अवक्खीअ । द्रष्टा दच्छिहिइ इत्यादि वोच्छवत्
 कृषि विलेखने । कर्षति करिसइ । गम्लु गतौ गच्छति गमइ । गन्तासि
 गच्छं इत्यादि । इति भ्वादिः ।

अद भक्षणे ।

शेषाणामदन्तता ॥ ३६९ ॥

लुप्तानुबन्धानां शेषाणामकारान्तत्वं स्यात् । अत्ति अअइ । हन्
 हिंसा-गत्योः ।

हन्तेर्ममः ॥ ३७० ॥

हन्तेर्नस्य ममः स्यात् । हन्ति हम्मइ । वच परिभाषणे । वक्ति व
 अइ । वक्ष्यामि वोच्छं इत्यादि सोच्छवत् । विद ज्ञाने । वेत्ति वे
 वेअइ । वेत्स्यामि वेच्छं । अस भुवि । अस्ति अत्थि । सन्ति असन्ति ।

असेर्लोपः ॥ ३७१ ॥

असो लोपः स्यात् थास्-सिपोः परयोः । असि सि । थासोऽनुवृत्ति
 भाव-कर्मणोः सफला । स्थ त्थ ।

मि-मो-मु-मानामधो हश्च ॥ ३७२ ॥

अन्तेः परेषां मि-मो-स-मानामधो इः स्यात् अन्तेश्च लोपः । असि

भूते निपातः । बभूव आसि । मृजूष शुद्धौ ।

मृजेर्लुभ-पुसौ ॥ ३७४ ॥

द्वक्षरौ स्याताम् । मार्षिं लुभइ पुसइ 'सुप' इति पाठे सुपइ ।
रुदिर् अश्रुविमोचने ।

रुदेर्वः ॥ ३७५ ॥

रुदेर्दस्य वः स्यात् । रोदिति रुवइ । रुदिष्यामि रुच्छं, वोच्छवत् ।
इत्यदादयः ।

हु दानादनयोः । जुहोति हुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति ण्णः ।
जिभी भये ।

भियो भा-बीहौ ॥ ३७६ ॥

भा बीह इत्येतावादेशौ स्याताम् । बिभेति भाइ बीहइ । पृ पालन
पूरणयोः । पिपर्त्ति परइ । डुभृञ् धारण-पोषणयोः । बिभर्त्ति भरइ
माइ माने ।

निरो माडो माणः ॥ ३७७ ॥

निरः परस्य माडो माण इत्यादेशः स्यात् । निर्मिमीते निम्माणइ
निरः किम् ? मिमीते माइ । डुदाञ् दाने । ददाति दाइ । दातास्मि दाहं
डुधाञ् धारण-पोषणयोः ।

श्रदो धो दहः ॥ ३७८ ॥

श्रदः परस्य धो दह इत्यादेशः स्यात् । श्रदधाति सदहइ । श्रद
इति किम् ? धाइ । विजिर् पृथग्भावे ।

उदो विजः ॥ ३७९ ॥

उदः परस्य विजेर्जस्य वः स्यात् । उद्वेविक्ते उद्वेवेक्ति उद्विक्त्वइ
ऋ सृ गतौ । इयर्त्ति अरइ । ससर्त्ति सरइ । इति ह्यादयः ।

दिवु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहारद्युति-स्मृति-मोद-मद-स्वप्न-क्रान्ति
गतिषु । दीव्यति दिवइ । नृती गात्रविनामे । नृत्यति णञ्चइ । त्रसि उद्वेगे

त्रसेर्वज्जः ॥ ३८० ॥

स्पष्टम् । त्रस्यति वज्जइ । व्रीड चोदने लज्जायां च । व्रीड्यति वीलइ
बूइ प्राणिप्रसवे । सूयते सूइ । दूइ परितापे ।

स्पष्टम् । दूयते = दूमइ दूमए दूमेइ दूमेए । शो तनूकरणे । श्यति सोइ । दो अवखण्डने । द्यति दोइ । जनी प्रादुर्भावे । जायते जणइ । पद गतौ ।

पदः पालः ॥ ३८२ ॥

आदेशः स्यात् । पद्यते पालइ । बुध अवगमने ।

युधि-बुध्योर्ज्ञः ॥ ३८३ ॥

एतयोर्धस्य झः स्यात् । बुध्यते बुज्झइ । युध सम्प्रहारे । युध्यते जुज्झइ । सृज विसर्गे । सृज्यते सज्जइ । शुष शोषणे ।

रुषादीनां दीर्घः ॥ ३८४ ॥

रुषादीनां दीर्घः स्यात् । शुष्यति सूसइ । तुष प्रीतौ । तुष्यति तूसइ । दुष वैकृत्ये । दुष्यति दूसइ । कुध कोपे ।

क्रुधेर्झरः ॥ ३८५ ॥

स्पष्टम् । क्रुध्यति झूरइ । रुष रोषे । रुष्यति रूसइ । गृधु अभि-
काङ्क्षायाम् । गृध्यति गधइ । इति दिवादयः ।

षुञ् अभिषवे । सुनोति सुअइ । चिञ् चयने ।

चिञश्चिणः ॥ ३८६ ॥

चिञः चिण इत्यादेशः स्यात् । चिनोति चिणइ । शक् शक्तौ ।

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ३८७ ॥

शकादीनां द्वित्वं वा स्यात् । शक्नोति सकइ । पक्षे-

शकेस्तर-चअ-तीराः ॥ ३८८ ॥

अस्य झक्षरास्त्रय आदेशाः स्युः । शक्नोति तरइ चअइ तीरइ ।
अशू व्याप्तौ सङ्घाते च । अश्रुते असइ । जिघृषा प्रागल्भ्ये । घृष्णोति
धसइ । इति स्वादयः ।

तुद व्यथने । तुदति तुअइ । णुद प्रेरणे ।

णुदेलोणः ॥ ३८९ ॥

णुदेलोण इत्यादेशः स्यात् । नुदति लोणइ । 'णोल्ल' इति पाठे
णोल्लइ । कृष विलेखने । कृषति कसइ, 'वृष-कृष-०' (३५४) इति अरिस्तु
न, वृषसाहचर्याद् भौवादिकस्यैव ग्रहणात् । ओविजी भये । उद्विजति
उद्विवइ, 'उदो विजः' (३७९) इति वः । डुमस्जौ शुद्धौ ।

बुड-खुप्पौ मस्जेः ॥ ३९० ॥

[मस्जेः बुड खुप्प इत्येतावादेशौ स्याताम् ।] मज्जति बुडइ खुप्पइ ।
तृप तृप्तौ ।

तृपस्थिम्पः ॥ ३९१ ॥

तृपेः थिम्प इत्यादेशः स्यात् । तृपति थिम्पइ । घुण भ्रमणे । घूर्णति
घोलइ । पृङ् व्यायामे । प्रियते परइ । मृङ् प्राणत्यागे । म्रियते मरइ ।
सृज विसर्गे । सृजति सअइ । कृती छेदने । कृन्तति कतइ । खिद परि-
घाते । खिंदति विसूरइ । पिश अवयवे । पिशति पिसइ । इति तुदादयः ।
रुधिर आवरणे ।

रुधेर्न्ध-म्मौ ॥ ३९२ ॥

रुधेः धस्य न्ध म्म इत्येतावादेशौ स्याताम् । रुणद्धि रुन्धइ रुम्मइ ।
भिदिर् विदारणे ।

भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः ॥ ३९३ ॥

अनयोः दस्य न्दः स्यात् । भिनत्ति भिंदइ । छिदिर् द्वैधीकरणे ।
छिनत्ति छिंदइ । खिद दैन्ये । खिनत्ति विसूरइ । ओविजी भय-चलनयोः ।
विनत्ति विअइ । उद्विनत्ति उद्विअइ । इति रुधादयः ।

तनु विस्तारे । तनोति तण्णइ । षणु दाने । सनोति सण्णइ । क्षणु
हिंसायाम् । क्षणोति खण्णइ । क्षिणु च-क्षिणोति खिण्णइ । ऋणु गतौ ।
ऋणोति अण्णइ । तृणु अदने । तृणोति तण्णइ । घृणु दीप्तौ । घृणोति
घण्णइ । वनु याचने । वनोति वण्णइ । मनु अवबोधने । मनोति मण्णइ ।
डुकृञ् करणे ।

कृजः कुणो वा ॥ ३९४ ॥

कृजः कुण इत्यादेशो वा स्यात् । करोति कुणइ करइ ।

कृजः का भूत-भविष्यतोश्च ॥ ३९५ ॥

एतयोरर्थयोः क्वा-तुमुन्-तव्येषु च कृजः का इत्यादेशः स्यात् ।
चकार काहीअ कम्मं (?) [करिष्यति ?] काहिइ । कर्तास्मि काहं, दावत् ।
इति तनादयः ।

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये ।

वः क्व च ॥ ३९७ ॥

वेः परस्य क्रीणातेः क्के इत्यादेशः स्यात् । चात् किणः । विक्रीणाति
विकेइ विक्रिणइ । लूञ् छेदने । लुनाति लुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०)
इति अन्यस्य णः पूर्वस्य ह्रस्वश्च । कृञ् हिंसायाम् । कृणाति करइ । धूञ्
कम्पने । धुनाति धुण्णइ । शृ हिंसायाम् । शृणाति सरइ । पृ पालन-पूर-
णयोः । पृणाति परइ । मृ हिंसायाम् । मृणाति मरइ । ज्ञा अबबोधने ।

ज्ञो जाण-मुणौ ॥ ३९८ ॥

द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । जानाति जाणइ मुणइ । बध बन्धने ।
बध्नाति बंधइ । वृङ् सम्भक्तौ । वृणीते वरइ । मृद क्षोदे ।

मृदो लः ॥ ३९९ ॥

मृद्रातेः दस्य लः स्यात् । मृद्राति मलइ । अश भोजने । अश्नाति
असइ । पुष पुष्टौ । पुष्णाति पूसइ । ग्रह उपादाने ।

ग्रहेर्गेण्हः ॥ ४०० ॥

स्पष्टम् । गृह्णाति गेण्हइ । इति ऋयादयः ।
चुर स्तेये ।

णिच एदादेरत आत् ॥ ४०१ ॥

णिच एत् स्यात्, धातोरकारस्य आत् स्यात् ।

आवे च ॥ ४०२ ॥

णिचोऽयमपि आदेशः स्यात् । चोरयति चुरेइ चुरावेइ । चिति
स्मृत्याम् । चिन्तयति चिंतेइ चिंतावेइ । लक्ष दर्शना-ऽङ्कनयोः । लक्षयति
लाखेइ लखावेइ । भक्ष अदने । भक्षयति भाखेइ भखावेइ । गज शब्दे ।
गाजयति गाजेइ गजावेइ । शठ श्लाघायाम् । शाठयति साठेइ सठावेइ ।
इति चुरादयः ।

भू-हेतुमद् णिच् । भावयति होएइ होआवेइ हुवेइ हुवावेइ । पट-
पाटयति फालेइ फलावेइ । जल्पयति जंपेइ जंपावेइ । प्रमीलयति पमि-
ल्लेइ पमिल्लावेइ । अवकाशयति ओवासेइ ओवासावेइ । ग्रासयति विसेइ
विसावेइ । अवगाहयति ओगाहेइ ओगाहावेइ । रोषयति रूसेइ रूसा-
वेइ । वर्षयति वरिसेइ वरिसावेइ । वर्धयति वड्हेइ वड्हावेइ । त्वरयति
तुवरेइ तुवरावेइ । चलयति चल्लेइ चालेइ चल्लावेइ चलावेइ । स्मारयति

भारेइ भरावेइ सुमरेइ सुमरावेइ । सारयति सारेइ सरावेइ । आवयति
सुण्णेइ सुण्णावेइ । गमयति गामेइ गमावेइ । रोदयति रुवेइ रुवावेइ ।
पारयति पारेइ पारावेइ । नर्त्तयति णच्चेइ णच्चावेइ । त्रासयति वज्जेइ
वज्जावेइ । व्रीडयति वीलेइ वीलावेइ । शुष्यति सूसेइ सूसावेइ । कुध्यति
झूरेइ झूरावेइ । चिनोति चिण्णेइ चिण्णावेइ । शक्नोति सक्केइ सक्कावेइ,
तारेइ तरावेइ, चाएइ चआवेइ, तीरेइ तीरावेइ । घूर्णयति घोलेइ घोला-
वेइ । रुन्धयति रुंधेइ रुंधावेइ, रुम्भेइ रुम्भावेइ । कारयति कारेइ करावेइ,
कुणेइ कुणावेइ । काययति किणेइ किणावेइ । इति हेतुमणिचप्रकरणम् ।

यक ईअ-इज्जौ ॥ ४०३ ॥

यको द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम् । भूयते होईअइ होइज्जइ हुवीअइ
हुविज्जइ ।

भाव-कर्मणोर्वश्च ॥ ४०४ ॥

श्रु हु जि लू धू एषामन्ते वः स्यात्, णश्च भाव-कर्मणोः । जीयते
जिध्वइ जिण्णीअइ जिणिज्जइ ।

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ४०५ ॥

एषां द्वित्वं वा स्याद् भाव-कर्मणोः । हस्यते हस्सइ हसीअइ
हसिज्जइ । रम्यते रम्मइ रमीअइ रमिज्जइ ।

ह-क्रोर्हीर-कीरौ ॥ ४०६ ॥

हज्ज-कृज्जोः क्रमाद् हीर कीर इत्येतौ स्यातां भाव-कर्मणोः । हियते
हीरइ । श्रूयते सुवइ सुण्णीअइ सुणिज्जइ । गम्यते गम्मइ गमीअइ
गमिज्जइ ।

दुहिं-लिहिं-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भाः ॥ ४०७ ॥

एषां क्रमेण द्व्यक्षरा आदेशाः स्युः भाव-कर्मणोः । उह्यते वब्भइ ।
दुह्यते दुब्भइ । लिह्यते लिब्भइ । ह्रयते हुवइ हुण्णीअइ हुणिज्जइ ।
क्रियते कीरइ । लूयते लुवइ लुण्णीअइ लुणिज्जइ । धूयते धुवइ
धुण्णीअइ धुणिज्जइ ।

ज्ञो णज्ज-णवौ वा ॥ ४०८ ॥

ज्ञाधातोः द्व्यक्षरावादेशौ वा स्यातां भाव-कर्मणोः । ज्ञायते णज्जइ
णवइ । पक्षे जाणीअइ जाणिज्जइ, मुणीअइ मुणिज्जइ ॥

ग्रहे दीर्घा वा ॥ ४०९ ॥

स्पष्टम् । गृह्यते गाहिज्जइ । पक्षे गेण्हिज्जइ ।

॥ इति भावकर्मप्रकरणम् ॥ इति तिङन्तम् ॥

क्ते हुः ॥ ४१० ॥

भुवो हुरादेशः स्यात् क्ते । भूतं हुआं ।

क्ते तुरः ॥ ४११ ॥

त्वरतेः तुर इत्यादेशः स्यात् क्ते ।

क्ते ॥ ४१२ ॥

धातोरन्त्याकारस्य इः स्यात् क्ते । त्वरितं तुरिअं । पदितं फलिअं ।

क्तेन दिण्णादयः ॥ ४१३ ॥

दिण्ण इत्यादयः शब्दाः क्तेन सह निपात्यन्ते । दाञ् दत्तं दिण्णं । रुदिर् रुदितं रुण्णं । त्रसी त्रस्तं हित्थं । दह भस्मीकरणे दग्धं डहं । रञ्ज रक्तं रत्तं । दंश दष्टं डहं । रुधिर् रुद्धं रुहं इत्यादयः ।

भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः ॥ ११४ ॥

एषामन्तस्य लोपो वा स्यात् ।

क्त्व ऊणः ॥ ४१५ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य ऊण इत्यादेशः स्यात् । भुक्त्वा भोऊण । भोक्तुम् भोउं । भोक्तव्यम् भोअवं । विदित्वा वेऊण । वेत्तुम् वेउं । वेत्तव्यम् वेअवं । एवं रुदिर् ।

घे क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु ॥ ४१६ ॥

ग्रहेः घे इत्यादेशः स्याद् एषु परेषु । गृहीत्वा घेऊण । ग्रहीतुम् घेउं । ग्रहीतव्यम् घेअवं । कृत्वा काऊण । कर्त्तुम् काउं । कर्त्तव्यम् काअवं ।

तृन इरः शीले ॥ ४१७ ॥

शीलार्थे तृन इर इत्यादेशः स्यात् । गन्तुम् । शीले । शीलार्थे ।

शतृ शानच् इत्येतयोः क्रमेण न्त माण इत्येतावादेशौ स्याताम्
भवन् हुवंतो । यजमानः जअमाणो ।

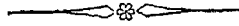
ईत् स्त्रियाम् ॥ ४१९ ॥

शतृ-शानचोः ईदादेशः स्याद् न्त-माणौ च । वदन्ती वदई । यज
माना जअमाणी । पक्षे वदंती जअमाणा ।

इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरवविरचिते
प्राकृतानन्दे द्वितीयः परिच्छेदः ।

*

॥ समाप्तः प्राकृतानन्दः ॥



[॥ संवत् १७२६ अश्विन सुदि १२ रविदिने लिखितं लाभपुरनगर
रमध्ये शुभं भवतु । ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥]

✽

परिशिष्टम्

प्राकृतशब्दानुक्रमणिका

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	अ		अट्टि	अत्थि	२१७
	अत्ति	३६६	अण्डुओ	अनड्वान्	२१७
	असूः	२८६	अत्थि	अस्ति	३७०
अओ, अगवो	अग्नयः	१४०	अत्तो	आप्तः	३७
अणा	अग्निना	१४१	अत्तो	आत्तः	११६
अणो	अग्नीन्	१४० A	अढ्ढा, अढ्ढाणो	अध्वा	२४१
अग्मि	अग्नौ	१४४	अप्पजू	आत्मयुक्	२४२
अग	अग्नि	१४०	अप्पणा	आत्मना	२४०
अगी	अग्निः	१३८	अप्पणो	आत्मनः	२४०
अगी	अग्नयः	१४०	अप्पणः	आत्मनः	२४०
अगीओ	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पा	आत्मनः	२४०
अगीणो	अग्नेः	१४४	अप्पा	आत्मा	२४०
(अग्निस्स)	अग्नयः	१३६, १४०	अप्पाडु, अप्पादो	आत्मनः	२४०
अगीणो	अग्नेः	१४२	अप्पाणो	आत्मनः	२३६
अगीडु, अग्गीडो	अग्नयः	१४०	अप्पाणं	आत्मनां	२४०
अगीवो	अग्नेः	१४२	अप्पाहि	आत्मनः	२४०
अगीहि	अग्नेः	१४२	अप्पेहि	आत्मभिः	२४०
अगीणं	अग्नीनाम्	१४४	अप्पं	आत्मानं	२४०
अगीसु	अग्नीषु	१४४	अप्पम्मि	आत्मनि	२४०
अगीसुत्तो,			अप्पासुत्तो,		
अग्गीहितो	अग्निभ्यः	१४३	अप्पाहितो	आत्मभ्यः	२४०
अङ्गुली	अङ्गुरी	१७६	अप्पे	आत्मनि	२४०
अङ्गु	अक्षि	२१७	अप्पेसु	आत्मसु	२४०
अङ्गी	अक्षि	१८१	अम्हे	वयम्	२६७
अङ्गेरं	अङ्गवर्थं	१६६	अम्हे	अस्मान्	२६६
अङ्गु	अङ्गोति	३६३	अम्हे	अस्माकम्	२७६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
अम्हेसुत्तो	अस्मत्	२७४	अस्सि	अस्मिन्	२२
अम्हेह	अस्माभिः	२७२	अह	असौ	२८
अम्हेहितो	अस्मत्	२७४	अह	अदः	२८
अम्हं	अस्माकम्	२७६	अहअं	अहम्	२६
अम्हाणं	अस्माकम्	२७६	अहम्मि	अहम्	२६
अम्सुए	अमी	२८२	अहम्मि	साम्	२६
अम्सुथ	अमुष्मिन्	२८२	अहिआई	अभिजातिः	१७
अम्मुणां	अम्ना	२८२	अहिमज्जु	अभिमन्युः	१५
अम्मुणो	अमो	२८२	अहं	अहम्	२६
अम्मुणं	अमीषाम्	२८२	अहं	अहम्	२६
अम्मुम्मि	अमुष्मिन्	२८२			
अम्सस	अमुष्य	२८२	आ		
अम्सुस्सि	अमुष्मिन्	२८२	आअदो	आगतः	६
अम्सुं	अमुम्	२८२	आइदो	आकृतिः	१७
अम्सुं	अदः	२८७	आउदो	आकृतिः	१७
अम्सुं	असौ	२८२	आणा	आज्ञा	१७
अम्सुइं	अम्सुनि	२८७	आणालं	आलानं	२१
अम्सुओ	अम्सुन्	२८२	आमेलो	आपीडः	५
अम्सुदिसा	असौ दिक्	२८६	आवत्तो	आवर्त्तिः	११
अम्सुदु	अमुष्मात्	२८२	आसि	बभूव	३७
अम्सुदो	अमुष्मात्	२८२	आसो, अस्सो	अद्वः	४
अम्सुसु	अमीषु	२८२	अ हिआई.		
अम्सुसुत्तो	अमीभ्यः	२८२	अहिआई	अभिजातिः	१७
अम्सुहि	अमुष्मात्	२८२			
अम्सुहि	अमीभिः	२८२	इ		
अम्सुहितो	अमीभ्यः	२८२	इचिल्लओ	ईप्सितः	१२
अरइ	इर्यत्ति	३७६	इणमो	इदम्	२८
अवक्खइ	पश्यति	३६८	इणं	इदम्	२८
अवक्खीअ	दद्वष्ट	३६८	इदं	इदम्	२८
अवगाहो	अवगाहः	३१०	इमम्मि	इह	२२
अवणओ	अपनयः	३१०	इमस्स	अस्य	२२
असइ	अश्नुते	३८८	इमस्सि	अस्मिन्	२२
असइ	अश्नाति	३६६	इमा	इमान्	२२
असन्ति	सन्ति	३७०	इमा	इयं	२८

तशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णं	एषां	२२७
हु	अस्मात्	२२६
यो	अस्मात्	२२६
पुत्तो	एभ्यः	२२६
ह	अस्मात्	२२६
हेतो	एभ्यः	२२६
णा	अनेन	२२६
	इमे	२२६
	अनेन	२२६
	एषां	२२७
	एषु	२२६
	एभिः	२२६
	अथं	२२६
	इमं	२२६
	ऋषिः	१४४
लो	अङ्गारः	६०
	इन्द्रः	१०४
	इन्द्रः	१०४
	उ	
रो	उत्करः	४१
शा	उक्षा	१६६
छत्तो	उत्क्षिप्त	११८
	इक्षुः	१५०
माइ	उद्धमति	३६३
	ऋतुः	१५०
लं	उद्वखलम्	१८७
ओ	उत्पीतः	३७
वइ	उद्भवति	३३८
णश्रा	उपानत्	२८३
ववइ	उद्वेक्षते,	
	उद्वेक्षित	३७६
	उद्विजति	३८६
	उद्विनक्ति	३६३
लइ	उद्वेष्टते	३४३
यो	उत्सवः	१२६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
उसुओ	उत्सुकः	१२६
उहे	उभौ	१३६
उंबरं	उडुम्बरम्	२०६
	ए	
एश्र	एव	३१२
एश्रारहो	एकादशः	१०१
एश्रं	एवम्	३१२
एण्ह	इदानीं	२१५
एत्तो	एतस्मात्	२४६
एत्थ	एतस्मिन्	२४६
एतस्मि	एतस्मिन्	२४६
एतस्सि	एतस्मिन्	२४६
एता	एतान्	२४७
एते	एते	२४७
एतं	एतं	२४७
एदाडु	एतस्मात्	२४६
एदादो	एतस्मात्	२४६
एदाहि	एतस्मात्	२३६
एदिणा	एतेन	२४७
एदेण	एतेन	२४७
एदेहि	एतैः	२४७
एद	एतत्	२८७
एरावणो	ऐरावतः	८२
एरिसो	ईदृशः	५४
एव	एव	३१२
एवं	एवम्	३१२
एस	एषः	२४७
एसो	एषः	२४७
	ओ	
ओखलं	उद्वखलम्	१८७
ओगाहावेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहेइ	अवगाहयति	४०२
ओगाहो	अवगाहः	३१०
ओणओ	अपनयः	३१०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
श्रोवासइ	श्रवकासते	३५१
श्रोवासावेइ	श्रवकाशयति	४०२
श्रोवासेइ	श्रवकाशयति	४०२
श्रोवाहइ	श्रवगाहते	३५३
श्रोहलं	उलूहलम्	१८७A
श्रंकोल्लं	श्रंकोठं	२००
श्रंवं	श्राश्रं	२०८
श्रंसू	श्रश्रु	२१७
	क	
कइश्रवो	कतवः	७१
कइश्रा	कदा	२२५
कउरवो	कौरवः	७४
कउसलो	कौशलः	७५
कच्छा	कक्षा	१६६
कज्जो	कार्यः	११२
कठइ	कवथति	३५८
कढोरं	कठोरं	१६६
कण्हो	कृष्णः १०, १२०, १३३	
कण्हं	कृष्णम्	२
कण्हत्तणं	कृष्णस्वम्	३१३
कण्हदा	कृष्णता	३१३
कतइ	कृत्तति	३६१
कत्तरी	कर्त्तरी	१८०
कत्तो	कस्मात्	२२१
कत्थ	कदा	२२५
कदो	कस्मात्	२२१
कम्भं (?)	करिष्यति (?)	३६५
कम्मि	कदा	२२५
कम्मो	कर्म	२४२
कमंथो	कबन्धः	८७
करइ	करोति	३६४
करइ	कृणाति	३६७
करावेइ	कारयति	४०२
करिसइ	कर्षति	३६८

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
कस्स	कस्य	२२
कस्सि	कस्मिन्	२२
कस्सि	कदा	२२
कसइ	कृषति	३८
कलुणं	करुणं	२०
कलंबो	कदम्बः	८
कहावणो	कार्षापणः	१२
कहिं	कस्मिन्	२२
कहिं	कदा	२२
का	कस्मात्	२२
काश्रब्बं	कर्त्तव्यम्	४१
काश्रा	का	२८
काइ	का	२८
काइं	कानि	२८
काउं	कर्त्तुम्	४१
काऊण	कृत्वा	४१
काए	का	२८
काडु	कस्मात्	२२
काणं	केषां	२२
कारेइ	कारयति	४०
कालाश्रसं	कालायसं	२१
कालासं	कालायसं	२१
कास	कस्य	२२
कासइ	कासते	३५
कासुत्तो	केभ्यः	२२
काहि	कस्मात्	२२
काहितो	केभ्यः	२२
काहीश्र	करिष्यति (?)	३६
काहे	कदा	२२
काहं	कर्त्तस्मि	३६
किच्च	कृत्या	१६
कित्ती	कीर्त्तिः	१७
किणइ	क्रीणाति	३६
किणावेइ	क्राययति	४०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

किरिआ	क्रिया	१७१
किलिट्टं	क्लिष्टं	२०८
किलित्तं	क्लृप्तं	१६१
किवा	कृपा	१६५
किसणो	कृष्णः (भगवति)	१३३
किसरा	कृशरा	१६५
किस्सा	कस्याः	२८५
किं	किम्	२८७
की	का	१७४, २८४
कीअ	कस्याः	२८५
कीआ	कस्याः	२८५
कीई	कस्याः	२८५
कीए	कस्याः	२८५
कीरइ	क्रियते	४०७
कीसे	कस्याः	२८५
कुक्खेअओ	कौक्षेयकः	७६
कुच्छी	कुक्षिः	१७६
कुणइ	करोति	३६४
कुणावेइ	कारयति	४०२
कुणेइ	कारयति	४०२
के	के	२१६
केढवो	कैटभः	६०
केरिसो	कीदृशः	५४
केलासो	कैलासः	६६
केवट्टो	कैवर्त्तः	११५
केसि	केषां	२२३
केसु	केषु	२२५
को	कः	२१६
कोत्थुहो	कौस्तुभः	१०८
कोसलो	कौशलः	७५
कंबोट्टो	कमलं	२१५
	ख	
खगो	खङ्ग.	३७
खण्णद	खण्णोति	३६३

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

खमा	क्षमा	१६६
खमा	क्षमा	१७२
खहिइ	खादिता	३३६
खाइ	खादति	३३६
खाउ	खादतु	३३६
खाणू	स्थाणुः	१५१
खादीअ	अखादीत्	३३६
खादीअं	अखादीत्	३३६
खाहिइ	खादिष्यति	३३६
खाहीअ	अखाद	३३६
खिण्णइ	क्षिणोति	३६३
खुज्जो	कुब्जः	६३
खुप्पइ	मज्जति	३६०
खोडओ	स्फोटकः	१११
खंभो	स्तम्भः	११०
	ग	
गउरवं	गौरवं	१६७
गगरो	गद्गवः	८४
गच्छं	गन्तास्मि	३६८
गजावेइ	गाजयति	४०२
गड्डो	गर्त्तः	११७
गधइ	गृध्यति	३८५
गडिभणो	गर्भितः	८०
गडिभणं	गर्भितं	१६७
गम्मइ	गम्यते	४०६
गमइ	गच्छति	३६८
गमावेइ	गमयति	४०२
गमिज्जइ	गम्यते	४०६
गमिरो	गन्ता	४१७
गमोअइ	गम्यते	४०६
गरुअं	गुरु	२१७
गरुई	गुर्धि	१७६
गहवई	गृहपतिः	१४५, २१२
गगणद	गगणति	३६९

गामेइ	गमयति	४०२
गारवं	गौरवं	१६७
गाहइ	गाहते	३५३
गाहिज्जइ	गृह्यते	४०६
गिट्ठी	गृष्टिः	१७५
गिरा	गीः	२८४
गुणवत्तो	गुणवान्	३१४
गेणहइ	गृह्णाति	४००
गेण्हज्जइ	गृह्यते	४०६
गोरवं	गौरवं	१६७
गोला	गोदावरी	२१५

घ

घणइ	घृणोति	३६३
घणा	घृणा	१६५
घरं	गृहं	२१२
घेअघं	ग्रहीतध्यम्	४१६
घेऊण	गृहीत्वा	४१६
घेउं	ग्रहीतुम्	४१६
घोलइ	घूर्णति	३४८, ३६१
घोलए	घूर्णति	३४८
घोलेइ	घूर्णयति	४०२
घोलावेइ	घूर्णयति	४०२

च

चअइ	शक्नोति	३८८
चआवेइ	शक्नोति	४०२
चइत्तो	चेत्रः	७१२
चउत्थी	चतुर्थी	१७८
चउह्ही	चतुर्दशी	१७८
चउण्हं	चतुर्णां	२१८
चऊसु	चतुर्षु	२१८
चउसुत्तो	चतुर्भ्यः	२१८
चऊर्हि	चतुर्भिः	२१८
चउहितो	चतुर्भ्यः	२१८

चत्तारि	चतस्रः
चत्तारो	चत्वारः
चत्तारो	चतुरः
चत्तारो	चतस्रः
चन्दिमा	चन्द्रिका
चम्मो	चर्म
चलभइ	चलति
चलइ	चलति
चलणो	चरणः
चल्लावेइ	चलयति
चलावेइ	चलयति
चल्लेइ	चलयति
चाउलिअं	चातुर्यं
चाएइ	शक्नोति
चालेइ	चलयति
चिणइ	चिनोति
चिण्णावेइ	चिनोति
चिण्णेइ	चिनोति
चितावेइ	चिन्तयति
चित्तेइ	चिन्त्यति
चिन्धं	चिह्नं
चिलादो	किरातः
चिहुरो	चिकुरः
चुरावेइ	चोरयति
चुरेइ	चोरयति
चोत्थी	चतुर्थी
चोह्ही	चतुर्दशी
चोरिअं	चौर्यं
	छ
छत्तवणो	सप्तपर्णः
छट्ठी	षष्ठी
छणो	क्षणः
छमा	क्षमा

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
छम्मुहो	षण्मुखः	६६
छायागामो	छायाग्रामः	१३१
छवग्रो	शावकः	६६
छाहा	छाया	१६८, १७४
छाहागामो	छायाग्रामः	१३१
छाही	छाया	१७४
छिदइ	छिनत्ति	३६३
छीरं	क्षीरं	२०४
छुद्धो	क्षुब्धः	११८
छुणा	क्षुणा	१६६
	ज	
जअमाणा	यजमाना	४१६
जअमाणी	यजमाना	४१६
जअमाणो	यजमानः	४१८
जउण	यमुना	१६६
जडरं	जठरं	१६६
जणो	यज्ञः	१२७
जण्ह	जह्नुः	१५०
जणइ	जायते	३८१
जम्मो	जन्म	२४२
जसो	यशः	२८२
जहिड्डिलो	युधिष्ठिरः	६०
जा	या	२८५
जा	या	२८५
जाउ	याः	२८५
जाइ	यस्याः	२८५
जाइं	यानि	२८७
जाए	यस्याः	२८५
जाओ	याः	२८५
जाणइ	जानाति	३६८
जाणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
जाणीअइ	ज्ञायते	४०८
जामाआ	जामाता	१५५
जामाआरो	जामातारः	१५५
जिणइ	जयति	३५०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
जिणिज्जइ	जीयते	४०४
जिणीअ	जिगाय	३५०
जिणीअइ	जीयते	४०४
जिअवर	जीयते	४०४
जिस्ता	यस्याः	२८५
जो	जा	१७५
जो	या	२८५
जोअ	यस्याः	२८५
जोआ	ज्या	१७३
जोआ	यस्याः	२८५
जोइ	यस्याः	२८५
जोए	यस्याः	२८५
जोसे	यस्याः	२८५
जोहा	जिह्वा	१६५
जुउच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुगुच्छा	जुगुप्सा	१६६
जुज्जइ	युध्यते	३८३
जुवा, जुवाणो	युवा	२४१
जो	यः	२४६
जोगो	योग्यः	४०
जोवणं	यौवनम्	१६६
जं	यत्	२८७
जंपइ	जल्पति	३४७
जंपावेइ	जल्पयति	४०२
जंपेइ	जल्पयति	४०२
जंभाअइ	जृम्भते	३४६
जंभाअहिइ	जृम्भता	३४६
जंभाअहिए	जृम्भता	३४६
जंभाअए	जृम्भते	३४६
जंभाएइ	जृम्भते	३४६
जंभाएए	जृम्भते	३४६
जंभाएहिए	जृम्भता	३४६
जंभाएहिइ	जृम्भता	३४६
	भ	
भाअउ	ध्यायतु	३६१
भाअइ	ध्यायति	३६१

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
भाश्रहिइ	ध्याता	३६१	णाराश्रणा	नारायणात्
भाइ	ध्यायति	३६१	णाराश्रणाडु	नारायणात्
भाइश्रं	दध्यौ	३६१	णाराश्रणादो	नारायणात्
भाइश्रं	श्रध्यासीत्	३६१	णाराश्रणाणं	नारायणेभ्यः
भाइश्रं	श्रध्यासीत्	३६१	णाराश्रणाणं	नारायणाणां
भाउ	ध्यायतु	३६१	णाराश्रणासुत्तो	नारायणेभ्यः
भाहीश्र	दध्यौ	३६१	णाराश्रणाहि	नारायणात्
भाहिइ	ध्याता	३६१	णाराश्रणाहिंत्तो	नागायणेभ्यः
भिज्जइ	क्षयति	३४०	णाराश्रणे	नारायणान्
भिज्जए	क्षयति	३४०	णाराश्रणे	नारायणौ
भूरावेइ	क्रुध्यति	४०२	णारायणे	नारायणे
भूरइ	क्रुध्यति	३८५	णाराश्रणेण	नारायणेन
भूरेइ	क्रुध्यति	४०२	णाराश्रणेसु	नारायणेषु
	ठ		णाराश्रणेहिं	नारायणैः
ठाश्रइ	तिष्ठति	३६२	णाराश्रणो	नारायणः
ठाइ	तिष्ठति	३६३	णाहलो	लाहलः
	ड		णांगलो	लाङ्गलः
डहुं	दष्टं	४१३	णिश्रक्कइ	पश्यति
डड्हं	दग्धं	४१३	णिश्रक्क [क्की?]श्र	दद्वष्ट
डसणो	दशनः	६४	णिडालं	ललाटं
डोला	दोला	१६८	णिदालू	निद्रावान्
डडो	दण्डः	६४	णिष्फंदो	निस्पन्दः
	ण		णिम्माणइ	निभिमीति
ण्हाओ	स्नातः	११६	णिवत्तो	निवर्त्तः
णइसोत्तो	नदीस्रोतः	१	णिसडो	निषधः
णच्चइ	नृत्यति	३७६	णिसासो	निःश्वासः
णच्चवेइ	नर्त्तयति	४०२	णिसा	निशा
णच्चेइ	नर्त्तयति	४०२	णिहिश्रो	निहितः
णज्जइ	ज्ञायते	४०८	णिहितो	निहितः
णव्वइ	ज्ञायते	४०८	णिहसो	निकषः
णाराश्रणम्मि	नारायणे	१४, २३	णीसासो	निःश्वासः
णाराश्रणस्स	नारायणाय	१६	णे	श्रस्मान्
णाराश्रणस्स	नारायणस्य	१४, २१	णेउरं	नूणुरं
णाराश्रणा	नारायणाः	१४	णेहा	निद्रा

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णेहो	स्नेहः	३८	तारेड	शक्नोति	४०२
णोभलिआ	नवफलिका	१६४	तालवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७
णोमल्लिआ	नवमल्लिका	१६४	तास	तस्य	२४४
णोल्लइ	नुदति	३८६	तासुत्तो	तेभ्यः	२४४
णोहलो	दोहवः	८३, ६७	ताहि	तस्मात्	२४४
त्थ	स्थ	३७१	तिण्हं	तीक्ष्णं	२०४
तइ	त्वया	२५५	तिण्णि	त्रयः	१४६
तइ	त्वयि	२६३	ती	ता	१७४
तइआ	तदा	२४६	तीण्हं	त्रयाणाम्	१५०
तइणा	तेन	२४३	तीरइ	शक्नोति	३८८
तइत्तो	स्वत्	२५६	तीरावेइ	शक्नोति	४०२
तए	त्वया	२५५	तीरेइ	शक्नोती	४०२
तए	त्वयि	२६३	तीसु	त्रिषु	१५०
तओ	तस्मात्	२४४	तीसुत्तो	त्रिभ्यः	१५०
तण्णइ	तनोति	३६३	तीहिं	त्रिभिः	१५०
तण्णइ	तूणोति	३६३	तीहिंतो	त्रिभ्यः	१५०
तणुई	तन्वी	१८१	तुअइ	तुवति	३८८
तत्थ	तस्मिन्	२४६	तुए	त्वया	२५५
तत्तो	स्वत्	२५६	तुए	त्वयि	२६३
तत्तो	तस्मात्	२४४	तुज्भ	तव	२६१
तदो	तस्मात्	२४४	तुज्भाणं	युष्माकम्	२६२
तम्मि	तस्मिन्	२४६	तुज्भे	भूयम्,	२५२
तरइ	शक्नोति	३८८		युष्मान्	२५४
तरावेइ	शक्नोति	४०२	तुज्भेसु	युष्मासु	२६४
तलवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७	तुज्भेहिं	युष्माभिः	२५८
तवो	तपः	२८२	तुण्हओ	तूष्णीकः	१३२
तस्स	तस्य	२४५	तुण्हक्को	तूष्णीकः	१३२
तस्सि	तस्मिन्	२४६	तुब्भ	तव	२६१
तहिं	तस्मिन्	२४६	तुब्भेहिं	युष्माभिः	२५८
तहे	तदा	२४६	तुम्ह	तव	२६१
ता	तान्	२४३	तुम्हाणं	युष्माकम्	२६२
ताइं	तानि	२८७	तुम्हासुत्तो	युष्मत्	२६०
ताणं	तेषां	२४६	तुम्हाहिंतो	युष्मत्	२६०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

तुम्हेसु	युष्मासु	२६४
तुम्हेर्हि	युष्माभिः	२५८
तुमए	त्वया	२५५
तुमए	त्वयि	२६२
तुमम्मि	त्वयि	२६३
तुमावु	त्वत्	२५६
तुमावो	त्वत्	२५६
तुमाहि	त्वत्	२५६
तुमो	तव	२६१
तुमं	त्वाम्	२५३
तुमं	त्वं	२५१
तुरिअं	त्वरितं	४१२
तुवरावेइ	त्वरयति	४०२
तुवरेइ	त्वरयति	४०२
तुह	तव	२६१
तूरं	तूर्यं	१६६
तूसइ	तुष्यति	३८४
ते	ते	२४३
तेण	तेन	२४३
तेरहो	त्रयोदशः	१०१
तेलोषकं	त्रैलोषयं	१६१
तेसु	तेषु	२४६
तेसि	तेषां	२४६
तेहि	तैः	२४३
त्तं	त्वाम्	२५३
तं	तम्	२४३
तं	त्वं	२५१
तंबो	स्तम्बः	१०६
तवं	ताञ्चं	२०८
	थ	
थाणू	स्थाणुः (हरवाचके)	१५१
थिम्पइ	तुपति	३६१
	द	
दथो	दतः	१०४

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

दइवं	देवं	१६
दच्छिहिइ	दृष्टा	३६
दसमुहो	दशमुखः	१०
दसरहो	दशरथः	१०
दहम्हो	दशमुखः	१०
दहरहो	दशरथः	१०
दाइ	ददाति	३७
दाडिमं	दाडिमं	१६
दालिमं	दाडिमं	१६
दाहं	दातास्मि	३७
दिअरो	देवरः	६
दिअसो	दिवसः	१०
दिअहो	दिवसः	१०
दिआ	द्यौः	२८
दिट्टी	दृष्टिः	१७
दिण्णं	दत्तं	४१
दिद्धी	दुहिता	२१
दिवइ	दीव्यति	३७
दिसा	दिक्	२८
दुअत्तं	दुकूलं	१८
दुऊलं	दुकूलं	१८
दुओ	दुतः	१०
दुक्खिओ	दुःखितः	१३
दुब्भइ	दुह्यते	४०
दुवे	द्वौ	१४
दुहिओ	दुःखितः	१३
दूमइ	द्वयते	३८
दूमए	द्वयते	३८
दूमेइ	द्वयते	३८
दूमेए	द्वयते	३८
दूसइ	दुष्यति	३८
देअरो	देवरः	६
देव्वं	देवं	१६
दोइ	द्यति	३८
दोए	दयोः	१०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

दोसु	द्वयोः	१४८
दोसुतो	द्वाभ्याम्	१४७
दोहि	द्वाभ्याम्	१४७
दोहितो	द्वाभ्याम्	१४७
	ध	
धणमोहरइ	धनमाहरति	३
धणालो	धनवान्	३१४
धणं	धनम्	२१२
धसइ	धृणोति	३८८
धाइ	धावति, धावते	३५०
धाउ	धावतां, धावतु	३५०
धाहिइ	धावित्ता	३५०
धाहीअ	दधावे, दधाव	३५०
धीरं	धैर्यं	१६६
धुणइ	धुनाति	३६७
धुणिज्जइ	धूयते	४०७
धुणणीअइ	धूयते	४०७
धुत्तो	धूर्त्तः	११६
धुरा	धूः	२८४
धुव्वइ	धूयते	४०७
	न	
नई	नदी	१८१
नाराअणं	नारायणं	१५
	प	
प्रतिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पअट्टो	प्रकोष्ठः	७२
पई	पति	१५०
पईअ	जघ्नो	३६२
पउरो	पौरः	७४
पच्छत्तो	पाश्चात्यः	१२५
पच्छिमा	पश्चिमा	१६६
पज्जुणो	प्रष्टु म्नः	१२७
पट्टणं	पत्तनं	२०४
पडइ	पतति	३५७
पडाआ	पताका	१६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

पडिभवइ	प्रतिभवति	३३८
पडिसरो	प्रतिसरः	३३
पढमो	प्रथमः	६२
पण्हा	प्रश्नः	१५६
पण्ही	प्रश्नः	१७४
पण्हो	प्रश्नः	१२०
पविषत्ती	प्रतिपत्ति	१७५
पभवइ	प्रभवति	३३८
पभवए	प्रभवति	३३८
पभवेइ	प्रभवति	३३८
पभवेए	प्रभवति	३३७
पमिल्लइ	प्रमीलति	३४६
पमिल्लए	प्रमीलति	३४६
पमिल्लावइ	प्रमीलयति	४०२
पमिल्लेइ	प्रमीलति,	३४६
	प्रमीलयति	४०२
पमीलइ	प्रमीलति	३४६
पमीलए	प्रमीलति	३४६
पमीलेइ	प्रमीलति	३४६
पमीलेए	प्रमीलति	३४६
पमील्लेए	प्रमीलति	३४६
परइ	पिपति	३७६
परइ	प्रियते	३६१
परइ	पृणाति	३६७
पल्हादो	प्रह्लादः	१०८
पल्लत्थं	पर्यस्तं	२०३
पल्लाणं	पर्याणं	२०३
पवट्टो	प्रकोष्ठः	७२
पाअइ	जिघ्रति	३६२
पाइ	जिघ्रति	३६२
पाइअं	जघ्नो	३६२
पाउसो	प्रावट्	२८०
पाराव्वेइ	पारयति	४०२
पारेइ	पारयति	४०२
पालइ	पद्यते	३८२

पाहीअ	जघ्नो	१६२
पिअरौ	पितरः	२५५
पिअा	पिता	१५५
पिअो त्ति हसइ	प्रिय इति हसति	३१२
पिवको	पववः	३५
पिसइ	पिशति	३६१
पीअलं	पीतं	३१५
पीअं	पीतं	२१२, ३१५
पुट्टी	पृष्ठं	१८१
पुट्टं	पुष्टं	२१५
पुफं	पुष्पं	२०६
पुरिसो	पुरुषः	६४
पुलअइ	पदयति	३६८
पुलईअ	दद्रष्ट	३६८
पुसो	पुष्यः	१३२
पुह्वी	पृथिवी	१७८
पूसइ	पुष्पाति	३६६
पूसो	पुष्यः	१३२
पेरंतं	पर्यंतं	१६६
पोखरो	पुष्करः	५५
पोस्थओ	पुस्तकः	५७
पोत्तो	पौत्रः	७३
	फ	
फरसः	परुषः	६३
फलावेइ	पाटयति	४०२
फलिअं	पटितं	४१२
फलिहा	परिखा	१६८
फलिहो	परिघः	६३
फलिहो	स्फटिकः	७८
फालेइ	पाटयति	४०२
फुट्टइ,		
फुट्टइ	स्फोटते	३४४
फदो	स्पन्दः	१२२
	व	
अह्या,		
अह्याणो	अह्या	२४१

बाफो	बाष्पः (ऊष्मा)	१६३
बारहो	द्वादशः	१०१
बाहो	बाष्पः (अश्रुणि)	१२३
बीहइ	बिभेति	३७६
बुजभइ	बुध्यते	३८२
बुडइ	मज्जति	३६०
बोरं	बवरं	१८६
बंधइ	बध्नाति	३६८
	भ	
भअण्पई	बृहस्पतिः	१४५
भइरवो	भैरवः	७१
भखावेइ	भक्षयति	४०२
भत्तारम्मि	भर्त्तरि	१५३
भत्तारस्स	भर्तुः	१५३
भत्तारा	भर्त्तारः	१५३
भत्ताराणं	भर्तृणां	१५३
भत्तारेण	भर्ता	१५३
भत्तारेषु	भर्तृषु	१५३
भत्तारेहिं	भर्तृभिः	१५३
भत्तारो	भर्ता	१५२
भत्तुणा	भर्त्रा	१५३
भत्तुणो	भर्तृन्	१५३
भत्तुस्स	भर्तुः	१५३
भत्तुसु	भर्तृषु	१५३
भत्तुओ	भर्त्तारः	१५३
भत्तो	भवतः	३६
भरइ	स्मरति	३६४
भरइ	बिभति	३७६
भरहो	भरतः	८१
भरावेइ	स्मारयति	४०२
भाअरो	भ्रातारः	१५५
भाइ	बिभेति	३७६
भाओ	भ्राता	१५५
भाखेइ	भक्षयति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भारेइ	स्मारयति	४०२	ममादो	मत्	२७३
भिसिणी	बिसिनी	१८०	ममाहि	मत्	२७३
भिंगारो	भृङ्गारो	४८	ममं	माम्	२६८
भिंगो	भृङ्गः	४८	मरइ	भ्रियते	३६१
भिडिवालो	भिन्दिपालः	१२८	मरइ	भृणाति	३६७
भिदइ	भिनवित	३६३	मरिसइ	मर्षति	३५४
भे	युष्माकम्	२६२	मलइ	मृद्नाति	३६६
भोग्रव्वं	भोवतव्यं	४१५	मलिणं	मलिनं	२११
भोडं	भोक्तुं	४१५	मसाणं	इमशानं	२०१
भोऊण	भुक्त्वा	४१५	मह	मम	२७५
	म		महुअं	मधुकं	१८८
भ्हि	भ्रस्मि	३७२	महुं	मधु	२१७
भ्हु	भ्ह	३७२	माआ	माता	१८२
भ्हो	स्मः	३७२	माइ	मिमोते	३७७
मइ	मयि	२७७	माणइत्तो	मानवान्	३१४
मइ	मया	२७१	माला	माला	१६३
मइत्तो	मत्	२७३	मालाइल्लो	मालावान्	३१४
मइलं	मलिनं	२११	मांसं	मांसं	६४
मऊरो	मयूरः	४२	मिअंको	मृगाङ्कः	४८
मऊहो	मयूखः	४२	मिच्छा	मिथ्या	१६६
मए	मया	२७१	मुइङ्गो	मृदङ्गः	२६
मए	मायि	२७७	मुच्छा	मृच्छा	१६६
मच्छिआ	मक्षिका	१६६	मुऊजाअणो	मौऊजायनः	७६
मज्भ	मम	२७५	मुणइ	जानाति	३६८
मज्भणो	मध्याह्न	१०७	मुणिज्जइ	ज्ञायते	४०८
मज्भणो	अस्माकम्	२७६	मुणीअइ	ज्ञायते	४०८
मणइ	मनोति	३६३	मुत्तो	मूर्तिः	१७६
मणंसिणि	मनस्विनीम्	१७७	मुट्ठो	मुग्धः	३७
मणंसिणी	मनस्विनी	१७६	मुहलो	मुखरः	६०
मत्तो	मत्	२७३	मे	मया	२७०
मट्ठ	मम	२७५	मे	मम	२७५
मम	मम	२७५	मोत्ता	मुक्ता	१६५
ममस्मि	मयि	२७७	मोरो	मयूरः	४२
मसाह	मसाह	२१०	मोरो	मयूरः	४२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
मंसू	इमश्रुः	२१७
मंसं	मांसं	६
	र	
रअणं	रत्नम्	२०८
रअणम्	रत्नमुट्	२८०
रच्छा	रक्षा	१६६
रत्तं	रक्तं	४१३
रण्णा	राज्ञा	२३६
रण्णाइं	अरण्यानि	१८५
रण्णेण	अरण्येन	१८५
रण्णो	राज्ञः	२३७
रण्णं	अरण्यं	१८४
रमणिज्जा	रमणीया	१६८
रमणिज्जो	रमणीयः	८६
रम्मइ	रम्यते	४०५
रमिज्जइ	रम्यते	४०५
रमीअइ	रम्यते	४०५
राअमि	रागे	२६
राअम्मि	राज्ञि	२३८
राअस्त	रागाय,	
	रागस्य	२६
राआ	राजा	२३०
राआ	राज्ञः	२३७
राआ	रागाः	२६
	रागान्	२६
	रागात्	२६
राआणो	राज्ञः	२३४
	राजानः	२३२
राआणं	राज्ञां	२३८
राआणं	रागेभ्यः,	२६
	रागाणाम्	२६
राआडु	रागात्	२६
राआडु	राज्ञः	२३७
राआदो	रागात्	२६
राआदो	राज्ञः	२३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
राआसुत्तो	रागेभ्यः	२६
राआसुतो	राजभ्यः	२३७
राआहि	रागात्	२६
राआहि	राज्ञः	२३७
राआहिंतो	रागेभ्यः	२६
राआहिंतो	राजभ्यः	२३७
राइणा	राज्ञा	२३७
राइणो	राज्ञः	२३७
राए	रागान्,	२६
	रागाः,	२६
	रागे	२६
राए	राज्ञः,	२३४
	राज्ञि	२३८
राएण	रागेण	२६
राएसु	रागेषु	२६
राएसु	राजसु	२३८
राएंहि	रागैः	२६
राएंहि	राजभिः	२३७
राओ	रागः	२६
राओ	राजानं	२३३
राओ	रागम्	२६
रामो	रामः	१
राहा	राधा	१६८
रिच्छो	ऋक्षः	११८
रिणं	ऋणं	१६०
रिद्धो	ऋद्धः	६५
रुक्खो	वृक्षः	६७
रुच्छं	रुद्ध्यामि	३७५
रुद्धं	रुद्धं	४१३
रुणं	रुदितं	४१३
रुप्पिणी	रुक्मिणी	१८१
रुम्भावेइ	रुन्धयति	४०२
रुम्भेइ	रुन्धयति	३०२
रुम्मइ	रुणद्धि	३८२
रुवइ	रोदिति	३७५
रुवावेइ	रोयवति	४०२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
रुवेइ	रोयदति	४०२	वच्चेइ	व्रजति	३४१
रुंधइ	रुणद्धि	३६२	वच्छो	वृक्ष,	६७
रुंधावेइ	रुन्धयति	४०२	वत्सः	वत्सः	१२५
रुंधेइ	रुन्धयति	४०२	वज्जइ	व्रस्यति	३८०
रुसइ	रुष्यति	३८५	वज्जावेइ	व्रासयति	४०२
रुसावेइ	रोषयति	४०२	वज्जेइ	व्रासयति	४०२
रुसेइ	रोषयति	४०२	वड्हावेइ	वद्धंयति	४०२
	ल		वड्ढेइ	वद्धंयति	४०२
लखावेइ	लक्षयति	४०२	वण्णइ	वनोति	३६३
लच्छी	लक्ष्मी	१८०	वत्ता	वार्त्ता	१६६
लट्टी	यष्टिः	१७६	वत्तिआ	वत्तिका	१६६
लडालं	ललाटं	२१५	वदर्ई	वदन्ती	४१६
लहुई	लघ्वी	१८१	वढ्भइ	उह्यते	४०७
लाखेइ	लक्षयति	४०२	वम्महो	मन्मथः	६६
लिच्छा	लिप्सा	१६६	वरइ	वृणीते	३६८
लिब्भइ	लिह्यते	४०७	वरिसइ	वर्षति	३५४
लुद्धओ	लुब्धकः	५७	वरिसावेइ	वर्षयति	४०२
लुण्णइ	लुनाति	३६७	वरिसेइ	वर्षयति	४०२
लुण्णज्जइ	लूयते	४०७	वसही	वसतिः	१७५
लुण्णीअइ	लूयते	४०७	वसिट्ठी	वसिष्ठः	३७
लुब्बइ	लूयते	४०७	वहू	वधू	१८१
लोणइ	नुदति	३८६	वाअइ	म्लायति	३५६
लोद्धओ	लुब्धकः	५७	वाआ	वाक्	२८५
	व		वाइ	म्लायति	३५६
वअइ	वधित	३७०	वारि	वारि	२१६
वइवेसो	वंदेशः	७१	वारीइ	वारीणि	२१६
वइवेहो	वंदेहः	७१	विअइ	विनक्ति	३६३
वइरं	वैरं	१६१	विअड्डी	वितदिः	१७६
वइसाहो	वंशाखः	७१	विअणा	वेदना	१६५
वइसिओ	वंशिकः	७१	विआरुल्लं	विकारवत्	३१४
वइसंपाअणो	वंशस्पायनः	७१	विइच्छा	विवत्सा	१६६
वच्चइ	व्रजति	३४१	विकिकणइ	विक्रीणाति	३६७
वच्चए	व्रजति	३४१	विकेइ	विक्रीणाति	३६७
वच्चवइ	व्रजति	३४१	विक्कइ	विक्रीणाति	३६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

विञ्जुली	विद्युत्	३१५
विञ्जू	विद्युत्	२८६, ३१५
विञ्जुप्रो	वृश्चिकः	४८
विडवो	विटपः	८८
वितिण्हो	वितृणः	४६
विम्ह्यो	विस्मयः	११६
विलम्भतो	वलपन्	३११
विसह	प्रसते	३५२
विस्सवो	विश्वपाः	१३७
विसावेह	प्रासयति	४०२
विस्सामो	विश्रामः	१३२
विसूरह	खिनत्ति,	३६३
	खिदति	३६१
विसेइ	प्रासयति	४०२
विस्सो	विश्वः	१३६
विहलो	विह्वलः	१२६
विभलो	विह्वलः	१२६
वीरिअं	वीर्यं	२०२
वीलइ	वीडयति	३८०
वीलावेइ	वीडयति	४०२
वीलेइ	वीडयति	४०२
वीसामो	विश्रामः	१३२
वुंदावणं	वृन्दावनं	१६०
वेप्रह	वेद	३७०
वेअइ	वेत्ति	३७०
वेअणा	वेदना	१६५
वेअव्वं	वेत्तव्यम्	४१५
वेउं	वेत्तं	४१५
वेऊण	विदित्वा	४१५
वेच्छं	वेत्स्यामि	३७०
वेठइ	वेष्टते	३४२
वेठए	वेष्टते	३४२
वेठेइ	वेष्टते	३४२
वेठेए	वेष्टते	३४२
वेण्ह	विष्णुः	१५०

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

वेण्हो	विष्णुः	१२१
वल्ली	वल्ली	१७७
वेवमाना	वेपमाना	१७४
वेवमाणो	वेपमाना	१७४
वो	युष्मान्	२५४
वो	युष्माकम्	२६२
वोच्छं	वक्ष्यामि	३७०
वंकं	वक्रं	५
वञ्चिअो	वञ्चितः	४
वंदं	वन्दं	२१३
	स	
सअइ	सृजति	३६१
सअढो	शकटं	८६
सइरं	स्वरं	१६१
सक्कइ	शक्नोति	३८७
सक्केइ	शक्नोति	४०२
सक्को	शक्नः	१०
सग्गमो	सद्गमः	३७
सच्चा	सत्या	१६६
सज्जइ	सृज्यते	३८३
सठवेइ	शाठयति	४०२
सडइ	शीघ्रते	३५७
सढा	सटा	१६८
सण्णइ	सनोति	३६३
सण्हं	श्लक्ष्णं	२०४
सणेहो	स्नेहः	३८
सत्तमी	सप्तमी	१८०
सत्थि	सविथ	२१७
सद्दहइ	श्रद्धधाति	३७८
सप्फं	शष्पं	२०६
सभरी	शफरी	१७६
सभलो	सफलः	६१
सभलं	सफलं	२००
समिद्धी	समृद्धिः	१७४
समिद्धीआ,		
समिद्धीए	समवध्या	१४२

सरइ	सरति	३६५
सरइ	संसति	३७६
सरइ	शृणाति	३६०
सरावेइ	सारयति	४०२
सरिच्छो	सदृशः	११८
सरो	सरः	२८२
सलाहा	इलाघा	१७२
सबहो	शपथः	८५
सव्वज्जो	सर्वज्ञः	१०५
सव्वस्स	सर्वस्य, सर्वस्मै	१३५
सव्वसिं, सव्व-		
म्मि, सवत्थ	सर्वस्मिन्	१३६
सव्वा	सर्वान्, सर्वस्मात्	१३५
सव्वाणं	सर्वेषाम्, सर्वेभ्यः	१३५
सव्वाद्दु		
सव्वादो		
सव्वाहि	सर्वस्मात्	१३५
सव्वामुत्तो		
सव्वाहिंतो	सर्वेभ्यः	१३५
सव्वे	सर्वे	१३५
सव्वेण	सर्वेण	१३५
सव्वेसु	सर्वेषु	१३६
सव्वेहिं	सर्वैः	१३५
सव्वो	सर्वः	१३४
सव्वं	सर्वं	१३५
सहमाणा,		
सहमाणी	सहमाना	१७४
सहा	सभा	१६८
सहिणो	सखीन्	१५०
सहिं	सखायम्	१५०
सही	सखा	१५०
सहीओ,		
सहीणो	सखायः	१५०
साठेइ	शाठयति	४०२
सारेइ	सारयति	४०२

साला	शाला	१७३
सि	असि	३७१
सिअालो	शृगालः	४६
सिड्ढी	सृष्टिः	१७५
सिड्डिलो	विथिलः	६२
सिरी	श्रीः	१८१
सिदिणो	स्वप्नः	३२
सि	तेषां	२४६
सिगारो	शृंगारः	४८
सिधवं	सन्धवं	१६४
सीभरो	सीकरः	७६
सीहो	सिंहः	५०
सुअइ	सुनोति	३८५
सुइदी	सुकृतिः	१७५
सुज्जो	सूर्यः	१५१, ११४
सुणइ	शृणोति	३६५
सुणइ	शृणोतु	३६७
सुण्णावेइ	श्रावयति	४०२
सुण्णिअं	शुश्राव	३६५
सुण्णिज्जइ	श्रूयते	४०६
सुण्णीअ	शुश्राव	३६५
सुण्णीअइ	श्रूयते	४०६
सुण्णेइ	श्रावयति	४०२
सुणमु	शृणोमि	३६७
सुणमो	शृणमः	३६७
सुणसु	शृणु	३६
सुणह	शृणुत	३६७
सुणंतु	शृण्वन्तु	३६७
सुप्पणहा	सूर्पनखा	१७४
सुप्पणही		
सुमरइ	स्मरति	३६४
सुमरावेइ	स्मरयति	४०२
सुमरेइ		
सुव्वइ	श्रूयते	४०६
सुहं	सुखं	२००

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सुंडो	शौण्डः	७६	सेव्वा	सेवा	१७०
सुंदेरं	सौन्दर्यं	१६६	मेवा		
सूइ	सूयते	३८०	सो	सः	२४३
सूरो	सूर्यः	११४	सोअमत्लं	सौकुमार्यं	२०३
सूसइ	शुष्यति	३८४	सोइ	इयति	८१
सूसावेइ	शुष्यति	४०२	सोच्छइ	श्रोता	३६६
सूसेइ			सोच्छए	"	"
से	तस्य	२४५	सोच्छहिइ	"	"
सेज्जस	शय्यायाः	१६२	सोच्छहिए	"	"
सेज्जा	शय्याः	१५७	सोच्छइ	"	"
	शय्यायाः	१६१	सोच्छए	"	"
सेज्जाइ	शय्यायाः	१६२	सोच्छिहिइ	"	"
सेज्जाइ	शय्यया	१६१	सोच्छिहिए	"	"
सेज्जाइ	शय्यायाम्	१६२	सोच्छेइ	"	"
सेज्जाए	शय्यया	१६१	सोच्छेए	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
	शय्यायाम्	१६२	सोच्छेहिए	"	"
सेज्जाउ	शय्याः	१५७	सोच्छेहिइ	"	"
		१५६	सोच्छेहिए	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाओ	शय्याः	१५७	सोच्छेहिइ	"	"
		१५६	सोच्छेहिइ	"	"
	शय्यायाः	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाणं	शय्यानाम्	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाडु			सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जादो	शय्यायाः	१६१	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाहि			सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जासु	शय्यासु	१६२	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जासुत्तो	शय्याभ्यः	११६	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाहिंता			सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जाहिं	शय्याभिः	१६१	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्जं	शय्याम्	१५८	सोच्छेहिइ	"	"
सेज्या	शय्या	१५६	सोच्छेहिइ	"	"
सत्तं	शैत्यं	१६१	सोच्छेहिइ	"	"
सेलो	शैलः	६६	सोच्छइत्य	श्रोण्यथ	३६६, ३६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

सोच्छह	श्रोष्यथ	२६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छहिह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छहित्थ	श्रोष्यथ (बहुवचने)	३६७
सोच्छहिह	"	"
सोच्छित्थ	"	"
सोच्छिह	"	"
सोच्छहित्थ	"	"
सोच्छिहह	"	"
सोच्छेह	"	"
सोच्छेहित्थ	"	"
सोच्छेहिह	"	"
सोच्छिहिइ	श्रोष्यति	२६७
इत्यादि		
सोच्छमि	श्रोतास्मि	३३७
सोच्छस्सामि	"	"
सोच्छस्सं	"	"
सोच्छहामि	"	"
सोच्छहिमि	"	"
सोच्छामि	"	"
सोच्छ्याहामि	"	"
सोच्छिमि	"	"
सोच्छिस्सामि	"	"
सोच्छिहामि	"	"
सोच्छेमि	"	"
सोच्छेस्सामि	"	"
सोच्छेस्सं	"	"
सोच्छेहामि	"	"
सोच्छेहिमि	"	"
सोच्छं	"	"
सोच्छमो	श्रोतास्मः	३६७

प्राकृतशब्दः संस्कृतरूपम् सूत्राणि

सोच्छस्सामो	श्रोतास्मः	३६७
सोच्छहामो	"	"
सोच्छहित्था	"	"
सोच्छहिमो	"	"
सोच्छ्यामो	"	"
सोच्छ्याहामो	"	"
सोच्छ्याहित्था	"	"
सोच्छ्याहिमो	"	"
सोच्छ्याहिस्सा	"	"
सोच्छिमो	"	"
सोच्छिस्सामो	"	"
सोच्छिहामो	"	"
सोच्छिहित्था	"	"
सोच्छिहिमो	"	"
सोच्छिहित्था	"	"
सोच्छेमो	"	"
सोच्छेस्सामो	"	"
सोच्छेहामो	"	"
सोच्छेहित्था	"	"
सोच्छेहिमो	"	"
सोच्छेहिस्सा	"	"
सोणहा	स्नुषा	१६६
सोरिअं	शौर्यं	२०२
सोहा	शोभा	१६८
संका	शङ्का	७
संझा		
संकंतो	संक्रान्तः	१३०
संजदो	संयतः	६२
संभा	संध्या	१६६
संवत्तो	संवर्तः	११६
संविस्लइ	संवेष्टते	३४३
संबुदी	संवृत्तिः	१७५
	ह	
हदो	हृतः	६३
हम्मइ	हन्ति	३७०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हरिसइ	हर्षति	३५४	हुवमि	भवामि	३२
हंलद्रा	हरिद्रा	१६५	हुवम्	बभूव	३३
हलद्दा(द्रा)	हरिद्रा	१७४		भवामः	३२
हलद्दा	हरिद्रा	१६५		भवावः	३२
हलद्दी	हरिद्रा	१७४		भविष्यामि	३३
हलिओ	हालिकः	४५		भवानि	३३
ह्विधानं	बभूव	३३२	हुवमो	भविष्यामः	३३
हस्सइ	हस्यते	४०५		भवाम	३२
हसिज्जइ	हस्यते	४०३		भवामः	३२
हसिअइ	हस्यते	४०५		भवावः	३२
हलिओ	हालिकः	४५		बभूविस	३३
हिअयं	हृदयं	१६०	हुवस्साम	भविष्यामः	३३
हित्थं	व्रस्तं	४१३	हुवस्सामि	भविष्यामि	३३६-३३
हिरी	ह्रीः	१८१	हुवस्सामु	भविष्यामः	३३
हीरइ	ह्रियते	४०६	हुवस्सामो	भविष्यामः	३३
हुअं	भूतं	४१०	हुवसि	भवसि	३२
हुणइ	जुहोति	३७५	हुवसु	बभूविय	३३
हुणिज्जइ	ह्रयते	४०७		भवितासि	३३
हुणीअइ	ह्रयते	४०७		भव	३३
हुवइ	ह्रयते	४०७	हुवसे	भवसि	३३
हुव्वंतो	भवन्	४१८	हुवस्सं	भविष्यामि	३३
हुवइ	भवति	३१६	हुवह	बभूव	३३
हुवइत्थ	भविष्यथ	३३७		भवथः	३२
हुवइत्था	भवथ, भवथः	३२४		भवथ	३३
हुवउ	भवतु	३३७		भवत	३३
	बभूव	३३१		भवितास्थ	३३
हुवए	भवति	३१६	हुवहाम	भविष्यामः	३३
हुवज्ज	भवति	३२२	हुवहामि	भविष्यामि	३३
	भवन्ति	३२३			३३
	भवतः	३२३	हुवहामु	भविष्यामः	३३
हुवज्जा	भवति	३२२	हुवहामो	भविष्यामः	३३
हुवज्जा	भवन्ति	३२३	हुवहिइ	भविता	३३
	भवतः	३२३	हुवहिए	भविष्यति	३३
हुवम	भवामः	३२७	हुवहिस्था	भविष्यामः	३३
	भवामः	३२७	हुवविस्था	भविष्यामः	३३

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवहिम	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमि	भविष्यामि	३३६
हुवहिमि	भविष्यामि	३३६			३३७
		३३७	हुवाहिमु	भविष्याम	३३७
हुवहिमु	भविष्यामः	३३७	हुवाहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवहिमो	भविष्यामः	३३७	हुवाहिस्सा	भवितास्मः	३३७
हुवहिय	भविष्यति	३३७		भविष्यामः	३३७
हुवहिस्सा	भवितास्मः	३३७	हुविअं	अभूत्	३३७
	भविष्यामः			बभूव	३२६
हुवहिसि	भविष्यसि	३३७	हुविज्जइ	भूयते	४०३
	भवितासि	३३४	हुविरथा	भविष्यथ	३३७
हुवहिसे	भविष्यसि	३३७	हुविरथा	भवथाः, भवथ	३२४
	भवितासि	३३४	हुविम	भवामः, भवावः	३२७
हुवहिति	भवितारः	३३४	हुविमु		
	भविष्यन्ति	३३७	हुविमो	भविष्यामः भवाम	३३७
हुवहिह	भविष्यथ	३३७		भवामः, भवावः	३२७
	भवितास्थ	३३४	हुविस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवाम	भवामः	३२७	हुविस्सामु	भविष्यामः	३३७
	भवावः		हुविस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवामि	भवामि	३२६	हुविहाम	भविष्यामः	३३७
हुवामु	भविष्यामि	३३६	हुविहामु	भविष्यामः	३३७
	भवानि	३३७	हुविहामो	भविष्यामः	३३७
	भवामः			भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहिसि	भविष्यामः	३३७
हुवामो	भवामः	३२६		भविष्याम	३३७
	भवावः	३२७	हुविहिति	भवितारः	३३४
	भवाम	३२७	हुविहिम	भविष्यामः	३३७
	भविष्यामः	३३७	हुविहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवावेइ	भावयति	४०२	हुविहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवाहाम	भविष्यामः	३३७		भविष्याम	३३७
हुवाहामि	भविष्यामि	३३७	हुविहिस्सा	भवितास्मः	३३७
		३३६		भविष्यामः	३३७
हुवाहामु	भविष्यामः	३३७	हुवीअ	बभूव	३२६
हुवाहामो	भविष्यामः	३३७		अभूत्	३३७
हुवाविअ	भविष्यामः	३३७			

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भावयति	४०२
हुवेउ	भवतु	३३७
	बभूव	३३१
हुवेए	भवति	३१६
हुवेऊज	भवति	३२२
हुवेऊजा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
	भवति	३२२
हुवेमः	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
हुवेमि	भवामि	३२६
हुवेमु	बभूव	३३२
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भवानि	३३७
	भविष्यामि	३३६
हुवेमो	भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
	बभूविस	३३२
हुवेस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवेस्सामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुवेःसामो	भविष्यामः	३३७
हुवेसि	भवति	३२४
हुवेसु	भवितासि	३३४
	बभूवित्थ	३३२
	भव	३३७
हुवेसे	भवसि	३२४
हुवेसेसं	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवेह	बभूव	३३२

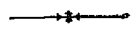
प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भवितास्थ	३३४
हुवेहाम	भविष्यामः	३३७
हुवेहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहामु	भविष्यामः	३३७
हुवेहामो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
हुवेहिए	भविष्यति	३३७
हुवेहित्या	भविष्याम	३३७
हुवेहिम	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवेहिसि	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवेहिसे	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
हुवेहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवेहिति	भविष्यन्ति	३३७
	भवितारः	३३४
हुवेति	भवन्ति, भवतः	३२३
हुवेतु	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२
	भवितारः	३३४
हुवेन्ति	भवतः, भवन्ति	३२३
हुवेन्तु	भवितारः	३२४
	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
भत्तारा	हे भर्तः	१५३
मणसिणि	हे मनस्विनि	१७७
रण	हे अरण्य	१८५
राश्रं	हे राजन् !	२३३
राश्र		
सेज्जे	हे शय्ये	१६२
ग्रावेह	भावयति	४०२
ह	भवति	३१६
	बभूव	३३२
हज्जइ	भूयते	४०३
हत्थां	भवथः, भवथ	३२४
ह्रह	भूयते	४०३
व	बभूव	३३१
	भवतु	३३७
एइ	भावयति	४०२
ज्ज	भवन्ति, भवतः	३२३
ज्जइ	भवति	३२१
ज्जा	भवन्ति, भवतः	३२३
ज्जाइ	भवति	३२१
ज्जति	भवन्ति, भवतः	३२३
ज्जाति		
ज्जेइ	भवति	३२१
ज्जति	भवन्ति, भवतः	३२३
म	भवावः, भवामः	३२६
मि	भवामि	३२६
मु	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूव	३३२
मो	भवावः	३२७
	भवामः	३२७
	बभूविस	३३२
	भवाम	३३७
	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
होस्ताम	भविष्यामः	३३७
होस्तामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होस्तामु	भविष्यामः	३३७
होस्तामो	भविष्यामः	३३७
होसि	भवसि	२२४
होसु	बभूविस	३३२
	भवितासि	३३४
	भव	३३७
होस्सं	भविष्यामि	३३७
		३३६
होह	भवथ, भवथः	३३४
	भवितास्थः	३३४
	भवत	३३७
होहाम	भविष्यामः	३३७
होहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहामु	भविष्यामः	३३७
होहामो	भविष्यामः	३३७
होहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
होहित्य	भविष्यत	३३७
होहित्या	भविष्यामः	३३७
होहिम	भविष्यामः	३३९
होहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
होहिमु	भविष्यामः	३३७
होहिमो	भविष्यामः	३३७
होहिस्सा	भविष्यामः	३३७
	भवितास्मः	३३७
होहिसि	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
होहिह	भविष्यत	३३७
होहिहां	भवितास्थ	३३४
होहिति	भवितारः	३३४
	भविष्यन्ति	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि	प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
होहीश्च	बभूव	३३०		भवितारः
	अभूत्	३३७		भवन्तु
होति	भवन्ति	३२३	हं	अहम्
होतु	बभूयुः	३३२		

सान्स्वं प्राकृतानन्दे शब्दानामनुसूचिका । मुनीनां प्रीतये सेयं जिनविजयसू
 वृगिन्दुनभान्नेत्राब्दे मासे भाद्रपदे शुभे । कृष्णाष्टम्यां गुरो वारे कृता गोप





राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर



सूची-पत्र

इस्थान पुरातन शिल्पमाला

प्रधान सम्पादक — पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्वाचार्य

अक्टूबर १९६३ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक - मोमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य-१०
३. महाषिकुलवैभवम्. स्व० पं० मधुसूदनश्रीभा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक-म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०
४. महाषिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन श्रीभा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक श्रीप्रद्युम्न श्रीभा । मूल्य-१०
५. तर्कसंग्रह, अलंभट्टकृत, सम्पादक-डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य-१०
६. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१०
७. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-१०
८. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य-१०
९. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
१०. नृत्यसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
११. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट् । मूल्य-१०
१२. राजविनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१०
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-पं० श्रीकेशवराम शास्त्री । मूल्य-१०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो. रसिकलाल लाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य-१०
१५. उदितरत्नाकर, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, तत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-१०
१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी साहित्याचार्य । मूल्य-१०
१७. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्री लीलामृत सहित, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१०
१८. ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीमन् नाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । स्व. पी. के. गोई द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना सहित । मूल्य-१०
१९. रसदीपिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य-१०
२०. पद्यमूषतावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्टश्रीमन्नाथ

२२. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०—श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य—८.२५
२३. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—डॉ० प्रियबाला शाह । मूल्य—४.००
२४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०—पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी । मूल्य—४.००
२५. श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित । सम्पा०—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा । मूल्य—३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुर फेरु विरचित, संशोधक-पद्मश्री मुनि जिन-विजयजी, पुरातत्त्वाचार्य । मूल्य—६.२५
२७. स्वयंभूच्छन्द, महाकवि स्वयंभूकृत, सम्पा० प्रो० एच. डी. वेलणकर । विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी में) एवं परिशिष्टादि सहित मूल्य—७.७५
२८. वृत्तजातिसमुच्चय कवि विरहाङ्करचित; ,, ,, ,, मूल्य—५.२५
२९. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य—६.००
३०. कर्णामृतप्रपा, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०—पद्मश्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य—२.२५
३१. त्रिपुराभारती लघुस्तव, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य—३.२५
३२. पदार्थरत्नमञ्जूषा, पं० कृष्णामिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य—३.७५
३३. वृत्तमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; सं० पं० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री । मूल्य—३.७५
३४. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०—डॉ. दशरथ शर्मा । मूल्य—२.२५
३५. प्राकृतानन्द, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०—पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी । मूल्य—४.२५
- २. राजस्थानी और हिन्दी**
३६. कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०—प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य—१२.२५
३७. क्षयामलां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पा०—डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा । मूल्य—४.७५
३८. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०—श्रीमहतावचन्द खारैड़ । मूल्य—३.७५
३९. वांकीदासरी ख्यात, कविराजा वांकीदासरचित, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए., विद्यामहोदधि । मूल्य—५.५०
४०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य—२.२५
४१. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पा०—श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न । मूल्य—२.७५
४२. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत । मूल्य—२.००
४३. जगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य—१.७५
४४. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०—श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य—१.७५
४५. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १ । मूल्य—७.५०
४६. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २ । मूल्य—१२.००
४७. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०—श्रीब्रद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य—८.५०
४८. ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य—६.५०
४९. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०—श्री सीताराम लाळस । मूल्य—८.२५
५०. राजस्थानी दसलखित ग्रन्थ-सूची भाग १ सं० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य—४.५०

